राष्ट्रीय हिंदी मासिक पत्रिका

स्वर्णिम मुंबई

अगस्त - 2025

मूल्य ₹ 50/-

RNI NO. : MAHHIN-2014/55532

आत्मनिर्भर भारत की उड़ान

15 अगस्त 2025 ...

मुंबईकरों की बुझेगी प्यास

समंदर का पानी बनेगा मीठा...

हाई-प्रोफाइल तलाक

रिश्ते जब टूटते हैं सुर्खियों में...

कीट ने रचा इतिहास

वर्ल्ड यूनिवर्सिटी गेम्स २०२५ में भारत की सबसे सफल यूनिवर्सिटी...

Contact: 9082391833 , 9820820147
E-mail: swarnim_mumbai@yahoo.in

www.swarnimumbai.com

राष्ट्रीय हिंदी मासिक पत्रिका

स्वर्णिम मुंबई

RNI NO.: MAHHIN-2014/55532

• वर्ष : 10 • अंक: 05 • मुंबई • अगस्त-2025

मुद्रक-प्रकाशक,संपादक
नटराजन बालसुब्रमणियम

कार्यकारी संपादक
मंगला नटराजन अय्यर

उप संपादक
भाग्यश्री कानडे,
संतोषी मिश्रा, एन.निधी

ब्यूरो चीफ
ओडिशा: अशोक पाण्डेय
उत्तर प्रदेश: विजय दूबे
पटना: राय यशेन्द्र प्रसाद

टंकन व पृष्ठ सज्जा
ज्योति पुजारी, सोमेश

मार्केटिंग मैनेजमेंट
राजेश अय्यर, शैफाली

संपादकीय कार्यालय

Add: Tirupati Ashish CHS.,
A-102, A-1 Wing, Near
Shahad Station, Kalyan (W),
Dist: Thane, PIN: 421103,
Maharashtra.
Phone: 9082391833,
9820820147
E-mail: swarnim_mumbai@yahoo.in
Website: www.swarnimumbai.com

मालिक, मुद्रक, प्रकाशक व संपादक : बी. नटराजन द्वारा तिरुपति को.ऑप, हॉसिंग सोसायटी, ए-१ विंग १०२, नियर शहाड स्टेशन, कल्याण (वेस्ट)-४२११०३, जिला: ठाणे, महाराष्ट्र से प्रकाशित व *महेश प्रिन्टर्स, बिरला कॉलेज, कल्याण से मुद्रित।*
RNI NO. : MAHHIN-2014/55532

सभी विवादों का निपटारा मुंबई न्यायालय होगा।

इस अंक में...

मुंबई में जल संकट से निपटने की पहल 05
आत्मनिर्भर भारत की उड़ान 08
हाई-प्रोफाइल तलाक की कहानियां! 14
पकवान 18
भारत का समुद्री खाद्य उद्योग नई ऊचांइयों पर 20
१४वें अंतर्राष्ट्रीय विरासत पर्यटन सम्मेलन में ... 23
राशिफल 24
पातालकोट 26
सिनेमा 29
'सोहराई कला भारत की आत्मा है': राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु 30
६८ मानद डॉक्टरेट की डिग्री पानेवाले भारत के इकलौते शिक्षाविद् ... 32
वर्ल्ड यूनिवर्सिटी गेम्स २०२५ में भारत की सबसे सफल यूनिवर्सिटी बनी 34
प्रधानमंत्री मातृ वंदना योजना के लिए विशेष पंजीकरण अभियान... 36
लुटा हुआ 38
गैंग्रीन 41
झारखंड के 'दिशोम गुरु' शिबू सोरेन के निधन 50
चीन ने ब्रह्मपुत्र नदी पर डैम बनाना किया शुरू... 54
ग्वार की खेती... 56

सुविचारः

दुनिया में किसी पर हद से ज्यादा निर्भर ना रहें क्योंकि जब आप किसी की छाया में होते हैं तो आपकी अपनी परछाई नजर नहीं आती।

मराठी बनाम हिंदी विवाद

भारत अनेक भाषाओं का देश है। संविधान की आठवीं अनुसूची में २२ भाषाओं को मान्यता प्राप्त है। हिंदी भारत की राजभाषा है, जबकि मराठी महाराष्ट्र की राजकीय भाषा है। दोनों भाषाओं का अपना इतिहास, साहित्य, संस्कृति और आत्मा है। परंतु आज हम इस विमर्श में इन दो भाषाओं को प्रतिद्वंदी की तरह देख रहे हैं - यह दुर्भाग्यपूर्ण है। विवाद का मुख्य कारण है - रोजगार और प्रशासन में भाषा का वर्चस्व, शहरीकरण और उत्तर भारतीय प्रवासियों का महाराष्ट्र में आगमन, सरकारी स्तर पर हिंदी को बढ़ावा और स्थानीय लोगों को अपनी भाषा से असुरक्षा और कुछ राजनैतिक दलों द्वारा भाषाई पहचान को उकसाना ये सारे कारण भाषाओं के बीच नहीं, बल्कि राजनीति और समाज के बीच पैदा हुए तनाव को दर्शाते हैं।

हिंदी ने पूरे भारत में एक संपर्क भाषा (link language) की भूमिका निभाई है। परंतु इसका यह अर्थ नहीं कि क्षेत्रीय भाषाओं को दबाया जाए। मराठी साहित्य, रंगमंच, सिनेमा और पत्रकारिता ने भारत को कई रत्न दिए हैं - पु. ल. देशपांडे, विजय तेंडुलकर, और आज के फिल्म निर्माता नितीन देसाई जैसे नाम गौरव का कारण हैं। समस्या तब आती है जब नौकरी, शिक्षा और शासन में एक भाषा को ज़रूरत से ज़्यादा बढ़ावा दिया जाए और दूसरी को उपेक्षित किया जाए।

'मुंबई जैसे शहर को आगे बढ़ाने में या मुंबई की सफलता एक सामूहिक प्रयास रही है, जिसमें कई वर्गों, समुदायों, और क्षेत्रों ने अपनी भूमिका निभाई है। मराठी मानूस (स्थानीय निवासी - मूल महाराष्ट्रीयन समाज): कोलियों (मछुआरे), अगड़ी-पिछड़ी जातियों, कामगार वर्ग ने शुरुआती समय में मुंबई की नींव रखी। मिल मज़दूर, BEST कर्मचारियों, सरकारी कर्मचारियों में बड़ी संख्या मराठी लोगों की रही। शिवाजी पार्क, दादर, परेल जैसे इलाकों में सांस्कृतिक और राजनीतिक जागरूकता का गढ़ था। मराठी साहित्य, रंगमंच, पत्रकारिता ने मुंबई की पहचान गढ़ी। स्थानीय मराठी समाज ने मूल चरित्र और आत्मा को गढ़ा।

बिहारी, पूर्वांचली, उत्तर प्रदेश के लोग बड़े पैमाने पर रेलवे, टैक्सी-ऑटो, निर्माण, सब्ज़ी-बाज़ार, सुरक्षा गार्ड जैसे क्षेत्रों में आए और मेहनत की। दादर, धारावी, कुर्ला, भायंदर, मीरा रोड, वसई में इनकी बड़ी बस्तियाँ हैं। श्रमिक और सेवक के रूप में इन्होंने हर शहरवासी की ज़िंदगी को आसान बनाया। जिन्होंने हर स्तर की मेहनतकश नौकरियों को संभाला। मुंबई को आर्थिक राजधानी बनाने में गुजराती और मारवाड़ी व्यापारी वर्ग का बड़ा हाथ रहा है। स्टॉक मार्केट, कपड़ा व्यापार, ज्वेलरी, फिल्म फाइनेंसिंग, हीरा कारोबार आदि पर इनका कब्ज़ा रहा। बड़े उद्योगपति - अंबानी, अदानी, बिड़ला, गोयनका आदि इसी वर्ग से हैं। मुंबई को धन-आधारित, बिजनेस-फ्रेंडली शहर बनाने में इनका बडा योगदान है।

शिक्षा, तकनीक, बैंकिंग, सॉफ्टवेयर, डॉक्टरी, प्रशासन जैसे क्षेत्रों में दक्षिण भारतीय लोगों का बहुत योगदान है। चेंबूर, माटुंगा, किंग्स सर्कल जैसे क्षेत्र इनके सांस्कृतिक केंद्र रहे हैं। मुंबई के बौद्धिक और शैक्षणिक स्तर को ऊंचा किया। देशभर से कलाकार, लेखक, गायक, तकनीशियन आए और मुंबई को मनोरंजन की राजधानी बना दिया। इसमें भी हर भाषा और क्षेत्र के लोग हैं - मराठी, पंजाबी, बंगाली, उत्तर भारतीय, दक्षिण भारतीय आदि।

मुंबई एक ऐसी माया नगरी है, जिसे हर वर्ग, हर जाति, हर भाषा ने अपने खून-पसीने से बनाया है। कोई भी दावा नहीं कर सकता कि सिर्फ 'हमने' बनाया। मराठी ने आत्मा दी, उत्तर भारतीयों ने मज़बूती, गुजराती-मारवाड़ियों ने दौलत, दक्षिण भारतीयों ने दिमाग, और सब मिलकर इसे एक महानगर बनाया। 'क्या इन सभी लोगों को मुंबई में मराठी बोलना ज़रूरी (compulsory) होना चाहिए?' तो इसका उत्तर संतुलन और समझदारी से देना ज़रूरी है। संवैधानिक और कानूनी दृष्टिकोण से भारत एक बहुभाषी लोकतंत्र देश है।

संविधान की धारा 19(1)(a) हर नागरिक को स्वतंत्र रूप से बोलने की स्वतंत्रता देता है - जिसमें भाषा का चयन भी शामिल है। महाराष्ट्र की राजकीय भाषा मराठी है, इसलिए प्रशासनिक और शैक्षणिक मामलों में मराठी को प्राथमिकता दी जाती है – लेकिन यह अन्य नागरिकों पर थोपना अनुचित है। सामाजिक और व्यावहारिक दृष्टिकोण से अगर कोई व्यक्ति महाराष्ट्र में रहकर मराठी सीखता है, तो यह उसका सम्मान और जुड़ाव दर्शाता है। जैसे - कोई अगर तमिलनाडु में बसता है और तमिल सीखता है, तो वह स्थानीय संस्कृति से खुद को जोड़ पाता है। पर यह सीखना नैतिक कर्तव्य हो सकता है, न कि कानूनी बाध्यता।

भाषा प्रेम अगर सम्मान से हो तो वह संस्कृति को मजबूत करता है, लेकिन अगर जबरदस्ती हो तो वह विरोध और विभाजन को जन्म देता है। स्थानीय लोगों को सम्मान मिलना चाहिए, उनकी भाषा और संस्कृति की अनदेखी नहीं होनी चाहिए। जो बाहर से आए हैं, उन्हें मराठी सीखने के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए - पर मजबूर नहीं किया जाना चाहिए। राज्य सरकार मराठी को बढ़ावा देने के लिए प्रशिक्षण, प्रचार, और प्रोत्साहन के ज़रिये काम करे - न कि दंड या धमकी के माध्यम से। मराठी सीखना - सम्मान का प्रतीक होना चाहिए, मजबूरी नहीं। मुम्बई सबकी है - मराठी मानूस की भी, और उस प्रवासी की भी जो इसे अपनाता है। हमें चाहिए कि मराठी को बढ़ावा दें - पर भाईचारे और लोकतांत्रिक मूल्यों के साथ। संविधान में सबको रहने का हक़ है, पर जहाँ रहते हैं वहां की मिट्टी को भी अपनाना चाहिए। महाराष्ट्र में मराठी जानना शान की बात है, शर्म की नहीं। 'रहेंगे भी, सीखेंगे भी' - यही भारत की सच्ची विविधता है। ■

- मंगला नटराजन

मुंबई में जल संकट से निपटने की पहल 'समुद्र से मिलेगा मीठा पानी'

मनोरी परियोजना के बाद, बृहन्मुंबई नगर निगम (बीएमसी) मुंबई की बढ़ती आबादी की पानी की मांग को पूरा करने के लिए वर्सोवा में एक विलवणीकरण संयंत्र स्थापित करेगा। बीएमसी ने परियोजना के लिए कंपनियों से रुचि पत्र (एलओआई) आमंत्रित किए हैं। यह परियोजना समुद्र के पानी का उपचार करेगी और मुंबईकरों को प्रति दिन २०० मिलियन लीटर पानी प्रदान करेगी। बीएमसी संबंधित कंपनी से उपचारित पानी खरीदेगी। Manori प्लांट अब कामयाब होने की दिशा में है, लेकिन tender प्रक्रिया लंबित रही। वर्सोवा प्लांट को DBFOT मॉडल पर विकसित किया जा रहा है, जिससे वित्तीय जोखिम कम होकर सार्वजनिक-निजी भागीदारी को बढ़ावा मिलेगा। पानी की खरीद मॉडल से BMC पर तुरंत खर्च नहीं होगा। यह मुंबई के जल संकट को दूर करने और भविष्य की जल सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए एक महत्वपूर्ण कदम है।

वर्सोवा में एक विलवणीकरण संयंत्र स्थापित किया जाएगा और परियोजना को चार साल में पूरा करने का लक्ष्य रखा गया है। इस परियोजना से किन वार्डों को लाभ होगा? मनोरी परियोजना के बाद, बृहन्मुंबई नगर निगम (बीएमसी) मुंबई की बढ़ती आबादी की पानी की मांग को पूरा करने के लिए वर्सोवा में एक विलवणीकरण संयंत्र स्थापित करेगा। बीएमसी ने परियोजना के लिए कंपनियों से रुचि पत्र (एलओआई) आमंत्रित किए हैं। यह परियोजना समुद्र के पानी का उपचार करेगी और मुंबईकरों को प्रति दिन २०० मिलियन लीटर पानी प्रदान करेगी। बीएमसी संबंधित कंपनी से उपचारित पानी खरीदेगी। एक्सप्रेशन इंटरेस्ट वापस लिए जाने के बाद इसमें रुचि दिखाने वाली कंपनी से आपत्तियां आमंत्रित की जाएंगी और फिर टेंडर प्रक्रिया लागू की जाएगी। इस परियोजना को चार साल में पूरा करने का लक्ष्य रखा गया है।

वर्सोवा में प्रस्तावित परियोजना के लिए बीएमसी ने संयंत्र की योजना, निर्माण, वित्तीय संचालन और हस्तांतरण मॉडल के तहत रुचि पत्र आमंत्रित किए थे। इसमें कंपनी को खुद ही प्रोजेक्ट और मेंटेनेंस का खर्च उठाना होगा। बदले में बीएमसी प्रति १,००० लीटर पानी की कीमत तय करेगी और कंपनी को देगी। इसमें नगर निगम उस कंपनी से पानी खरीदकर पानी के चैनलों के माध्यम से आपूर्ति करेगा।

'मनोरी' परियोजना का जवाब बीएमसी ने मनोरी में एक विलवणीकरण परियोजना को लागू करने का निर्णय लिया। हालांकि यह प्रोजेक्ट पिछले चार साल से टेंडर प्रक्रिया में अटका हुआ है। निविदाओं का जवाब न मिलने के कारण प्रक्रिया रद्द कर दी गई थी। अब, एक बार फिर, बीएमसी ने एक निविदा जारी की है और प्रतिक्रिया प्राप्त हुई है। यह परियोजना समुद्र के पानी का उपचार करेगी और मुंबईकरों को ४०० मिलियन लीटर पानी प्रदान करेगी। इस परियोजना से पी नॉर्थ मलाड, पी साउथ गोरेगांव, आर सेंट्रल बोरीवली वेस्ट, आर नॉर्थ दहिसर वेस्ट और आर साउथ कांदिवली वेस्ट को फायदा होगा। परियोजना निविदा को अच्छी प्रतिक्रिया मिली है।

आवश्यकता के अनुसार अन्य क्षेत्रों में जलापूर्ति भांडुप जल उपचार संयंत्र २,८५० मिलियन लीटर पानी प्राप्त करता है और मुंबई शहर, पूर्वी और पश्चिमी उपनगरों को पानी की

आपूर्ति करता है। नगर निकाय के एक वरिष्ठ अधिकारी ने बताया कि वर्सोवा को खारे बनाने की परियोजना पूरी होने के बाद भांडुप जल शोधन संयंत्र से अंधेरी से मलाड इलाके तक की जलापूर्ति जरूरत के हिसाब से दूसरे इलाकों में भेज दी जाएगी।

नगर निकाय के एक वरिष्ठ अधिकारी ने बताया कि वर्सोवा में इस्तेमाल किये जाने योग्य बनाने की परियोजना से अंधेरी वर्सोवा से मलाड इलाके में रहने वाले लोगों को फायदा होगा. पानी को बेल्ट में डायवर्ट किया जाएगा। यह परियोजना वर्सोवा में मौजूदा सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट की नगरपालिका भूमि पर स्थापित की जाएगी।

वर्सोवा में Desalination Plant परियोजना

परियोजना की पृष्ठभूमि

पहले मनोरी स्थित २०० MLD क्षमता वाले प्लांट का tender लगातार चार बार (२०२३-२०२४ में) विज्ञापित किया गया था, लेकिन कमजोर प्रतिसाद के कारण रद्द कर दिया गया। फरवरी-अगस्त २०२४ तक केवल एक ही बोलीदाता (Israel-based IDE Technologies) मिला था, जिससे Tender अगस्त २०२४ में रद्द हुआ था। फिर, जून २०२५ में BMC ने पुनः Manori प्लांट के लिए चौथी बार tender जारी किया, जिसमें २१ कंपनियों ने अभिरुचि दर्शाई–जिसमें इज़राइल, स्पेन और मध्य-पूर्व की कम्पनियाँ शामिल थीं। परियोजना अनुमानित लागत अब ₹३,२००-₹३,५२० करोड़ बताई जा रही है।

वर्सोवा परियोजना का स्वरूप

कार्यक्रम का अगला चरण वर्सोवा में दूसरा desalination प्लांट स्थापित करना है, जिसकी क्षमता भी २०० MLD होगी। मॉडल आधारित होगा DBFOT (Design, Build, Finance, Operate, Transfer) – यानी निजी क्षेत्र निवेश करेगा, निर्माण और ऑपरेशन करेगा; BMC केवल पानी खरीदेगा, जिससे फंड लचीला रहेगा। परियोजना ७ एकड़ क्षेत्र में, तीन lagoons के चारों ओर सुसज्जित होगी। संचालन समयबद्धता लगभग ४ वर्ष में पूरा करना लक्ष्य है।

वित्तीय अनुमान एवं एजेंट लागत

Manori प्लांट की नवीनतम लागत ₹३,२००-₹३,५२० करोड़ के आस-पास आंकी गई है। संचालन व रखरखाव की अवधि २० वर्ष है, जिसमें लागत पहले से ही tender में शामिल होती है।

उद्देश्य और लाभ

मुंबई की मौजूदा जल माँग लगभग ४,५०० MLD है, लेकिन ग्रामीण स्त्रोतों (तालाबों) से आपूर्ति केवल ३,८००-३,९५० MLD तक सीमित है। इसलिए प्रतिदिन पानी की कमी होती है। DesalinationPlants प्रारंभिक चरण में २०० MLD, और विस्तार अवधि में कुल ४०० MLD तक आपूर्ति कर सकते हैं, जिससे संकट का सामना करना आसान होगा।

वर्सोवा प्लांट से खारे पानी को मीठे पानी (potable) में बदला जाएगा, जिसे BMC द्वारा खरीदा और जल वितरण नेटवर्क में मिलाया जाएगा। इससे भूजल एवं surface water पर निर्भरता कम होगी और भविष्य में monsoon की अनियमितता या गर्मी से बेहतर मुकाबला संभव होगा।

परियोजना की प्रमुख तथ्य-सारणी

क्षमता २०० MLD (phase-I), ४०० MLD तक विस्तार

स्थान वर्सोवा, मुंबई (तीन lagoons में फैला ७ एकड़)

मॉडल DBFOT (प्राइवेट निवेश/निर्माण, BMC द्वारा पानी खरीद)

अनुमानित लागत ₹३,२००-₹३,५२० करोड़ (Manori मॉडल पर आधारित)

Tender स्थिति EOI जारी; pre-bid चरण पूर्ण; bid जमा करने की अंतिम तिथि जारी हो रही है, निर्माण समयः अनुमानित रूप से ४ वर्ष का कार्यकाल

लाभ जल सुरक्षा, आपूर्ति में वृद्धि, तालाबों पर निर्भरता में कमी, समुंदरी जल संसाधन से potable water उत्पादन ।

Manori प्लांट अब कामयाब होने की दिशा में है, लेकिन tender प्रक्रिया लंबित रही।

वर्सोवा प्लांट को DBFOT मॉडल पर विकसित किया जा रहा है, जिससे वित्तीय जोखिम कम होकर सार्वजनिक-निजी भागीदारी को बढ़ावा मिलेगा। पानी की खरीद मॉडल से BMC पर तुरंत खर्च नहीं होगा।यह मुंबई के जल संकट को दूर करने और भविष्य की जल सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए एक महत्वपूर्ण कदम है।

जापान के राजदूत ने महाराष्ट्र के राज्यपाल से मुलाकात की

भारत में जापान के राजदूत केइची ओनो ने मंगलवार (२९ जुलाई) को मुंबई के राजभवन में महाराष्ट्र के राज्यपाल सी. पी. राधाकृष्णन से मुलाकात की। यह मुंबई की उनकी तीसरी यात्रा है, राजदूत ने भारत और जापान के बीच गहरे सांस्कृतिक और आध्यात्मिक संबंधों को रेखांकित किया, जो बौद्ध धर्म और आपसी सम्मान में निहित हैं। उन्होंने लोगों से लोगों के बीच अधिक जुड़ाव की आवश्यकता पर बल दिया और बताया कि विश्वविद्यालय स्तर के सहयोग को बढ़ाने के लिए इस वर्ष के अंत में हैदराबाद में भारत-जापानी शैक्षणिक सम्मेलन आयोजित किया जाएगा। उन्होंने जापान में भारतीय छात्रों की कम संख्या पर भी चिंता व्यक्त की और अकादमिक आदान-प्रदान, भाषा कार्यक्रमों और आईटी, पर्यटन और कुशल कार्यबल जैसे क्षेत्रों में सहयोग बढ़ाने के लिए जापान के समर्थन को बढ़ाया।

जापानी राजदूत का स्वागत करते हुए, राज्यपाल राधाकृष्णन ने जापान के अनुशासन, मूल्यों और सांस्कृतिक विरासत के लिए भारत की गहरी प्रशंसा व्यक्त की। उन्होंने आर्थिक संबंधों को मजबूत करने की आवश्यकता पर जोर दिया, यह देखते हुए कि दोनों देशों के बीच व्यापार उनके राजनयिक संबंधों की ताकत को पर्याप्त रूप से प्रतिबिंबित नहीं करता है। राज्यपाल ने चैंबर्स ऑफ कॉमर्स के बीच अधिक सहयोग का आह्वान किया और जापानी एमएसएमई को महाराष्ट्र में विशेष रूप से उपभोग्य सामग्रियों, वस्त्रों और रत्न और आभूषणों में अवसरों का पता लगाने के लिए प्रोत्साहित किया।

शिक्षा के क्षेत्र में, राज्यपाल ने बताया कि मुंबई विश्वविद्यालय जल्द ही अन्य संस्थानों के छात्रों के लिए एक जापानी भाषा कार्यक्रम शुरू करेगा। उन्होंने जोर देकर कहा कि भाषा की पहुंच भारतीय छात्रों को जापान में उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए महत्वपूर्ण होगी। उन्होंने अकादमिक और कृषि आदान-प्रदान कार्यक्रमों का भी प्रस्ताव रखा, यह देखते हुए कि मशरूम की खेती में जापान की विशेषज्ञता ग्रामीण महाराष्ट्र को लाभान्वित कर सकती है।

दोनों नेताओं ने पर्यटन, खेल और संस्कृति में संभावनाओं का भी पता लगाया। राज्यपाल ने नवी मुंबई अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे के चालू हो जाने के बाद मुंबई और टोक्यो के बीच सीधी उड़ान शुरू करने का सुझाव दिया। उन्होंने सांस्कृतिक कार्यक्रमों, बौद्ध धर्म से जुड़े धार्मिक पर्यटन और पाक आदान-प्रदान के माध्यम से मजबूत पर्यटन को बढ़ावा देने का प्रस्ताव रखा- भारतीय शहरों में अधिक जापानी रेस्तरां की वकालत की। राजदूत ने इन विचारों का समर्थन किया और जापान में भारतीय व्यंजनों और फिल्मों की लोकप्रियता की ओर इशारा किया।

महाराष्ट्र के राज्यपाल सीपी राधाकृष्णन ने सिम्बायोसिस विश्वभवन, पुणे में डॉ. मजूमदार के ९०वें जन्मदिन के अवसर पर सिम्बायोसिस इंटरनेशनल यूनिवर्सिटी के संस्थापक और अध्यक्ष डॉ. शांताराम बी. मजूमदार को सम्मानित किया। सम्मान समारोह का आयोजन सकल मीडिया प्राइवेट लिमिटेड द्वारा किया गया था। इस अवसर पर 'ज्ञान पर्व' के विशेष स्मारक संस्करण का विमोचन किया गया। इस अवसर पर सांसद श्रीमती संजीवनी मजूमदार, सांसद शाहू महाराज छत्रपति, सकल मीडिया प्राइवेट लिमिटेड के प्रबंध निदेशक अभिजीत पवार, सकल सम्राट फडणीस के संपादक और राज्यपाल के सचिव डॉ. प्रशांत नारनवरे उपस्थित थे।

१०६ पुलिस अधिकारियों, कार्मिकों को पुलिस पदक प्रदान किए

महाराष्ट्र के राज्यपाल सी. पी. राधाकृष्णन ने मंगलवार (२९ जुलाई) को राजभवन, मुंबई में आयोजित एक अलंकरण समारोह में १०६ पुलिस अधिकारियों और पुलिस कर्मियों को वीरता के लिए पुलिस पदक, सराहनीय सेवा के लिए राष्ट्रपति पुलिस पदक और सराहनीय सेवा के लिए पुलिस पदक प्रदान किए। भारत के राष्ट्रपति द्वारा स्वतंत्रता दिवस २०२२ और २०२३ और २०२३ में गणतंत्र दिवस और २०२३ और २०२४ में गणतंत्र दिवस पर पुलिस पदकों की घोषणा की गई।

कुल चौंसठ (६४) पुलिस अधिकारियों और कर्मियों को पुलिस वीरता पदक दिया गया, चार (४) पुलिस अधिकारियों को विशिष्ट सेवा के लिए राष्ट्रपति पुलिस पदक से सम्मानित किया गया, और अड़तीस (३८) अधिकारियों और कर्मियों को सराहनीय सेवा के लिए पुलिस पदक प्रदान किए गए। प्रमुख सचिव (गृह) अनूप कुमार सिंह। राष्ट्रपति पुलिस पदक और विशेष पुलिस महानिरीक्षक (कानून व्यवस्था) डॉ. मनोज कुमार शर्मा, सराहनीय सेवा पदक सहित अन्य को सम्मानित किया गया। उपमुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे, गृह राज्य मंत्री (शहरी) योगेश कदम, पुलिस महानिदेशक रश्मि शुक्ला और पुलिस अधिकारी और परिवार के सदस्य उपस्थित थे।

15 अगस्त 2025 - आज़ादी का अमृत और

आत्मनिर्भर भारत की उड़ान

१५ अगस्त १९४७ को जब भारत ने ब्रिटिश हुकूमत की जंजीरों को तोड़ा था, तब किसी ने नहीं सोचा था कि यह नवजात राष्ट्र आने वाले दशकों में विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र, तेज़ी से उभरती अर्थव्यवस्था और सांस्कृतिक महाशक्ति के रूप में खड़ा होगा। वर्ष २०२५ में, भारत की आज़ादी के ७८ वर्ष पूरे हो चुके हैं। यह केवल वर्षों की गिनती नहीं, बल्कि संघर्ष, विकास, उत्थान, प्रयोग, आत्ममंथन और नवचेतना की लंबी यात्रा है।

हर साल १५ अगस्त को भारतवासी अपने देश की स्वतंत्रता का उत्सव मनाते हैं। यह दिन केवल एक तिथि नहीं, बल्कि बलिदान, संघर्ष और संकल्प की प्रतीक है। १५ अगस्त १९४७ को भारत ने वर्षों की गुलामी के बाद आज़ादी की सांस ली थी। २०२५ का यह स्वतंत्रता दिवस, हमारी आज़ादी के ७८ वर्ष पूरे होने का प्रतीक है और यह एक महत्वपूर्ण पड़ाव भी है - जब देश आत्मनिर्भर भारत की ओर तेज़ी से अग्रसर हो रहा है। ब्रिटिश शासन से मुक्ति पाने के लिए हजारों वीरों ने अपने प्राणों की आहुति दी। महात्मा गांधी के सत्याग्रह, भगत सिंह का बलिदान, नेताजी सुभाष चंद्र बोस का

नारा - 'तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आज़ादी दूंगा', इन सबने देश को आज़ादी दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। १५ अगस्त १९४७ को जब भारत के पहले प्रधानमंत्री पं. जवाहरलाल नेहरू ने लाल किले से तिरंगा फहराया, तब पूरा भारत गर्व से झूम उठा था।

इस वर्ष २०२५ में, भारत न केवल अपनी आज़ादी का जश्न मना रहा है, बल्कि डिजिटल इंडिया, मेक इन इंडिया, चंद्रयान और गगनयान जैसे वैज्ञानिक अभियानों के माध्यम से वैश्विक मंच पर भी अपनी सशक्त पहचान बना रहा है। देश की युवा पीढ़ी तकनीक, शिक्षा और रक्षा के क्षेत्र में अभूतपूर्व योगदान दे रही है। इस बार लाल किले से प्रधानमंत्री का भाषण भी नई ऊर्जा से भरा होगा, जिसमें आने वाले भारत की रूपरेखा पर चर्चा होगी - ग्रीन एनर्जी, शिक्षा में बदलाव, महिला सशक्तिकरण और ग्रामीण भारत का उत्थान।

आज़ादी के संग्राम में भारत के अनेक वीरों और वीरांगनाओं ने हिस्सा लिया और अपने प्राणों की आहुति देकर देश को स्वतंत्रता दिलाने में योगदान दिया। यह वीर सिर्फ हथियारों से नहीं लड़े, बल्कि अपने विचारों, आंदोलनों और बलिदान से भी आज़ादी की मशाल जलाए रखी।

स्वतंत्रता संग्राम के प्रमुख योद्धा.

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के प्रमुख वीर

☐ महात्मा गांधी (१८६९-१९४८)

- अहिंसा और सत्याग्रह के पुजारी।

- नमक सत्याग्रह, असहयोग आंदोलन, भारत छोड़ो आंदोलन जैसे बड़े आंदोलनों का नेतृत्व किया।

- उन्होंने 'करो या मरो' का नारा दिया और अंग्रेजों के खिलाफ अहिंसात्मक लड़ाई लड़ी।

☐ नेताजी सुभाष चंद्र बोस (१८९७-१९४५?)

- 'तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आज़ादी दूंगा' का नारा दिया।

- आज़ाद हिंद फौज का गठन किया और ब्रिटिश सत्ता को सीधी चुनौती दी।

- जापान और जर्मनी के सहयोग से भारत को आज़ाद कराने का प्रयास किया।

☐ भगत सिंह (१९०७-१९३१)

- युवा क्रांतिकारी, जिनका उद्देश्य था ब्रिटिश साम्राज्य को हिला देना।

- सांडर्स वध और संसद में बम फेंकना जैसे कार्यों से अंग्रेजों को चुनौती दी।

- २३ वर्ष की आयु में फाँसी, उनका बलिदान युवाओं के लिए प्रेरणा बन गया।

☐ चंद्रशेखर आज़ाद (१९०६-१९३१)

- हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन (HSRA) के नेता।

- अंग्रेजों से लोहा लिया, और अंत तक 'आज़ाद' नाम को जीवित रखा - पकड़े न गए।

- इलाहाबाद में अंतिम गोली खुद को मारी ताकि अंग्रेज उन्हें जीवित न पकड़ सकें।

☐ राजगुरु, सुखदेव (१९०८-१९३१)

- भगत सिंह के साथ क्रांतिकारी गतिविधियों में शामिल।

- सांडर्स हत्या कांड में सक्रिय भागीदारी।

- तीनों को एक साथ २३ मार्च १९३१ को फाँसी दी गई – यह दिन 'शहीद दिवस' के रूप में जाना जाता है।

☐ बाल गंगाधर तिलक (१८५६-१९२०)

- 'स्वराज मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है' का नारा दिया।

- उन्होंने भारतीय जनमानस को राजनीतिक रूप से जागरूक किया।

- केसरी पत्रिका और 'शिवाजी उत्सव' से जनजागरण फैलाया।

☐ लाला लाजपत राय (१८६५-१९२८)

- लाल-बाल-पाल त्रयी में शामिल।

- साइमन कमीशन का विरोध करते हुए लाठीचार्ज में घायल हुए और शहीद हो गए।

- उन्हें 'पंजाब केसरी' कहा गया।

☐ रानी लक्ष्मीबाई (१८३५-१८५८)

- १८५७ की क्रांति की नायिका।

- अंग्रेजों के खिलाफ झांसी की रक्षा करते हुए वीरगति को प्राप्त हुईं।

- उनका साहस आज भी देश की बेटियों को प्रेरित करता है: 'मैं अपनी झांसी नहीं दूंगी।'

☐ बिरसा मुंडा (१८७५-१९००)

- आदिवासी नेता और स्वतंत्रता सेनानी।

- अंग्रेजों के खिलाफ मुंडा जनजाति को संगठित किया।

- झारखंड क्षेत्र में आज भी उन्हें भगवान के रूप में पूजा जाता है।

☐ सरदार वल्लभभाई पटेल (१८७५-१९५०)

- भारत को एकजुट करने वाले 'लौह पुरुष'।

- किसानों के सत्याग्रह और भारत छोड़ो आंदोलन में योगदान।

- स्वतंत्रता के बाद रियासतों को भारत में मिलाने का बड़ा कार्य किया।

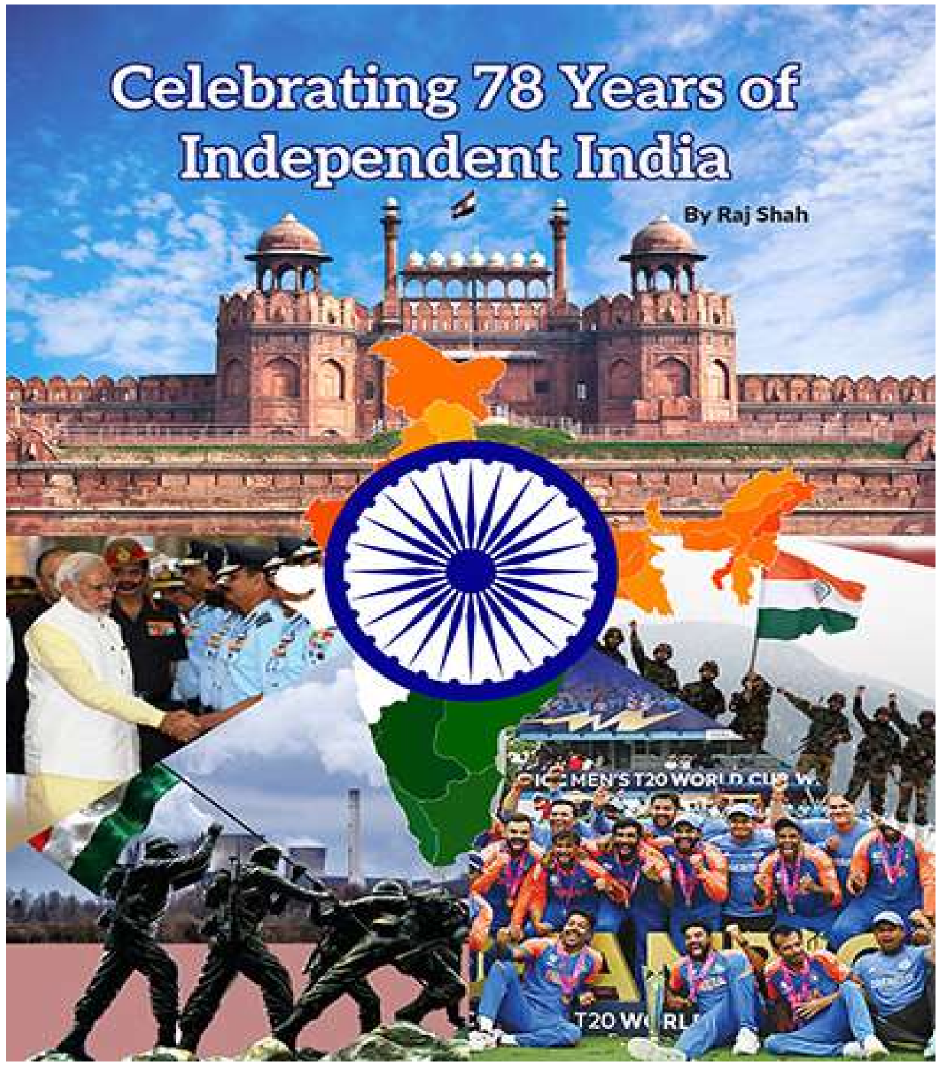

☐ १९४७-१९६०: पुनर्निर्माण का दौर

विभाजन की पीड़ा से कराहता देश।

रियासतों का एकीकरण - सरदार वल्लभभाई पटेल का ऐतिहासिक योगदान।

संविधान का निर्माण (१९५०) - भारत एक गणराज्य बना।

पंचवर्षीय योजनाओं के माध्यम से आर्थिक नींव की शुरुआत।

☐ १९६०-१९८०: आत्मनिर्भरता की नींव

हरित क्रांति (श्ए स्वामीनाथन) - अन्न संकट से आत्मनिर्भरता की ओर।

दुग्ध क्रांति (वर्गीज़ कुरियन) - 'ऑपरेशन फ्लड' और श्वेत क्रांति।

बैंकों का राष्ट्रीयकरण, गरीबी हटाओ नारे, शिक्षा और औद्योगिक विकास।

युद्धों का समय (१९६२, १९६५, १९७१) - फिर भी राष्ट्र एकजुट रहा।

१९७१ में बांग्लादेश निर्माण - भारत की बड़ी कूटनीतिक जीत।

☐☐ १९८०-२०००: राजनीतिक बदलाव और उदारीकरण

अस्थिर राजनीतिक दौर, आपातकाल (१९७५-७७) और लोकतंत्र की परीक्षा।

१९९१ का आर्थिक सुधार - LPG (Liberalisation, Privatisation, Globalisation)

नीति लागू।

सूचना प्रौद्योगिकी और सेवाक्षेत्र में भारत का उदय।

मोबाइल, इंटरनेट और नए बाज़ारों का आगमन।

☐ २०००-२०२५: डिजिटलीकरण, नवाचार और वैश्विक पहचान

डिजिटल इंडिया, स्टार्टअप इंडिया, मेक इन इंडिया - नवभारत की नींव।

ISRO की सफलताएं - चंद्रयान, मंगलयान और गगनयान जैसी मिशनें।

जीएसटी, आधार, UPI जैसे संरचनात्मक बदलाव।

COVID महामारी के दौरान भारत का नेतृत्वः वैक्सीन निर्माण और सेवा।

☐☐ आज का भारत - २०२५ में

विश्व की पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था।

दुनिया की सबसे बड़ी युवा आबादी।

लोकतंत्र, विविधता और तकनीक का संगम।

आत्मनिर्भर भारत का सपना साकार हो रहा है - रक्षा, विज्ञान, कृषि और डिजिटल तकनीक में तेज़ी।

☐ बचे हुए प्रश्न और चुनौतियाँ

आर्थिक विषमता, बेरोज़गारी और ग्रामीण-शहरी अंतर।

शिक्षा और स्वास्थ्य प्रणाली में सुधार की आवश्यकता।

पर्यावरणीय संकट और संसाधनों का असंतुलित उपयोग।

☐ भविष्य की ओर

भारत की ७८ वर्षों की यात्रा प्रेरणा से भरी रही है - कभी गांधी के अहिंसात्मक आंदोलन से, तो कभी विज्ञान के चमत्कारों से। अब यह हमारी पीढ़ी की ज़िम्मेदारी है कि हम इस आज़ादी को केवल उत्सव नहीं, कर्तव्य और निर्माण का आधार मानें। हम भारत को एक ऐसा देश बनाएं - जहां हर नागरिक को सम्मान मिले, हर बच्चा शिक्षा पाए, और हर सपना, साकार हो।

Wholesale Furniture Market

Ulhasnagar,Mumbai

सस्ते फर्नीचर के 5 थोक बाजार

फर्नीचर खरीदिए आधे दामों पर

एक से बढ़कर एक एंटीक आइटम

आज का भारत- 2025 में ...

□□ १. राजनीति और लोकतंत्र

भारत दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र है, जहाँ ९० करोड़ से अधिक मतदाता हैं।

निर्वाचन प्रक्रिया अब ज़्यादा डिजिटल, पारदर्शी और किफायती बन चुकी है।

केंद्र और राज्य सरकारें अब नागरिकों तक सीधी डिजिटल सेवाएँ (e-governance) पहुँचा रही हैं।

युवाओं की राजनीतिक भागीदारी बढ़ी है - सोशल मीडिया और युवाओं के आंदोलन ने सरकारों को जवाबदेह बनाया है।

□ २. अर्थव्यवस्था और व्यापार

भारत २०२५ में दुनिया की पाँचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन चुका है।

GDP तेज़ी से बढ़ रही है - खासतौर पर डिजिटल सेवा, टेक्नोलॉजी, स्टार्टअप और निर्माण क्षेत्र (Manufacturing) में।

भारत का UPI (Unified Payments Interface) मॉडल अब कई देशों द्वारा अपनाया गया है। मेक इन इंडिया, स्टार्टअप इंडिया जैसे अभियानों से नई नौकरियाँ और वैश्विक निवेश बढ़े हैं।

□ ३. शिक्षा और युवा

नई शिक्षा नीति (NEP 2020) के लागू होने के बाद, शिक्षा प्रणाली गुणवत्ता, कौशल, और रोजगारोन्मुखी हो गई है।

डिजिटल क्लासरूम, ऑनलाइन लर्निंग, और AI आधारित मूल्यांकन अब सामान्य हो चुके हैं।

स्कूली स्तर पर कोडिंग, उद्यमिता और जीवन कौशल जैसे विषयों को बढ़ावा दिया गया है।

युवाओं में स्टार्टअप और इनोवेशन कल्चर बढ़ रहा है - भारत अब स्टार्टअप हब बन चुका है।

□□ ४. विज्ञान, अंतरिक्ष और तकनीक

ISRO ने चंद्रयान-३ और गगनयान जैसी ऐतिहासिक सफलताएँ पाई हैं।

भारत अब स्पेस टेक्नोलॉजी में दुनिया के गिने-चुने देशों में है - कम लागत में उच्च गुणवत्ता वाले मिशन।

AI, रोबोटिक्स, 5G और ब्लॉकचेन जैसी तकनीकों में भारत अग्रणी भूमिका निभा रहा है।

डिजिटल इंडिया का सपना अब गाँव-गाँव

तक पहुंच चुका है - ग्रामीण क्षेत्रों में इंटरनेट और डिजिटल सेवाएँ उपलब्ध हैं।

□ ५. कृषि और ग्रामीण विकास

ड्रोन तकनीक, सॉयल हेल्थ कार्ड, और स्मार्ट खेती के ज़रिए खेती में आधुनिकता आ रही है।

किसान अब मंडियों से सीधे डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म के माध्यम से बिक्री कर पा रहे हैं।

जैविक खेती, मिलेट्स (श्री अन्न), और पानी-संरक्षण आधारित खेती को बढ़ावा मिल रहा है।

ग्रामीण भारत में सड़क, बिजली, शौचालय और पीने के पानी की पहुँच बेहतर हुई है।

□ ६. स्वास्थ्य और कल्याण

आयुष्मान भारत योजना के तहत करोड़ों नागरिकों को मुफ्त इलाज मिल रहा है।

कोविड महामारी के बाद भारत ने स्वास्थ्य व्यवस्था को मज़बूत किया है - ICU, मेडिकल कॉलेज और टेलीमेडिसिन बढ़े हैं।

वैक्सीन उत्पादन में भारत एक वैश्विक लीडर बना है - 'वैक्सीन मैन ऑफ इंडिया' जैसे विशेषण भी प्राप्त हुए।

मानसिक स्वास्थ्य, योग, और आयुर्वेद को भी अब मुख्यधारा में शामिल किया गया है।

□ ७. भारत की वैश्विक छवि (Global Role)

भारत अब G20, BRICS और संयुक्त राष्ट्र में एक प्रभावशाली आवाज़ रखता है।

'वसुधैव कुटुम्बकम्' के सिद्धांत के साथ भारत ने जलवायु परिवर्तन, शांति और विकास में वैश्विक नेतृत्व किया है।

सॉफ्ट पावर के रूप में भारत का योग, बॉलीवुड, खानपान, और संस्कृति की दुनिया भर में सराहना हो रही है।

भारत ने अफ्रीका, एशिया और लातिन अमेरिका में सहायता, तकनीक और वैक्सीन कूटनीति के ज़रिए विश्व में मित्रता बढ़ाई है।

भारत देश को और विकसित होने के लिए...

भारत को और अधिक विकसित (विकसित राष्ट्र - Developed Nation) बनाने के लिए हमें कुछ विशेष क्षेत्रों में संगठित प्रयास और नीति-निर्माण करने की आवश्यकता है। विकास केवल इमारतें या बड़ी सड़कों से नहीं होता, बल्कि एक समावेशी, स्थायी, और जनहितकारी व्यवस्था से होता है।

☐ १. शिक्षा में गुणात्मक सुधार

बच्चों को सिर्फ पढ़ाई नहीं, सोचने, समझने और समस्याएँ हल करने की शिक्षा दी जाए।

सरकारी स्कूलों में बुनियादी ढांचे, शिक्षक गुणवत्ता और डिजिटल टूल्स को मज़बूत करना।

व्यावसायिक (Vocational) और तकनीकी शिक्षा को बढ़ावा देना ताकि छात्र नौकरी के योग्य बनें।

☐ २. स्वास्थ्य सेवा को सार्वभौमिक और मजबूत बनाना

सभी नागरिकों को सस्ती और गुणवत्तापूर्ण इलाज मिले - चाहे वे शहर में हों या गाँव में।

प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों (PHC) में सुधार, डॉक्टरों की संख्या बढ़ाना, टेलीमेडिसिन को बढ़ावा देना। मानसिक स्वास्थ्य और पोषण पर विशेष ध्यान देना।

☐ ३. बेरोज़गारी दूर करना और युवाओं को रोजगार देना

स्टार्टअप, MSMEs (सूक्ष्म, लघु, मध्यम उद्योगों) को बढ़ावा देकर रोजगार सृजन।

कौशल विकास मिशन (Skill India) को तेज़ गति से लागू करना। नवाचार (Innovation), AI, रोबोटिक्स, ग्रीन एनर्जी जैसे भविष्य के क्षेत्रों में प्रशिक्षण देना।

☐ ४. कृषि का आधुनिकीकरण और किसानों की आय बढ़ाना

वैज्ञानिक तरीके, ड्रिप सिंचाई, जैविक खेती को बढ़ावा देना।

सीधी बिक्री की व्यवस्था (FPO, eNAM) को सरल और प्रभावी बनाना।

कृषि आधारित उद्योग (Agro-processing) को गाँवों के पास विकसित करना।

☐ ५. भ्रष्टाचार पर अंकुश और पारदर्शी शासन

सरकारी योजनाओं का डिजिटल ट्रैकिंग और जनभागीदारी आधारित मूल्यांकन।

हर स्तर पर ई-गवर्नेंस, RTI, और जवाबदेही की संस्कृति को प्रोत्साहित करना।

☐ ६. गुणवत्तापूर्ण अवसंरचना (Infrastructure)

सड़क, रेल, जल, बिजली, इंटरनेट की १००% पहुँच सुनिश्चित करना।

स्मार्ट सिटी, हर गाँव तक इंटरनेट, और पर्यावरण-संवेदनशील निर्माण को बढ़ावा देना।

☐ ७. पर्यावरण संरक्षण और सतत विकास

स्वच्छ ऊर्जा (सौर, पवन) का उपयोग बढ़ाना।

वनों, जलस्रोतों और जैव विविधता की रक्षा करना। प्लास्टिक प्रदूषण और कचरा प्रबंधन में आम लोगों को भागीदार बनाना।

☐ ८. नारी सशक्तिकरण और लैंगिक समानता

महिलाओं को शिक्षा, रोजगार और सुरक्षा में पूरी स्वतंत्रता मिले। पंचायत से संसद तक महिलाओं की भागीदारी बढ़े। बाल विवाह, घरेलू हिंसा, और लैंगिक भेदभाव को खत्म करने के लिए सख्त सामाजिक पहल।

☐ ९. रक्षा, सुरक्षा और आंतरिक स्थिरता

आतंकवाद, साइबर हमलों और सीमा सुरक्षा में पूर्ण तत्परता।

दंगा-रहित, कानूनप्रिय समाज के निर्माण के लिए पुलिस और न्याय प्रणाली को मज़बूत करना।

☐ १०. एकता, सहिष्णुता और राष्ट्रीय भावना धार्मिक, भाषाई, क्षेत्रीय भेदभाव से ऊपर उठकर 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' की भावना को मजबूत करना।

हर नागरिक को यह समझना होगा कि उसका छोटा-सा योगदान भी देश के निर्माण में अहम है। विकास सिर्फ सरकार से नहीं आता, विकास तब आता है जब हर नागरिक - सोचता है, पूछता है, बनाता है और निभाता है। अगर हम सब मिलकर शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार और नैतिक मूल्यों को साथ लेकर चलें, तो २०४७ तक भारत एक संपूर्ण विकसित और आत्मनिर्भर राष्ट्र बन सकता है। 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' का सपना तभी साकार हो सकता है जब हम सब धार्मिक, भाषाई और क्षेत्रीय भेदभाव से ऊपर उठकर एकजुट भारत का निर्माण करें। भारत की विविधता ही उसकी ताक़त है – मगर जब यह विविधता विवाद का कारण बन जाए, तो सामाजिक ताना-बाना टूटने लगता है।

ग्लैमर की दुनिया में चमकते सितारों की जिंदगी दूर से जितनी परियों जैसी दिखती है, हकीकत उतनी ही उलझी होती है। रिश्ते यहां भी आम लोगों जैसे ही टूटते हैं – कभी व्यस्तता की वजह से, कभी सोच के अंतर से, और कभी भरोसे के टूटने से। हाई-प्रोफाइल लोगों के तलाक (High-profile divorces) के पीछे कई जटिल और गहरे कारण हो सकते हैं। ये आमतौर पर फिल्म स्टार, राजनेता, उद्योगपति या मशहूर हस्तियां होती हैं जिनके रिश्ते सार्वजनिक निगरानी में रहते हैं। पिछले कुछ वर्षों में कई हाई-प्रोफाइल सेलिब्रिटी तलाक सामने आए जिन्होंने दर्शकों को चौंका दिया। आइए जानते हैं कुछ चर्चित तलाकों की असली कहानियां:

जब रिश्ते सुर्खियों में टूटते हैं: हाई-प्रोफाइल तलाक की कहानियां!

खेल जगत से एक और जोड़ी के टूटने की खबर सामने आ रही है. स्टार बैडमिंटन खिलाड़ी साइना नेहवाल और पारुपल्ली कश्यप ने अलग होने का फैसला कर लिया है. पारुपल्ली कश्यप भी जाने-माने बैडमिंटन प्लेयर हैं. साइना और पारुपल्ली ने साल २०१८ में शादी की थी. उन्होंने सोशल मीडिया पोस्ट के जरिए अलग होने की जानकारी दी. साइना नेहवाल और सानिया मिर्जा, दोनों ही अपने-अपने क्षेत्र की दिग्गज खिलाड़ी हैं और कई लोग उनके नामों के बीच कंफ्यूज हो जाते हैं.

भारतीय बैडमिंटन प्लेयर साइना नेहवाल ने रविवार देर रात अपने पति और बैडमिंटन प्लेयर पारुपल्ली कश्यप (पी. कश्यप) से अलग होने की जानकारी दी। उन्होंने इंस्टाग्राम पर स्टोरी में लिखा, 'बहुत सोच-विचार के बाद, कश्यप और मैंने अलग होने का फैसला किया है।'

साइना ने लिखा, 'जिंदगी कभी-कभी हमें अलग-अलग दिशाओं में ले जाती है। हम एक-दूसरे के लिए शांति, तरक्की और उबरना चुन रहे हैं। मैं उनके साथ सभी यादों के लिए आभारी हूं और आगे के लिए शुभकामनाएं देती हूं। हमारी निजता को समझने और उसका सम्मान करने के लिए धन्यवाद।' जहां साइना

नेहवाल बैंडमिंटन खिलाड़ी हैं, वहीं सानिया मिर्जा ने टेनिस की दुनिया में अपनी एक खास पहचान बनाई है. सानिया ने फरवरी २०२३ में दुबई टेनिस चैंपियनशिप के बाद प्रोफेशनल टेनिस से संन्यास ले लिया. सानिया मिर्जा का जन्म मुंबई में हुआ था लेकिन वे पली-बढ़ी हैदराबाद में थीं, जबकि साइना नेहवाल हरियाणा की रहने वाली हैं. आज साइना नेहवाल अपनी निजी ज़िंदगी को लेकर चर्चा में हैं. वहीं, हरियाणा की युवा टेनिस खिलाड़ी राधिका यादव की मौत के बाद सानिया मिर्जा भी सुर्खियों में आ गई हैं. सानिया मिर्जा और पाकिस्तानी क्रिकेटर शोएब मलिक की शादी २०१० में हुई थी और २०१८ में उनके बेटे इजहान मिर्जा मलिक का जन्म हुआ था. २०२४ में सानिया ने इस्लाम की 'खुला' प्रथा के तहत शोएब से तलाक ले लिया था. इस प्रथा में मुस्लिम महिला अपने पति से एकतरफा तलाक ले सकती है.

☐ १. पर्सनल लाइफ में प्राइवेसी की कमी

लगातार मीडिया की नजर में रहने से रिश्तों में तनाव आता है। हर छोटी बात वायरल हो जाती है जिससे झगड़े और बढ़ते हैं।

☐ २. करियर प्रेशर और व्यस्तता

दोनों साथी अपने-अपने करियर में इतने व्यस्त रहते हैं कि एक-दूसरे को समय नहीं दे पाते। लगातार ट्रैवल, शूटिंग या मीटिंग के चलते भावनात्मक दूरी बढ़ती है।

☐ ३. शक्ति और पैसे का टकराव

जब दोनों सफल हों, तो 'कौन बड़ा है?' जैसी मानसिकता भी समस्याएं पैदा कर सकती है। कई बार पैसा ही विवादों की जड़ बन जाता है, खासकर संपत्ति बंटवारे में।

☐☐ ४. अफेयर और विश्वासघात

एक्स्ट्रा मैरिटल अफेयर, या अफवाहें भी हाई-प्रोफाइल तलाक का बड़ा कारण हैं।

☐ ५. मानसिक स्वास्थ्य और असुरक्षा

डिप्रेशन, एंग्जायटी या सेल्फ-इमेज की समस्याएं जो सार्वजनिक जीवन में और बढ़ जाती हैं। सोशल मीडिया पर ट्रोलिंग भी रिश्तों को तोड़ सकती है।

☐☐ ६. कानूनी और सामाजिक दबाव

कुछ तलाक दिखावे या राजनीतिक कारणों से भी होते हैं, जहाँ छवि बचाना ज़रूरी होता है।

☐ आमिर खान - किरण राव

तलाक वर्षः २०२१

एक शांत और सुसंस्कृत जोड़ी मानी जाती थी।

कारणः सोच और जीवन की दिशा में अंतर।

विशेष बातः तलाक के बाद भी दोस्ताना रिश्ता और साथ काम (पानी फाउंडेशन)।

☐ ऋतिक रोशन - सुज़ैन खान

तलाक वर्षः २०१४

अफवाहें और करियर प्रेशर ने रिश्ते को तोड़ा।

आज भी बच्चों के लिए दोनों साथ हैं।

कंगना रनौत के साथ विवाद तलाक के बाद और बढ़ा।

☐ करिश्मा कपूर - संजय कपूर

तलाक वर्षः २०१६

करिश्मा ने घरेलू हिंसा और मानसिक उत्पीड़न के आरोप लगाए। आज वे अपने बच्चों के साथ स्वतंत्र जीवन जी रही हैं।

☐ सैफ अली खान - अमृता सिंह

तलाक वर्षः २००४

उम्र का बड़ा फासला और करियर मतभेद बने कारण। सैफ ने करीना से दूसरी शादी की,

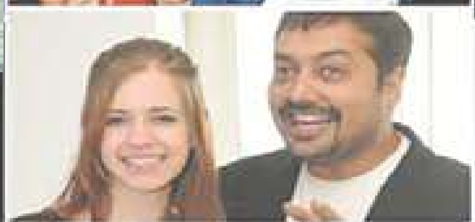

अमृता ने एक्टिंग में वापसी की।

☐ मलाइका अरोड़ा - अरबाज़ खान
तलाक वर्षः २०१७
अफवाहें थीं कि मलाइका का अर्जुन कपूर से रिश्ता पहले ही बन चुका था। दोनों आज अपने-अपने करियर और नई जिंदगी में आगे बढ़ चुके हैं।

☐ फरहान अख्तर - अधुना भबानी
तलाक वर्षः २०१७
बिना विवाद के अलग हुए।
फरहान अब शिबानी दांडेकर से शादी कर चुके हैं।

☐ ईशा देओल - भारत तख्तानी
तलाक वर्षः २०२४
शांत और कम प्रचारित रिश्ता था।
समय के साथ दूरियां बढ़ीं।
ईशा अब लेखन और समाज सेवा में सक्रिय हैं।

☐ सानिया मिर्ज़ा - शोएब मलिक
तलाक वर्षः २०२४
शोएब मलिक का अफेयर और दूसरी शादी विवाद का कारण बना। सानिया अब बेटे के साथ हैदराबाद में और खेल से संन्यास ले चुकी हैं।

रणवीर शौरी और कोंकणा सेन शर्मा का तलाक

मशहूर मीडिया हस्तियाँ रणवीर शौरी और कोंकणा सेन शर्मा ने २०१५ में पांच साल की साथ की जिंदगी के बाद अपने अलग होने की घोषणा की। दोनों की पहली मुलाकात फिल्म मिक्स्ड डबल्स के सेट पर हुई थी। धीरे-धीरे वे एक-दूसरे के करीब आए, प्रेम हुआ, डेटिंग शुरू की और साथ रहने लगे। तलाक आपसी सहमति से हुआ और पूरी प्रक्रिया शांतिपूर्ण रही। दोनों ने संबंध को बचाने के लिए काउंसलिंग भी करवाई, लेकिन बात नहीं बनी और अंततः यह रिश्ता टूट गया। मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार, दोनों अपने

नौ साल के बेटे हारून की संयुक्त कस्टडी साझा रूप से निभा रहे हैं।

अर्जुन रामपाल और मेहर जेसिया का तलाक

अर्जुन रामपाल और मेहर जेसिया ने २०१९ में अपने २१ साल पुराने वैवाहिक संबंध को समाप्त कर दिया। दोनों ने १९९८ में शादी की थी और उनकी दो बेटियाँ हैं - महिका और माइरा। उनका अलगाव आपसी सहमति से हुआ, और दोनों ने इस बात पर ज़ोर दिया कि परिवार उनके लिए सबसे महत्वपूर्ण है। साथ ही उन्होंने अपनी बेटियों की परवरिश मिलकर करने की प्रतिबद्धता भी जताई।

उर्मिला मातोंडकर और मोहसिन अख्तर मीर का तलाक

अभिनेत्री से राजनेता बनीं उर्मिला मातोंडकर ने २०२४ में अपने पति मोहसिन अख्तर मीर से तलाक के लिए अर्जी दी, जिससे उनके आठ साल पुराने वैवाहिक संबंध का अंत हुआ। दोनों ने २०१६ में एक निजी समारोह में शादी की थी। सूत्रों के अनुसार यह फैसला आपसी सहमति से नहीं लिया गया था, बल्कि तलाक की पहल उर्मिला ने की थी। हालांकि अलगाव के कारणों का खुलासा नहीं किया गया है, लेकिन दोनों ने इस विषय में सार्वजनिक रूप से कुछ भी बोलने से परहेज़ किया है और निजी जीवन को निजी ही रखा है। उर्मिला जहां राजनीति और सामाजिक कार्यों में सक्रिय बनी हुई हैं, वहीं मोहसिन अपने व्यवसायिक उपक्रमों पर ध्यान केंद्रित कर रहे हैं।

ए. आर. रहमान और सायरा बानो का अलगाव

प्रसिद्ध संगीतकार ए. आर. रहमान और उनकी पत्नी सायरा बानो ने नवंबर २०२४ में अपने अलगाव की घोषणा की, जिससे उनके २९ साल पुराने विवाह का अंत हो गया। दोनों ने १९९५ में विवाह किया था और उनके तीन बच्चे हैं - खातीजा, रहीमा और अमीन।

एक संयुक्त बयान में दोनों ने बताया कि वे मानसिक और भावनात्मक दबाव के चलते यह निर्णय ले रहे हैं, और उन्होंने इस समय के दौरान अपनी निजता का सम्मान करने की अपील की। रहमान ने सोशल मीडिया पर एक भावुक संदेश साझा किया, जिसमें उन्होंने अपने वैवाहिक सफर और इस दौरान आई चुनौतियों को याद किया।

हार्दिक पांड्या और नताशा स्टेनकोविक का तलाक

क्रिकेटर हार्दिक पांड्या और मॉडल-अभिनेत्री नताशा स्टेनकोविक ने जुलाई २०२४ में अपने अलग होने की घोषणा की, जिससे उनके चार साल पुराने विवाह का अंत हो गया। दोनों ने जनवरी २०२० में सगाई की थी और उसी साल विवाह भी किया। जुलाई २०२० में उनके बेटे अगस्त्य का जन्म हुआ। रिपोर्ट्स के अनुसार, दोनों के व्यक्तित्व और जीवनशैली में मतभेद उनके अलग होने का कारण बने। हालांकि वे अलग हो चुके हैं, फिर भी दोनों ने अपने बेटे की परवरिश मिलकर करने की प्रतिबद्धता जताई है।

धनुष और ऐश्वर्या रजनीकांत का तलाक

धनुष और ऐश्वर्या रजनीकांत ने जनवरी २०२२ में अपने अलग होने की घोषणा की, जिससे उनके १८ साल लंबे वैवाहिक संबंध का अंत हुआ। दोनों ने २००४ में शादी की थी और उनके दो बेटे हैं - यात्रा और लिंगा। इन्होंने अपने निर्णय के पीछे आपसी सम्मान और व्यक्तिगत विकास की आवश्यकता को कारण बताया।

इनका तलाक नवंबर २०२४ में आधिकारिक रूप से संपन्न हुआ। तलाक के बाद भी दोनों ने अपने-अपने पेशेवर जीवन पर ध्यान केंद्रित किया है – धनुष अपने अभिनय करियर में व्यस्त हैं, वहीं ऐश्वर्या निर्देशन से जुड़ी परियोजनाओं में सक्रिय हैं।

सोहेल खान और सीमा सचदेव का तलाक

सलमान खान के छोटे भाई सोहेल खान ने १९९८ में सीमा सचदेव से शादी की थी। उनकी प्रेम कहानी किसी बॉलीवुड फिल्म से कम नहीं थी, क्योंकि शुरुआत में सीमा के परिवार ने इस रिश्ते को स्वीकार नहीं किया था। इस वजह से दोनों ने घर से भागकर पहले आर्य समाज रीति से और फिर निकाह के तहत विवाह किया। इस दंपत्ति के दो बेटे हैं - निर्वाण और योहान, जिनमें से छोटे बेटे योहान का जन्म सरोगेसी के माध्यम से हुआ था। २०१७ से उनके अलग होने की अटकलें लगाई जा रही थीं और अंततः २०२२ में दोनों ने आधिकारिक रूप से तलाक के लिए अर्जी दी। यह प्रक्रिया शांतिपूर्ण तरीके से पूरी हुई, जिसमें दोनों ने आपसी असंगति और लंबे समय से अलग-अलग रहने को कारण बताया।

सोहेल और सीमा अब भी एक दोस्ताना संबंध बनाए हुए हैं और अपने बच्चों की परवरिश की जिम्मेदारियों को साझा कर रहे हैं। दोनों अपने-अपने करियर और निजी जीवन पर ध्यान केंद्रित कर रहे हैं। गुज़ारा भत्ते और सेटलमेंट से जुड़ी जानकारी को निजी रखा गया है।

हनी सिंह और शालिनी तलवार का तलाक

हनी सिंह और शालिनी तलवार की शादी को ११ साल हो चुके थे, लेकिन उनके रिश्ते में दरार आ गई। अगस्त २०२१ में शालिनी ने दिल्ली की अदालत में तलाक की अर्जी दाखिल की, जिसमें उन्होंने मानसिक और शारीरिक उत्पीड़न सहित घरेलू हिंसा के आरोप लगाए। हनी सिंह ने इन सभी आरोपों से इनकार किया। यह तलाक प्रक्रिया दो साल से अधिक समय तक चली। अक्टूबर २०२३ में शालिनी ने आपसी सहमति के तहत अपने आरोप वापस ले लिए। अंततः नवंबर २०२३ में अदालत ने दोनों को तलाक की मंजूरी दे दी। अब हनी सिंह और शालिनी दोनों ही अपने-अपने जीवन में आगे बढ़ चुके हैं और अपनी निजी ज़िंदगी को निजी ही रखना पसंद करते हैं।

संजय दत्त और रिया पिल्लई का तलाक

संजय दत्त ने १९९८ में मॉडल रिया पिल्लई से शादी की थी। यह शादी ज्यादा दिनों तक नहीं चली और दोनों ने २००८ में तलाक ले लिया। इसके बाद संजय ने मान्यता से शादी की। सूत्रों के अनुसार, संजय ने रिया को तलाक के समय भारी भरकम गुज़ारा भत्ता दिया, जिसमें बांद्रा के पॉश इलाके में स्थित एक तीन बेडरूम का फ्लैट (लगभग ८ करोड़ रुपये की कीमत का) और एक होंडा सिटी कार शामिल थी। रिया ने भी अपने जीवन में आगे बढ़ते हुए टेनिस खिलाड़ी लिएंडर पेस से शादी की, जिनसे उन्हें एक बेटी भी है। संजय दत्त लंबे समय तक रिया के खर्चों की देखभाल करते रहे, जिसमें उनके क्रेडिट कार्ड बिल, मोबाइल बिल और कार की किश्तें शामिल थीं। संजय और रिया की कोई संतान नहीं है।

आलू-पनीर मसाला पराठा

सामग्रीः
उबले आलू - २
पनीर - ½ कप (कद्दूकस किया हुआ)
हरी मिर्च - १ (बारीक कटी हुई)
धनिया पत्ता - २ बड़े चम्मच
गरम मसाला - ½ छोटा चम्मच
लाल मिर्च पाउडर - ½ छोटा चम्मच
नमक - स्वादानुसार
आटा - २ कप

विधिः आटे को पानी से गूंधकर तैयार करें। आलू, पनीर, हरी मिर्च, धनिया, नमक और मसाले मिलाकर स्टफिंग तैयार करें। आटे की लोई में स्टफिंग भरें और पराठा बेल लें। तवे पर घी लगाकर सेकें और गरमा-गरम परोसें।

मिक्स वेज पुलाव

सामग्रीः
बासमती चावल - १ कप
गाजर - १ (बारीक कटी)
बीन्स - १०-१२ (कटी हुई)
मटर - ½ कप
प्याज - १ (बारीक कटा)
टमाटर - १ (बारीक कटा)
हरी मिर्च - १ (लंबाई में कटी)
तेजपत्ता - १, लौंग - २
जीरा - १ छोटा चम्मच
दालचीनी - १ टुकड़ा
नमक - स्वादानुसार
तेल / घी - २ टेबलस्पून
पानी - २ कप
हरा धनिया - सजाने के लिए

विधिः चावल को २०-२५ मिनट के लिए धोकर भिगो दें। प्रेशर कुकर में तेल या घी गरम करें। उसमें जीरा, तेजपत्ता, लौंग और दालचीनी डालें। अब कटा प्याज डालें और सुनहरा होने तक भूनें। टमाटर और हरी मिर्च डालकर पकाएँ जब तक टमाटर गल न जाएं। अब सारी सब्जियाँ डालकर २-३ मिनट तक भूनें। भीगे हुए चावल छानकर डालें और हल्का सा चलाएँ। नमक डालें और २ कप पानी मिलाएँ। कुकर बंद करें और २ सीटी आने तक पकाएँ। भाप निकलने पर धीरे से चावल को चलाएँ, ऊपर से हरा धनिया डालें।

ब्रेड पकोड़ा चाट

सामग्रीः
ब्रेड स्लाइस - 4, बेसन - 1 कप
हरी मिर्च - १ (बारीक कटी हुई)
अदरक - ½ छोटा चम्मच (कद्दूकस किया)
नमक - स्वादानुसार
लाल मिर्च पाउडर - ½ छोटा चम्मच
चाट मसाला - ½ छोटा चम्मच
हरी चटनी - २ बड़े चम्मच
मीठी इमली चटनी - २ बड़े चम्मच
दही - ½ कप, तेल - तलने के लिए

विधिः ब्रेड को तिकोने आकार में काट लें। बेसन, नमक, लाल मिर्च, हरी मिर्च और अदरक मिलाकर गाढ़ा घोल बना लें। ब्रेड के टुकड़ों को घोल में डुबोकर गरम तेल में सुनहरा तल लें। तले हुए पकोड़ों को प्लेट में रखें, ऊपर से दही, हरी चटनी, मीठी चटनी और चाट मसाला डालें। कुरकुरी सेव डालकर परोसें।

पापड़ी चाट

सामग्रीः
मैदा - १ कप
घी - २ चम्मच
नमक - ½ चम्मच
पानी - जरूरत के अनुसार
दही - १ कप
उबले आलू - १ (कटा हुआ)
इमली की चटनी - ½ कप
हरी चटनी - ½ कप
भुना जीरा - १ चम्मच
लाल मिर्च पाउडर - ½ चम्मच
विधिः

मैदा, घी और नमक मिलाकर टाइट आटा गूंथ लें और छोटी-छोटी पापड़ी बेलकर तल लें। एक प्लेट में पापड़ी रखें, ऊपर से आलू, दही और चटनी डालें। मसाले डालकर सर्व करें।

दूधी चना दाल की सब्ज़ी

सामग्रीः
सामग्री मात्रा
दूधी २ कप (छोटे टुकड़ों में कटी)
चना दाल ½ कप (भीगी हुई)
टमाटर १ (कटा हुआ)
हरी मिर्च १ (कटी हुई)
अदरक १ छोटा चम्मच (कद्दूकस)
हल्दी पाउडर ¼ छोटा चम्मच
धनिया पाउडर १ छोटा चम्मच
लाल मिर्च पाउडर ½ छोटा चम्मच (वैकल्पिक)
हींग एक चुटकी
जीरा ½ छोटा चम्मच
नमक स्वादानुसार
हरा धनिया सजावट के लिए
तेल / घी १.५ टेबलस्पून
पानी लगभग १ कप

विधिः चरण १ः दाल और लौकी की तैयारी चना दाल को साफ करके ३० मिनट पानी में भिगो दें।लौकी को छीलकर छोटे टुकड़ों में काट लें। एक प्रेशर कुकर में तेल गरम करें। उसमें जीरा और हींग डालें। जब जीरा चटकने लगे तो अदरक और हरी मिर्च डालें। अब कटे हुए टमाटर डालें और २ मिनट तक पकाएँ। मसाले (हल्दी, धनिया पाउडर, लाल मिर्च पाउडर) डालें और अच्छी तरह भूनें। भीगी हुई चना दाल डालें, १ मिनट चला धर्म हुई लौकी और नमक डालें। लगभग १ कप पानी डालें और कुकर बंद करें।

मीडियम आंच पर २-३ सीटी आने तक पकाएँ। कुकर का प्रेशर निकलने के बाद ढक्कन खोलें। अगर सब्ज़ी ज़्यादा गाढ़ी लगे तो थोड़ा पानी और मिलाकर २-३ मिनट तक उबालें। ऊपर से हरा धनिया डालें।

सीईटीए के चलते ब्रिटेन को निर्यात में ७०% वृद्धि के अनुमान के साथ भारत का समुद्री खाद्य उद्योग नई ऊचांइयों पर

PIB Delhi

२४ जुलाई २०२५ को व्यापक आर्थिक और व्यापार समझौते (सीईटीए) पर दस्तखत के साथ भारत और ब्रिटेन के आर्थिक संबंधों ने एक अहम पड़ाव हासिल किया। इस समझौते को प्रधान मंत्री श्री नरेंद्र मोदी और ब्रिटेन के प्रधानमंत्री सर कीर स्टार्मर की मौजूदगी में औपचारिक रूप दिया गया और भारत के वाणिज्य और उद्योग मंत्री श्री पीयूष गोयल और ब्रिटेन के व्यापार और वाणिज्य मंत्री श्री जोनाथन रेनॉल्ड्स द्वारा आधिकारिक रूप से हस्ताक्षर किए गए।

सीईटीए ९९% टैरिफ लाइनों पर बिना किसी शुल्क के पहुँच प्रदान करता है और प्रमुख सेवा क्षेत्रों के अवसर भी खोलता है। खासकर, समुद्री क्षेत्र के लिए, यह समझौता समुद्री खाद्य उत्पादों की एक बड़ी श्रृंखला पर आयात शुल्क भी हटाता है, जिससे ब्रिटेन के बाजार में भारतीय निर्यातकों की प्रतिस्पर्धात्मकता बढ़ती है। इससे विशेष रूप से झींगा, फ्रोजन मछली और मूल्यवर्धित समुद्री उत्पादों के निर्यात को लाभ होने की उम्मीद है, जिससे कपड़ा, चमड़ा और रत्न एवं आभूषण जैसे श्रम-प्रधान क्षेत्रों के साथ-साथ भारत के प्रमुख समुद्री खाद्य गंतव्यों में से एक में, उसकी मौजूदगी बढ़ेगी।

भारत द्वारा ब्रिटेन को किए जाने वाले प्रमुख समुद्री खाद्य निर्यातों में मौजूदा वक्त में वन्नामेई झींगा (लिटोपेनियस वन्नामेई), फ्रोजन स्क्विड, झींगा मछली, फ्रोजन पॉम्फ्रेट और ब्लैक टाइगर झींगा शामिल हैं। इन सभी को सीईटीए की शुल्क-मुक्त पहुँच के तहत और अधिक बाजार की हिस्सेदारी मिलने की उम्मीद है।

भारत-ब्रिटेन व्यापक आर्थिक और व्यापार समझौते (सीईटीए) के तहत, यूके टैरिफ अनुसूची श्रेणियों 'ए' के अंतर्गत आने वाली सभी मछलियां और मत्स्य पालन वस्तुओं को अब समझौते के लागू होने की तिथि से १००% शुल्क-मुक्त पहुँच प्राप्त होगी। इन उत्पादों पर पहले ०% से २१.५% तक का शुल्क लगता था, जो अब हटा दिया गया है। इससे ब्रिटेन के बाजार में लागत प्रतिस्पर्धात्मकता में काफी

सीईटीए ने ब्रिटेन में प्रवेश के लिए भारतीय झींगा, स्क्विड, लॉबस्टर आदि पर शुल्क खत्म कर दिया

एचएस कोड ०३ः मछली, क्रस्टेशियन, मोलस्क और अन्य जलीय अकशेरुकी (जैसे, झींगा, ट्यूना, मैकेरल, सार्डिन, स्क्विड, केकड़ा, कटलफिश, फ्रोजन पॉम्फ्रेट, लॉबस्टर)

एचएस कोड ०५ः मूंगा, कौड़ी, आर्टेमिया, आदि।

एचएस कोड १५ः मछली के तेल और समुद्री वसा

एचएस कोड १६०३/१६०४/१६०५ः तैयार या संरक्षित समुद्री भोजन, कैवियार, अर्क और रस

एचएस कोड २३ः मछली का भोजन, मछली और झींगा का चारा, और पशु चारे में प्रयुक्त अवशेष

एचएस कोड ९५ः मछली पकड़ने का सामान (छड़, हुक, रील, आदि)

सुधार हुआ है। हालाँकि, एचएस १६०१ (सॉसेज और इसी तरह की वस्तुएं) के तहत आने वाले उत्पाद स्टेजिंग श्रेणी 'यू' के तहत आते हैं और उन्हें कोई विशेष सुविधा नहीं मिलती है।

२०२४-२५ में भारत का कुल समुद्री खाद्य निर्यात ७.३८ अरब डॉलर (६०,५२३ करोड़ रुपए) तक पहुँच गया, जो १.७८ मिलियन मीट्रिक टन के बराबर था। ४.८८ अरब डॉलर की आय और ६६% हिस्सेदारी के साथ फ्रोजन झींगा सबसे बड़ा निर्यात बना रहा। विशेष रूप से यूके को समुद्री निर्यात १०४ मिलियन डॉ

लर (८७९ करोड़ रुपए) का था, जिसमें अकेले फ्रोजन झींगा का योगदान ८० मिलियन डॉलर (७७%) था। हालाँकि, यूके के ५.४ अरब डॉलर के समुद्री खाद्य आयात बाजार में, भारत की हिस्सेदारी महज़ २.२५% है। अब सीईटीए लागू होने के साथ, उद्योग जगत का अनुमान है कि आने वाले सालों में ब्रिटेन को समुद्री निर्यात में ७०% की वृद्धि होगी।

मत्स्य पालन क्षेत्र करीब २८ मिलियन भारतीयों की आजीविका में मददगार साबित हो रहा है और वैश्विक मछली उत्पादन में लगभग ८% का योगदान देता है। २०१४-१५ और २०२४-२५ के बीच, भारत का समुद्री खाद्य निर्यात, १०.५१ लाख मीट्रिक टन से बढ़कर

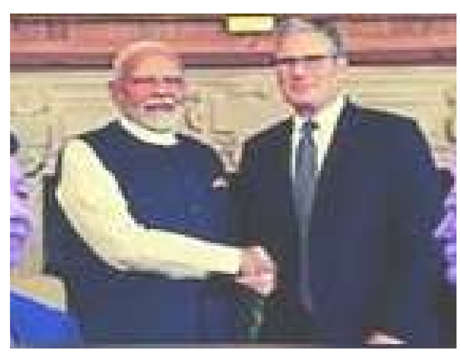

१६.८५ लाख मीट्रिक टन (६०% वृद्धि) हो गया, जबकि इसका मूल्य ३३,४४१.६१ करोड़ रुपए से बढ़कर ६२,४०८ करोड़ रुपए हो गया

(८८% वृद्धि)। निर्यात गंतव्यों की संख्या भी १०० से बढ़कर १३० देशों तक हो गई, क्योंकि मूल्य वर्धित उत्पादों का निर्यात, तिगुना बढ़कर ७,६६६.३८ करोड़ रुपए हो गया, जोकि उच्च-स्तरीय वैश्विक बाजारों की ओर बदलाव का संकेत है। आंध्र प्रदेश, केरल, महाराष्ट्र, तमिलनाडु और गुजरात जैसे तटीय राज्य, जो पहले से ही समुद्री खाद्य निर्यात में बड़े खिलाड़ी हैं, सीईटीए का लाभ उठा सकते हैं। ब्रिटेन के स्वच्छता और फाइटोसैनिटरी (एसपीएस) मानकों को पूरा करने के लिए लक्षित प्रयासों के साथ, ये राज्य अपने निर्यात का दायरा और अंतर्राष्ट्रीय मानदंडों के अनुपालन को बढ़ा सकते हैं।

भारत-यूके सीईटीए न केवल एक प्रीमियम बाज़ार तक शुल्क-मुक्त पहुँच प्रदान करने के संदर्भ में भारत के मत्स्य पालन क्षेत्र के लिए एक महत्वपूर्ण मोड़ है, बल्कि तटीय आजीविका को बढ़ावा देकर, उद्योग के राजस्व में वृद्धि करके, और उच्च-गुणवत्ता वाले, टिकाऊ समुद्री खाद्य के एक विश्वसनीय आपूर्तिकर्ता के रूप में भारत की प्रतिष्ठा को मज़बूत करने में भी इसकी अहम भूमिका रहेगी। मछुआरों, प्रसंस्करणकर्ताओं और निर्यातकों, सभी के लिए, यह एक बड़े वैश्विक मंच पर कदम रखने का एक अनूठा मौका है। यह समझौता सतत् समुद्री व्यापार में वैश्विक अग्रणी बनने के भारत के व्यापक लक्ष्य में सार्थक योगदान देता है।

भारतीय समुद्री खाद्य अब वियतनाम और सिंगापुर जैसे देशों के बराबर प्रतिस्पर्धा कर रहे हैं, जो पहले से ही ब्रिटेन के साथ मुक्त व्यापार समझौतों (एफटीए), क्रमशः यूनाइटेड किंगडम-वियतनाम मुक्त व्यापार समझौता (यूके-वीएफटीए) और ब्रिटेन-सिंगापुर मुक्त व्यापार समझौता (यूके-एसएफटीए) से लाभान्वित हैं। इससे प्रतिस्पर्धा का स्तर समान हो जाता है और टैरिफ संबंधी उन नुकसानों को दूर किया जा सकता है, जिनका सामना भारतीय निर्यातकों को पहले, खासकर झींगा और मूल्यवर्धित वस्तुओं जैसे उच्च मूल्य वाले उत्पादों के लिए करना पड़ता था। भारत की विशाल उत्पादन क्षमता, कुशल जनशक्ति और पहुंच की बेहतर प्रणालियों के साथ, सीईटीए भारतीय निर्यातकों को ब्रिटेन के बाजार में एक बड़ा हिस्सा हासिल करने और अमेरिका तथा चीन जैसे पारंपरिक साझेदारों से आगे बढ़कर विविधता लाने में सक्षम बनाता है।

'बीमा सखी योजना' से लखपति दीदी मिशन को बल मिलेगा, १५ अगस्त तक लखपति दीदियों की संख्या २ करोड़ होगी- श्री शिवराज सिंह चौहान

PIB Delhi

केंद्रीय ग्रामीण विकास और कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने 'बीमा सखी योजना' को लेकर एक वक्तव्य जारी किया है। वक्तव्य में उन्होंने कहा कि 'प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में 'बीमा सखी योजना' की ऐतिहासिक शुरुआत हुई है। यह योजना न केवल महिला सशक्तिकरण, बल्कि ग्रामीण भारत और अर्ध शहरी क्षेत्रों को आर्थिक सुरक्षा मुहैया कराने की दिशा में एक उल्लेखनीय कदम है। केंद्र सरकार, देश की प्रत्येक महिला को आत्मनिर्भर और आर्थिक रूप से मजबूत बनाने के लिए संकल्पित है।'

केंद्रीय मंत्री श्री चौहान ने कहा कि केंद्रीय ग्रामीण विकास मंत्रालय ने भारत सरकार के मिशन '२०४७ तक सभी के लिए बीमा' को साकार करने हेतु भारतीय

जीवन बीमा निगम (LIC) के साथ महत्वपूर्ण साझेदारी की है। राष्ट्रीय आजीविका मिशन वित्तीय समावेशन पहल के अंतर्गत इस योजना के तहत, देशभर की प्रशिक्षित स्वयं सहायता समूह (SHG) की महिलाओं को 'बीमा सखी' के रूप में ग्राम पंचायत स्तर पर नियुक्त किया जाएगा।

श्री शिवराज सिंह ने कहा कि 'बीमा सखी योजना, महिला उद्यमिता और वित्तीय आज़ादी का मजबूत माध्यम है। यह कदम प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के 'आत्मनिर्भर भारत' के विजन को साकार करने की हमारी प्रतिबद्धता दर्शाता है।' केंद्रीय मंत्री ने बताया कि ग्रामीण महिलाओं को आर्थिक रूप से सशक्त बनाने के उद्देश्य से ही इस योजना की शुरुआत की गई है। 'बीमा सखी' बनकर महिलाएं अब उद्यमिता एवं आय के नए अवसर प्राप्त कर रही हैं, जिससे SDG ५ (जेंडर समानता) के लक्ष्यों और 'लखपति दीदी मिशन' को बल मिलेगा। उन्होंने बताया कि १५ अगस्त तक देश में लखपति दीदियों की संख्या २ करोड़ हो जाएगी।

जागरूकता बैठक सारकोमा को दूर करने के लिए प्रारंभिक पहचान, विशेषज्ञ देखभाल और स्थायी मानव इच्छा के महत्व को रेखांकित करती है

PIB Mumbai

सारकोमा जागरूकता माह की मान्यता में, टाटा मेमोरियल सेंटर की एक प्रमुख इकाई, एडवांस्ड सेंटर फॉर ट्रीटमेंट, रिसर्च एंड एजुकेशन इन कैंसर (एसीटीआरईसी) ने २६ जुलाई, २०२५ (शनिवार) को एक प्रभावशाली सारकोमा जागरूकता बैठक की मेजबानी की। सेंट जूड इंडिया चाइल्ड केयर सेंटर्स के सहयोग से आयोजित इस कार्यक्रम का शीर्षक 'लाइफ - लिंब - फंक्शन' है, जो सारकोमा देखभाल में किए गए कदमों और कैंसर के इस दुर्लभ रूप से प्रभावित लोगों की अटूट शक्ति की एक शक्तिशाली याद दिलाता है। पिछले कुछ वर्षों में ACTREC ने सरकोमा रोगियों के लिए व्यापक हड्डी और नरम ऊतक सेवा शुरू की है।

रोगियों, उत्तरजीवियों और सहायता समूहों को सूचित करने, प्रेरित करने और एकजुट करने के लिए डिज़ाइन किया गया, इस बैठक में विशेष सारकोमा उपचार, दीर्घकालिक उत्तरजीविता और रोगियों और देखभाल करने वालों दोनों के सामने आने वाली भावनात्मक यात्राओं पर गहन चर्चा हुई। सबसे अधिक चलने वाले क्षणों में सरकोमा बचे लोगों की व्यक्तिगत गवाही थी, जिन्होंने लचीलापन, वसूली और उपलब्धि के अपने अनुभव साझा किए। इन कहानियों ने न केवल मानव आत्मा की ताकत को उजागर किया, बल्कि वर्तमान में उपचार को नेविगेट करने वाले अन्य लोगों के लिए आशा की किरण भी पेश की।

एक प्रतीकात्मक 'वॉक फॉर लाइफ' दिन का एक आकर्षण था, जो ताकत और एकजुटता के एकीकृत प्रदर्शन में बचे लोगों, चिकित्सा पेशेवरों और समर्थकों को एक साथ लाता था। यह उनकी लड़ाई के बीच में उन लोगों के लिए समुदाय और प्रोत्साहन की एक मार्मिक अभिव्यक्ति थी।

डॉ. नवीन खत्री, उप निदेशक, सीआरसी, एसीटीआरईसी ने स्वागत भाषण दिया। सारकोमा विशेषज्ञ डॉ. आशीष गुलिया (निदेशक, एचबीसीएचआरसी, न्यू चंडीगढ़) और डॉ. मनीष प्रुथी (प्रोफेसर, आर्थोपेडिक ऑन्कोलॉजी, एसीटीआरईसी) ने सारकोमा उपचार और देखभाल के प्रमुख पहलुओं पर प्रस्तुतियां दीं। ऑन्कोलॉजिस्ट, देखभाल करने वालों, दाताओं और बचे लोगों की विशेषता वाली एक पैनल चर्चा ने उपचार बाधाओं पर काबू पाने और सरकोमा के बाद जीवन के प्रबंधन में मूल्यवान अंतर्दृष्टि प्रदान की।

टाटा मेमोरियल सेंटर में ऑर्थोपेडिक ऑन्कोलॉजी यूनिट लंबे समय से भारत में सारकोमा जागरूकता के लिए एक चैंपियन रही है। अंग-निस्तारण उपचार को आगे बढ़ाने में यह काम रोगी के परिणामों और जीवन की गुणवत्ता में काफी सुधार हुआ है, जिससे यह दुर्लभ कैंसर कैसे संपर्क किया जाता है। जागरूकता कार्यक्रम के सह-आयोजक सेंट जूड इंडिया चाइल्ड केयर सेंटर्स द्वारा उपचार के माध्यम से परिवारों को सहायता प्रदान करने में निभाई गई महत्वपूर्ण भूमिका को भी स्वीकार किया गया।

सिर्फ एक चिकित्सा सम्मेलन से अधिक, सारकोमा जागरूकता मीट एक हार्दिक सभा थी जो शिक्षित, सशक्त और जुड़ी हुई थी। इसने शुरुआती पहचान, विशेषज्ञ देखभाल और स्थायी मानव इच्छाशक्ति को दूर करने के महत्व को रेखांकित किया। जैसा कि ACTREC और TMC सारकोमा देखभाल में प्रभारी का नेतृत्व करना जारी रखते हैं, संदेश स्पष्ट थाः समर्थन और जागरूकता के साथ, किसी को भी अकेले सरकोमा का सामना नहीं करना पड़ता है।

भव्य गुजरात मॉडलः चर्चा में शामिल लोगों ने कारीगरों की सहभागिता से लेकर निर्मित विरासत के अनुकूल पुनः उपयोग तक समुदाय-केंद्रित प्रथाओं को साझा किया।

शेखावाटी विरासतः निजी विरासत मालिकों और पुनर्स्थापना ढांचे के लिए चुनौतियों और प्रोत्साहनों पर चर्चा की गई।

पाककला पर्यटनः प्रोफेसर पुष्पेश पंत और प्रसिद्ध शेफ के साथ, सत्र में भोजन को एक सांस्कृतिक कलाकृति और कम उपयोग की जाने वाली पर्यटन संपत्ति के रूप में पेश किया गया।

दोपहर का पारंपरिक गुजराती भोजन - शेफ प्रीतेश राउत ने 'बापोर नु भोजन' तैयार किया जो गुजरात की पाक विरासत की कहानियां बताता है।

केस स्टडी - डॉ. अमिता सिन्हा ने चंपानेर-

पीएचडीसीसीआई के १४वें अंतर्राष्ट्रीय विरासत पर्यटन सम्मेलन में समुदाय-संचालित सांस्कृतिक पर्यटन और नीतिगत नवाचार का आह्वान

PIB Delhi

वडोदरा के लक्ष्मी विला पैलेस की भव्य पृष्ठ भूमि में, पीएचडी चैंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री (पीएचडीसीसीआई) ने २५ जुलाई २०२५ को केंद्रीय पर्यटन मंत्रालय, गुजरात पर्यटन, दिल्ली पर्यटन, इंडिगो और आईआरसीटीसी के सहयोग से अपना १४वां अंतर्राष्ट्रीय विरासत पर्यटन सम्मेलन आयोजित किया। '.खयाल विरासत का' विषय पर आधारित यह सम्मेलन विरासत-आधारित पर्यटन के क्षेत्र में संवाद, कार्रवाई और वकालत के लिए एक जीवंत मंच के रूप में काम किया। इस सम्मेलन में नीति निर्माताओं, गणमान्य हस्तियों, राजनयिकों, संरक्षण वास्तुकारों, पर्यटन पेशेवरों, खाद्य इतिहासकारों और सांस्कृतिक संरक्षकों की एक प्रतिष्ठित सभा आयोजित की गई, जिसमें आर्थिक पुनरुद्धार, सामुदायिक विकास और सांस्कृतिक निरंतरता के लिए भारत की समृद्ध विरासत का लाभ उठाने पर विचार-विमर्श किया गया। कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए, गुजरात सरकार के पर्यटन, नागरिक उड्डयन, देवस्थानम प्रबंधन एवं तीर्थयात्रा सचिव श्री राजेंद्र कुमार (आईएएस) ने समावेशी विरासत पर्यटन के लिए गुजरात के सक्रिय दृष्टिकोण पर जोर डालते हुए कहा, 'हम न केवल स्मारकों का जीर्णोद्धार कर रहे हैं, बल्कि नौकरियों, बुनियादी ढांचे और सांस्कृतिक गौरव के माध्यम से स्थानीय समुदायों को प्रत्यक्ष लाभ भी सुनिश्चित कर रहे हैं।'

वडोदरा की शाही विरासत का प्रतिनिधित्व करते हुए, बड़ौदा के महाराजा समरजीतसिंह गायकवाड़ ने विरासत संरक्षण में प्रासंगिकता के महत्व पर जोर

दिया। उन्होंने कहा, 'विरासत को केवल पुरानी यादों के माध्यम से नहीं, बल्कि अगली पीढ़ियों को इसके साथ जोड़ते हुए जीवित रखा जाना चाहिए।'

भारत पर्यटन मुंबई के क्षेत्रीय निदेशक श्री मोहम्मद फारूक ने स्वदेश दर्शन २.० और प्रसाद जैसी प्रमुख योजनाओं के माध्यम से पर्यटन मंत्रालय की प्रतिबद्धता पर प्रकाश डाला, जो व्यंजनों, लोककथाओं, शिल्प और त्योहारों के माध्यम से पर्यटन स्थलों को जोड़ती हैं। पीएचडीसीसीआई की पर्यटन समिति के सह-अध्यक्ष श्री राजन सहगल ने मुख्य भाषण देते हुए कहा, 'विरासत पर्यटन पहचान, अर्थव्यवस्था और सशक्तिकरण से जुड़ा है। हमारा उद्देश्य नीतिगत नवाचार को गति देना और सार्वजनिक-निजी भागीदारी को बढ़ावा देना है।'

इस कार्यक्रम में महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय के छात्रों ने औपचारिक सरस्वती वंदना के जरिए सांस्कृतिक माहौल तैयार किया। इसके बाद पीएचडीसीसीआई-केपीएमजी हेरिटेज टूरिज्म रिपोर्ट का लोकार्पण किया गया, जिसमें विरासत संपत्तियों के पुनरुद्धार में सार्वजनिक निजी भागीदारी (पीपीपी) की भूमिका पर जोर दिया गया।

मुख्य सत्र और मुख्य अंशः

पावागढ़ प्रस्तुत किया जिसमें सामुदायिक पर्यटन और यूनेस्को साइट पुनर्स्थापन पर जोर दिया गया।

सांस्कृतिक संरक्षक के रूप में महिलाएंः राधिकाराजे गायकवाड़ और कादम्बरीदेवी जडेजा ने महिलाओं के नेतृत्व वाले पर्यटन उपक्रमों के लिए समर्थन का आग्रह किया।

वास्तुकला एवं कहानी-वाचनः विरासत स्थलों के प्रति युवाओं को आकर्षित करने के लिए प्रौद्योगिकी और समावेशी कथाओं के उपयोग की वकालत की गई।

हेरिटेज परिवहनः विंटेज गतिशीलता को एक गतिशील पर्यटन अनुभव के रूप में रेखांकित किया गया तथा पुनर्स्थापना अनुदानों का आह्वान किया गया।

सम्मेलन में २५ से अधिक बी२बी बैठकें भी शामिल थीं, जिनमें पर्यटन बोर्ड, आतिथ्य क्षेत्र के दिग्गजों और सांस्कृतिक उद्यमियों को आपस में जोड़ते हुए विभिन्न क्षेत्रों में सहयोग की संभावनाएं तलाशी गईं। यह सम्मेलन मान फ्लीट पार्टनर्स, एडीटीओआई, एफएचआरएआई, एचटीए गुजरात, आईएटीओ, टीएआई, वीटीएए और पीएचडीसीसीआई वार्षिक कॉर्पोरेट साझेदारों के सहयोग से आयोजित किया गया, जिसमें मैनकाइंड फार्मा, केएलजे रिसोर्सेज, यशोदा हॉस्पिटल्स, जेके टायर और अन्य शामिल रहे।

मेष राशि

अगस्त की शुरुआत मेष राशि के लिए सकारात्मक संकेत लेकर आ रही है। पहले दो सप्ताह तक ग्रहों की स्थिति अनुकूल रहेगी, जिससे आपके कई लंबित काम पूरे हो सकते हैं। यदि आप भूमि-भवन, करियर या व्यापार को लेकर तनाव में थे, तो अब समाधान की उम्मीद बन रही है। पारिवारिक रिश्तों में प्रेम और सहयोग बना रहेगा। प्रेम जीवन भी सुखद रहेगा – साथी के साथ समय बिताने के कई अच्छे मौके मिलेंगे। अविवाहित लोगों के लिए नए संबंध बनने के योग बन रहे हैं। शिक्षा से जुड़े जातकों को इस माह अच्छे अवसर मिलेंगे और मेहनत का उचित फल मिलेगा। माह का मध्य थोड़ा संतुलन मांगता है। स्वास्थ्य, संबंध और आर्थिक प्रबंधन, तीनों ही क्षेत्रों में सावधानी रखें। व्यवसायियों को माह के उत्तरार्ध में विशेष सतर्कता बरतनी होगी। कोई भी निवेश जल्दबाज़ी में न करें, वरना पैसा अटक सकता है। करियर और व्यवसाय में प्रतियोगिता तेज़ होगी, ऐसे में योजना के साथ आगे बढ़ना आवश्यक होगा।

वृषभ राशि-

अगस्त महीने में वृष राशि के जातकों के जीवन में उतार-चढ़ाव देखने को मिल सकते हैं। करियर और व्यवसाय की दृष्टि से यह समय बहुत अनुकूल नहीं कहा जा सकता। इस दौरान भाग्य से ज़्यादा कर्म पर भरोसा करें। किसी भी योजना में सफलता पाने के लिए आपको मेहनत और लगातार प्रयास करते रहना होगा। कामकाज की मुश्किलों के बीच मानसिक संतुलन बनाए रखना सबसे अहम रहेगा। नौकरीपेशा जातकों को महीने के मध्य में भावुक निर्णयों से बचना चाहिए। कारोबारियों को इस समय किसी नए विस्तार की योजना फिलहाल टाल देनी चाहिए, जब तक कि स्थिति स्पष्ट न हो। शेयर बाज़ार या शॉर्टकट तरीकों से धन कमाने की सोच नुकसान पहुंचा सकती है। उत्तरार्ध में कार्य या ज़िम्मेदारी में अचानक परिवर्तन संभव है। पारिवारिक मामलों में आपको कई बार स्वयं को समझौता करते हुए पाएंगे।

मिथुन राशि-

अगस्त माह मिथुन राशि के लिए कुल मिलाकर शुभता और सौभाग्य लेकर आया है। केवल उत्तरार्ध के कुछ दिन थोड़े चुनौतीपूर्ण हो सकते हैं। इस महीने आप लंबे समय से रुके काम पूरे करने में सफल रहेंगे। कार्यक्षेत्र में आपकी योजना और

समझदारी काम आएगी, और सीनियर-जूनियर दोनों का सहयोग मिलेगा। विरोधी पक्ष कमजोर रहेगा और उनके प्रयास विफल होंगे। व्यवसायियों को कारोबार में अपेक्षित लाभ और प्रगति देखने को मिलेगी। आय के नए स्रोत बन सकते हैं। महीने के मध्य में संपत्ति से जुड़ी कोई योजना फलीभूत हो सकती है, जैसे ज़मीन या घर की खरीद-बिक्री। इस समय आप जीवन की भौतिक सुविधाओं पर भी खर्च कर सकते हैं। उत्तरार्ध में नौकरीपेशा लोगों को उनके काम के लिए सराहना और सम्मान मिलने की संभावना है।

कर्क राशि-

अगस्त महीने की शुरुआत थोड़ी दौड़-भाग और मानसिक तनाव के साथ हो सकती है। किसी भी काम में सफलता पाने के लिए पहले प्रयास में सफलता नहीं मिलेगी, थोड़ा संघर्ष ज़रूरी होगा। इस समय अपने क्रोध और अहंकार पर नियंत्रण रखें। आपकी वाणी और व्यवहार ही आपके काम बना भी सकते हैं और बिगाड़ भी सकते हैं। गलत संगति या भ्रामक सलाह से दूर रहें, खासकर पारिवारिक और प्रेम संबंधों में। माह के दूसरे सप्ताह में यात्रा के योग हैं, जो लाभकारी साबित हो सकती है। प्रभावशाली व्यक्तियों से संपर्क बन सकते हैं। महीने का उत्तरार्ध अपेक्षाकृत अधिक शुभ रहेगा। बेरोज़गार जातकों को रोजगार मिलने के अच्छे अवसर हैं। ज़मीन या घर की खरीद-बिक्री में लाभ होगा।

सिंह राशि-

सिंह राशि वालों , यह महीना आपके खुद को देखने के नज़रिए को बदलने वाला है । अगर आप ज़िंदगी में अटके हुए या स्थिर महसूस कर रहे हैं, तो चीज़ें बदलने वाली हैं। अगर आपको लगता है कि आप मुश्किलों के बावजूद आगे बढ़ते रहे हैं, तो हो सकता है कि आपको अवसरों के नए द्वार मिलें जो आपको अगले कदम उठाने में मदद करें। मुक्ति और आज़ादी, दोनों ही आपके लिए हैं। कुछ

बड़ा बदलाव होने वाला है, और निश्चित रूप से, यह आपके जन्म के मौसम में ब्रह्मांड की ओर से आपको दिया गया उपहार है। यह बदलाव न केवल आपको अपनी तलवारें आराम देने में मदद करेगा, बल्कि आपको अपनी सीमाओं को पार करने और सफलताएँ लाने में भी मदद करेगा।

कन्याः

कन्या , इस महीने आप हाथ में जादू और जादू की छड़ी लेकर आगे बढ़ेंगे । हो सकता है कि आप किसी काम में पूरी तरह डूब गए हों, और यह महीना आपको उन सभी बातों का पुनर्मूल्यांकन करने का मौका देता है जो इतने लंबे समय से आपके मन में थीं। इंतज़ार का समय अब खत्म हो गया है; महीने के अंत तक, आप अवसरों से भरी नई दुनिया की अपनी यात्रा पर निकलने के लिए तैयार होंगे। यह महीना आपको नवंबर से शुरू होने वाले अगले कुछ सालों के लिए तैयार कर रहा है। इसलिए आप जो भी कर रहे हैं, या पुनर्मूल्यांकन कर रहे हैं, आपका जन्म महीना आपके लिए शुभ बदलाव लेकर आएगा।

तुला राशि-

अगस्त आपके लिए बहुत जरूरी आराम स्थान जैसा लगता है। यह आपके लिए वह कदम वापस लेने का समय है, यह आपके लिए पीछे हटने और आत्म-देखभाल को प्राथमिकता देने का समय है, और निश्चित रूप से, यदि आप चाहें तो अपने दिनचर्या में कुछ एरियल योग को शामिल करें - यह आपके दृष्टिकोण का विस्तार करेगा और आपकी आत्मा को पोषण देने के साथ-साथ आपके शरीर को पुनर्जीवित करेगा। यह आपके शरीर के लिए ठीक होने का समय है, हाँ, लेकिन यह आपको अपने आंतरिक ईंधन को भरने और दीर्घकालिक योजनाओं और विज़न की रणनीति बनाने का समय भी दे रहा है। आप चक्रों को समाप्त कर रहे हैं और ऐसे चक्रों में कदम रख रहे हैं जो नए और अपरिचित लगते हैं लेकिन बहुत ही योग्य हैं।

वृश्चिक राशि-

यह महीना आपके लिए कड़ी मेहनत करने और उसे जारी रखने का है, साथ ही अपने और अपने प्रियजनों के जीवन में मातृत्व शक्ति बनने का भी। वृश्चिक , नए बीजों को कोमल पोषण की आवश्यकता होती है। इस महीने अपने अंतर्मन से जुड़ना सबसे महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह न केवल नए द्वार खोलता है, बल्कि आपको यह आकलन करने में भी मदद करता है कि आप किन रास्तों से आगे बढ़ना चाहते हैं। आने वाले महीनों में आपकी समृद्धि में वृद्धि होगी, और अगस्त आपको इसके लिए तैयार करने वाला है।

धनु राशि-

उत्साह और जुड़ाव की गहरी भावना– यही वो चीज़ें हैं जो अगस्त आपके लिए लेकर आएगा, धनु। तो फिर क्या नापसंद है! बस इतना याद रखें कि इस रोमांटिक जीवन और नज़रिए के लिए आपको अभी से योजना बनानी होगी और आगे बढ़ने के अपने तरीके का निष्पक्ष मूल्यांकन करना होगा। अगस्त के तीसरे हफ़्ते में घटनाओं में एक सुखद मोड़ की उम्मीद करें, लेकिन अपनी उपलब्धियों से बहुत ज़्यादा आसक्त होने से बचें। अब से आपका जीवन लगातार कई विकल्पों की एक श्रृंखला है, और आपको इनका सर्वोत्तम उपयोग करने के लिए अपनी पूरी निष्ठा और तत्परता के साथ आगे बढ़ना होगा।

मकर राशि-

मकर राशि के लोग मेहनती, धैर्यवान और लक्ष्य केंद्रित होते हैं। जिस चीज़ की ओर आपका ध्यान आकर्षित हो, उसे तुरंत ग्रहण करें और जो आपको परेशान करती है, उससे दूर रहें। हर लड़ाई लड़ने की ज़रूरत नहीं होगी, चाहे वह आपका ध्यान खींचने के लिए कितनी भी होड़ क्यों न लगाती हो, और हर छोटी-बड़ी बात को नज़रअंदाज़ करने की ज़रूरत नहीं होगी, चाहे वह कितनी भी छोटी क्यों न लगे। यह महीना आपको यह जानने में मदद करता है कि कौन सी चीज़ आपकी आत्मा को सींचती है और कौन सी आपको सोख लेती है, जिससे आपको सचेत रूप से फलने-फूलने में मदद करने का ज्ञान प्राप्त होता है। परिस्थितियों से तालमेल बनाना ही बेहतर रहेगा।

कुंभ राशि-

कुंभ राशि के लोग प्रगतिशील, मानवीय और विचारवान होते हैं। इन्हें परंपरा से अलग सोचने और सामाजिक बदलाव लाने में मज़ा आता है। कुंभ लग्न वाले जातक असामान्य लेकिन दूरदर्शी होते हैं। जुलाई का अधिकांश समय आपके लिए लाभदायक रहेगा। करियर-कारोबार में सफलता और प्रशंसा मिलेगी। योजनाएं सफल होंगी और आय के नए स्रोत बनेंगे। धर्म-कर्म और तीर्थाटन के योग बन सकते हैं। माह के मध्य में बाधाएं आ सकती हैं, जिससे आमदनी प्रभावित होगी, लेकिन तीसरे सप्ताह तक सब कुछ फिर से सामान्य हो जाएगा। उत्तरार्ध में नौकरीपेशा लोगों को प्रशंसा और पुरस्कार मिल सकते हैं। पारिवारिक जीवन सुखमय रहेगा।

मीन राशि-

मीन राशि वालों , आपका अंतर्ज्ञान प्रज्वलित हो सकता है, लेकिन तीव्र ब्रह्मांडीय ऊर्जाओं से आप थोड़ा थका हुआ भी महसूस कर सकते हैं । आपकी रणनीति यही होगी कि आप चीज़ों को सहजता से करें। आगे बढ़ने के लिए अपनी आंतरिक शक्तियों और दृढ़ आत्मविश्वास पर ध्यान केंद्रित करें। आप ऐसे समय में हैं जो पोषण और महत्वाकांक्षा दोनों से भरा है–अपने लक्ष्यों पर अपनी नज़रें गड़ाए रखते हुए अपनी ज़िम्मेदारियों का ध्यान रखने में सक्षम। नियंत्रण और करुणा, दृढ़ संकल्प और धैर्य के बीच संतुलन बनाने का लक्ष्य रखें, और आपको सफलता के लिए आवश्यक सब कुछ मिल जाएगा–बस केंद्रित रहें, अपने मार्ग पर भरोसा रखें, और जो वास्तव में मायने रखता है उसे नज़रअंदाज़ न करें।संबंधों में सामंजस्य बना रहेगा। ■

पातालकोट

धरती पर एक अजूबा

छिंदवाड़ा ज़िले में स्थित पातालकोट क्षेत्र प्राकृतिक संरचना का एक अजूबा है. सतपुड़ा पर्वत श्रेणियों की गोद में बसा यह क्षेत्र भूमि से एक हज़ार से १७०० फुट तक गहराई में बसा हुआ है. इस क्षेत्र में ४० से ज़्यादा मार्ग लोगों की पहुँच से दुर्लभ हैं और वर्षा के मौसम में यह क्षेत्र दुनिया से कट जाता है।

गगनचुंबी इमारतों, सडकों पर फ़र्राटे भरती रंग-बिरंगी-चमचमाती लक्जरी कारों, मोटरगाड़ियों और न जाने कितने ही कल-कारखानों, पलक झपकते ही आसमान में उड़ जाने वाले वायुयानों, समुद्र की गहराइयों में तैरती पनडुब्बियों, बड़े-बड़े स्टीमरों-जहाजों आदि को देख कर किसी के मन में तनिक भी कौतुहल नहीं होता। होना भी नहीं चाहिये, क्योंकि हम उन्हें रोज देख रहे होते हैं, उनमे सफ़र कर रहे होते हैं। यदि आपसे यह कहा जाय कि इस धरती ने नीचे भी यदि कोई मानव बस्ती है, जहाँ के आदिवासीजन हजारों-हजार साल से अपनी आदिम संस्कृति और रीत-रिवाज को लेकर जी रह रहे हैं, जहाँ चारों ओर बीहड जंगल हैं, जहाँ आवागमन के कोई साधन नहीं हैं, जहाँ विषैले जीव जन्तु, हिंसक पशु खुले रुप में विचरण कर रहे हैं, जहाँ दोपहर होने पर ही सूरज की किरणें अंदर झाँक पाती हैं, जहाँ हमेशा धुंध सी छाई रहती है, चरती भैंसों को देखने पर ऐसा प्रतीत है, जैसे कोई काला सा धब्बा चलता-फिरता दिखाई देता हो, सच मानिए ऐसी जगह पर मानव-बस्ती का होना एक गहरा आश्चर्य पैदा करता है।

यदि आपसे यह कहा जाय कि इस धरती ने नीचे भी यदि कोई मानव बस्ती है, जहाँ के आदिवासीजन हजारों-हजार साल से अपनी आदिम संस्कृति और रीत-रिवाज को लेकर जी रह रहे हैं, जहाँ चारों ओर बीहड जंगल हैं, जहाँ आवागमन के कोई साधन नहीं हैं, जहाँ विषैले जीव जन्तु, हिंसक पशु खुले रुप में विचरण कर रहे हैं, जहाँ दोपहर होने पर ही सूरज की किरणें अंदर झाँक पाती हैं, जहाँ हमेशा धुंध सी छाई रहती है, चरती भैंसों को देखने पर ऐसा प्रतीत है, जैसे कोई काला सा धब्बा चलता-फिरता दिखाई देता हो, सच मानिए ऐसी जगह पर मानव-बस्ती का होना एक गहरा आश्चर्य पैदा करता है।

जी हाँ, भारत का हृदय कहलाने वाले मध्यप्रदेश के छिन्दवाड़ा जिले से ६२ किमा तथा

तामिया विकास खंड से महज २३ किमी. की दूरी पर स्थित 'पातालकोट' को देखकर ऊपर लिखी सारी बातें देखी जा सकती है। समुद्र सतह से ३२५० फुट ऊँचाई पर तथा भूतल से १००० से १७०० फुट गराई में यह कोट यानि 'पातालकोट' स्थित है। हमारे पुरा आख्यानों में 'पातालकोट' का जिक्र बार-बार आया है। 'पाताल' कहते ही हमारे मस्तिष्क-पटल पर, एक दृष्य तेजी से उभरता है। लंका नरेश रावण का एक भाई, जिसे अहिरावण के नाम से जाना जाता था, के बारे में पढ़ चुके हैं कि वह पाताल में रहता था। राम-रावण युद्ध के समय उसने राम और लक्ष्मण को सोता हुआ उठाकर पाताल लोक ले गया था, और उनकी बलि चढाना चाहता था, ताकि युद्ध हमेशा-हमेशा के लिए समाप्त हो जाए। इस बात का पता जैसे ही वीर हनुमान को लगता है वे पाताललोक जा पहुँचते हैं। दोनों के बीच भयंकर युद्ध होता है और अहिरावण मारा जाता है। उसके मारे जाने पर हनुमान उन्हें पुनः युद्धभूमि पर ले आते हैं।

पाताल अर्थात अनन्त गहराई वाला स्थान। वैसे तो हमारे धरती के नीचे सात तलों की कल्पना की गई है-अतल, वितल, सतल, रसातल, तलातल, महातल तथा महातल के नीचे पाताल। शब्दकोश में कोट के भी कई अर्थ मिलते हैं- जैसे- दुर्ग, गढ़, प्राचीर, रंगमहल और अँग्रेजी ढँग का एक लिबास जिसे हम कोट कहते है। यहाँ कोट का अर्थ है-चट्टानी दीवारों, दीवारे भी इतनी ऊँची कि आदमी का दर्प चूर-चूर हो जाए। कोट का एक अर्थ होता है-कनात। यदि आप पहाडी की तलहटी में खड़े हैं, तो लगता है जैसे कनातें से घिर गए हैं। कनात की मुड़ेर पर उगे पेड़-पौधे, हवा मे हिचकोले खाती डालियाँ... हाथ हिला-हिला कर कहती है कि हम कितने ऊपर है। यह कनात कहीं-कहीं एक हजार दो सौ फुट, कहीं एक हजार सात सौ पचास फुट, तो कहीं खाइयों के अंतस्थल से तीन हजार सात सौ फुट ऊँची है। उत्तर-पूर्व में बहती नदी की ओर यह कनात नीची होती चली जाती है। कभी-कभी तो यह गाय के खुर की आकृति में दिखाई देती है।

पातालकोट का अंतःक्षेत्र शिखरों और वादियों से आवृत है। पातालकोट में, प्रकृति के इन उपादानों ने, इसे अद्वितीय बना दिया है। दक्षिण में पर्वतीय शिखर इतने ऊँचे होते चले गए हैं कि इनकी ऊँचाई उत्तर-पश्चिम में फैलकर इसकी सीमा बन जाती है। दूसरी ओर घाटियाँ इतनी नीची होती चली गई है कि उसमें झाँककर देखना मुश्किल होता है। यहाँ का अद्भुत नजारा देखकर ऐसा प्रतीत होता है मानो शिखरों और वादियों के बीच होड़ सी लग गई हो। कौन कितने गौरव के साथ ऊँचा हो जाता है और कौन कितनी विनम्रता के साथ झुकता चला जाता है। इस बात के साक्षी हैं यहाँ पर उगे पेड़-पौधे,जो तलहटियों के गर्भ से, शिखरों की फुनगियों तक बिना किसी भेदभाव के फैले हुए हैं। पातालकोट की झुकी हुई चट्टानों से निरंतर पानी का रिसाव होता रहता है। यह पानी रिसता हुआ ऊँचे-ऊँचे आम के वृक्षों के माथे पर टपकता है और फिर छितरते हुए बूँदों के रुप में खोह के आँगन में गिरता रहता है। बारहमासी बरसात में भीगकर तन और मन पुलकित हो उठते है।

अपने इष्ट, देवों के देव महादेव, इनके आराध्य देव हैं। इनके अलावा और भी कई देव हैं जैसे-मढ़ुआदेव, हरदुललाला, पघिर, ग्रामदेवी, खेडापति, भंसासर, चंडीमाई, खेडामाई, घुरलापाट, भीमसेनी, जोगनी, बाघदेवी, मेठोदेवी आदि को पूजते हुए अपनी आस्था की लौ जलाए रहते हैं, वहीं अपनी आदिम संस्कृति, परम्पराओं,

संस्कृति, रीत-रिवाजों, तीज-त्योहारों मे गहरी आस्था लिए शान से अपना जीवन यापन करते हैं। ऐसा नहीं है कि यहाँ अभाव नहीं है। अभाव ही अभाव है, लेकिन वे अपना रोना लेकर किसी के पास नहीं जाते और न ही किसी से शिकवा-शिकायत ही करते हैं। बित्ते भर पेट के गड्ढे को भरने के लिए वनोपज ही इनका मुख्य आधार होता है। पारंपरिक खेती कर ये कोदो- कुटकी, -बाजरा उगा लेते हैं। महुआ इनका प्रिय भोजन है। महुआ के सीजन में ये उसे बीनकर सुखाकर रख लेते हैं और इसकी बनी रोटी बड़े चाव से खाते हैं। महुआ से बनी शराब इन्हें जंगल में टिके रहने का जज्बा बनाए रखती है। यदि बीमार पड गए तो तो भुमका-पड़िहार ही इनका डाक्टर होता है। यदि कोई बाहरी बाधा है तो गंडा-ताबीज बाँधकर इलाज हो जाता है।

शहरी चकाचौंध से कोसों दूर आज भी वे सादगी के साथ जीवन यापन करते हैं। कमर के ईर्द-गिर्द कपडा लपेटे, सिर पर फड़िया बाँधे, हाथ में कुल्हाड़ी अथवा दराती लिए। होठों पर मंद-मंद मुस्कान ओढे ये आज भी देखे जा सकते हैं। विकास के नाम पर करोड़ों-अरबों का खर्चा किया गया, वह रकम कहाँ से आकर चली जाती है, इन्हें पता नहीं चलता और न ही ये किसी के पास शिकायत-शिकवा लेकर जाते हैं। विकास के नाम पर केवल कोट में उतरने के लिए सीढ़ियां बना दी गयी हैं, लेकिन आज भी ये इसका उपयोग न करते हुए अपने बने-बनाए रास्ते-पगडंडियों पर चलते नजर आते हैं। सीढ़ियों पर चलते हुए आप थोड़ी दूर ही जा पाएँगे, लेकिन ये अपने तरीके से चलते हुए सैकड़ों फुट नीचे उतर जाते हैं। हाट-बाजार के दिन ही ये ऊपर आते हैं और इकठ्ठा किया गया वनोपज बेचकर, मिट्टी का तेल तथा नमक आदि लेना नहीं भूलते। जो चीजें जंगल में पैदा नहीं होती, यही उनकी न्यूनतम आवश्यकता है। एक खोज के अनुसार पातालकोट की तलहटी में करीब २० गाँव साँस लेते थे, लेकिन प्राकृतक प्रकोप के चलते वर्तमान समय में अब केवल १२ गाँव ही शेष बचे हैं। एक गाँव में ४-५ अथवा सात-आठ से ज्यादा घर नहीं होते। जिन बारह गाँव में ये रहते हैं, उनके नाम इस प्रकार है- रातेड, चमटीपुर, गुंजाडोंगरी, सहरा, पचगोल, हरकिछार, सूखाभांड, घुरनीमालनी, झिरनपलानी, गैलडुब्बा, घटनलिंग, गुढीछातरी तथा घाना। सभी गाँव के नाम संस्कृति से जुड़े-बसे हैं। भारियाओ के शब्दकोष में इनके अर्थ धरातलीय संरचना, सामाजिक प्रतिष्ठा, उत्पादन विशिष्टता इत्यादि को अपनी संपूर्णता में समेटे हुए है।

ये आदिवासीजन अपने रहने के लिए मिट्टी तथा घास-फूस की झोपड़ियाँ बनाते है। दीवारों पर खड़िया तथा गेरू से पतीक चिह्न उकेरे जाते हैं। हॅसिया-कुल्हाडी तथा लाठी इनके पारंपरिक औजार है। ये मिट्टी के बर्तनों का ही उपयोग करते हैं। ये अपनी धरती को माँ का दर्जा देते हैं। अतः उसके सीने में हल नहीं चलाते। बीज को छिड़ककर ही फसल उगाई जाती है... वनोपज ही उनके जीवन का मुख्य आधार होता है। पातालकोट में उतरने के और चढ़ने के लिए कई रास्ते हैं। रातेड-नचमटीपुर और कारेआम के रास्ते ठीक हैं। रातेड का मागध सबसे सरल मागध है, जहाँ आसानी से पहुँचा जा सकता है। फिर भी सँभलकर चलना होता है। जरा-सी भी लापरवाही किसी बड़ी दुर्घटना को आमंत्रित कर सकती है। पातालकोट के दर्शनीय स्थल में, रातेड, कारेआम, नचमटीपुर, दूधी तथा गायनी नदी का उद्गम स्थल और राजाखोह प्रमुख है। आम के झुरमुट पर्यटकों का मन मोह लेते हैं। आम के झुरमुट में शोर मचाता- कलकल के स्वर निनादित कर बहता सुन्हदर सा झरना, कारेआम का खास आकर्षण है।

रातेड के ऊपरी हिस्से से कारेआम को देखने पर यह ऊँट की कूबड सा दिखाई देता है। राजाखोह पातालकोट का सबसे आकर्षक और दर्शनीय स्थल है। विशाल कटोरे में स्थित, एक विशाल चट्टान के नीचे १०० फुट लंबी तथा २५ फुट चौडी कोत (गुफ़ा) में कम से कम दो सौ लोग आराम से बैठ सकते हैं।

७१वें नेशनल फिल्म अवॉर्ड्स...

७१वें नेशनल अवॉर्ड में बेस्ट एक्टर के लिए शाहरुख खान और विक्रांत मैसी को संयुक्त रूप से अवॉर्ड दिया गया है। शाहरुख को उनकी फिल्म 'जवान' और विक्रांत को '12th फेल' के लिए अवॉर्ड मिला है। 'जवान' एक एक्शन थ्रिलर फिल्म थी। इस फिल्म में शाहरुख डबल रोल में नजर आए थे। वहीं, विक्रांत की फिल्म बायोग्राफिकल ड्रामा थी। ये फिल्म आईपीएस ऑफिसर मनोज कुमार शर्मा और उनकी वाइफ आईआरएस ऑफिसर श्रद्धा जोशी के जीवन से प्रेरित थी।

रानी मुखर्जी के ३० साल के करियर में ये उनका पहला राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार है। उनकी फिल्म 'मिसेज चटर्जी वर्सेस नॉर्वे' सच्ची घटना पर आधारित लीगल ड्रामा है। फिल्म सॉफ्टवेयर इंजीनियर सागरिका चक्रवर्ती की आत्मकथा 'द जर्नी ऑफ ए मदर' से प्रेरित है। आशिमा छिब्बर के डायरेक्शन वाली इस फिल्म में रानी ने सागरिका का रोल निभाया है।

अवॉर्ड जीतने के बाद रानी ने कहा- 'मिसेज चटर्जी वर्सेज नॉर्वे के लिए मेरे करियर का पहला राष्ट्रीय पुरस्कार जीतने पर मैं अभिभूत हूं। ३० साल के करियर में यह मेरा पहला नेशनल अवॉर्ड है। एक एक्टर के तौर पर, मैं भाग्यशाली रही हूं कि मुझे कुछ बेहतरीन फिल्मों में काम करने का मौका मिला और मुझे उनके लिए बहुत प्यार भी मिला। मैं 'मिसेज चटर्जी वर्सेज नॉर्वे' में मेरे काम को सम्मान देने के लिए नेशनल अवॉर्ड जूरी को धन्यवाद देती हूं। मैं इस खुशी को फिल्म की पूरी टीम, मेरे प्रोड्यूसर्स निखिल आडवाणी, मोनिशा और मधु, मेरी डायरेक्टर आशिमा छिब्बर, और उन सभी के साथ बांटना चाहती हूं जिन्होंने इस बेहद खास प्रोजेक्ट पर काम किया। यह फिल्म मातृत्व की ताकत का जश्न मनाती है।

'कटहल-ए जैकफ्रूट मिस्ट्री' को सर्वश्रेष्ठ हिंदी फिल्म का पुरस्कार मिलने पर फिल्म की प्रोड्यूसर एकता कपूर और गुनीत मोंगा ने खुशी जाहिर की है। एकता कपूर ने जीत के बाद अपनी खुशी और आभार जताते हुए कहा, 'मैं इस बड़े सम्मान के लिए ज्यूरी का धन्यवाद करती हूं। हमारे काम और कहानियों की पसंद को पहचान मिलना बेहद सुकून देने वाला है। मैं खुश हूं कि मुझे गुनीत मोंगा, अचिन जैन, बालाजी और नेटफ्लिक्स जैसे शानदार साथी मिले। मैं यह अवॉर्ड अपनी शानदार कास्ट और क्रू के साथ बांटना चाहती हूं, जिन्होंने इस फिल्म को कई तरीकों से संवारने में योगदान दिया।'

वहीं, गुनीत मोंगा ने कहा- 'जब भी भारत के दिल से निकली किसी कहानी को सम्मान मिलता है, तो यह हर उस आवाज की जीत होती है, जिसे सुना जाना चाहिए। ७१वें राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कारों में 'कटहल- ए जैकफ्रूट मिस्ट्री' के लिए सर्वश्रेष्ठ हिंदी फिल्म का पुरस्कार पाकर हम बेहद सम्मानित महसूस कर रहे हैं। इस सम्मान के लिए हम शब्दों से परे आभारी हैं। हमारे प्रतिभाशाली निर्देशक यशोवर्धन मिश्रा और उनके सह-लेखक अशोक मिश्रा को दिल से बधाई, जिन्होंने इतनी धारदार, मौलिक और इंसानियत से भरी कहानी रची।'

बेस्ट सिनेमेटोग्राफी- द केरल स्टोरी

बेस्ट चाइल्ड आर्टिस्ट- सुकृति वेनी (गांधी कथा चेतु), कबीर खंडारे (जिप्सी), त्रिशा तोसार, श्रीनिवास पोकले और भार्गव जगपात (नाल २)

बेस्ट मेल प्लेबैक सिंगर- पीवीएनएस रोहित, तेलुगू (बेबी)

बेस्ट फीमेल प्लेबैक सिंगर- चलेया (जवान), शिल्पा राव

बेस्ट डायलॉग राइटर- दीपक किंगरानी (सिर्फ एक बंदा काफी है)

बेस्ट स्क्रीनप्ले- बेबी (तेलुगू), पार्किंग (तमिल)

नॉन फीचर फिल्म के विनर्स

बेस्ट स्पेशल मेंशन नॉन फीचर फिल्म अवॉर्ड - नेकल (मलयालम)

बेस्ट म्यूजिक नॉन फीचर फिल्म अवॉर्ड- द फर्स्ट फिल्म (हिंदी)

बेस्ट एडिटंग नॉन फीचर फिल्म अवॉर्ड- मूविंग फोकस (इंग्लिश)

बेस्ट साउंड डिजाइन नॉन फीचर फिल्म अवॉर्ड- धुंधगिरी के फूल (हिंदी)

बेस्ट सिनेमेटोग्राफी नॉन फीचर फिल्म अवॉर्ड- लिटिलि विंग्स (तमिल)

बेस्ट डायरेक्टर नॉन फीचर फिल्म अवॉर्ड- पीयूष ठाकुर, द फर्स्ट फिल्म (हिंदी)

बेस्ट शॉर्ट फिल्म नॉन फीचर फिल्म अवॉर्ड- गिद्ध द स्कैवेंगर (हिंदी)

बेस्ट नॉन फीचर फिल्म प्रमोटिंग सोशल कंसर्न अवॉर्ड- द साइलेंट एपिडेमिक (हिंदी)

PIB Delhi

झारखंड की सोहराई कला की स्वदेशी भित्तिचित्र परंपरा, राष्ट्रपति भवन में आयोजित कला उत्सव २०२५ - 'आर्टिस्ट्स इन रेजिडेंस' कार्यक्रम के दूसरे आयोजन में केंद्र बिंदु रही। इस दस दिवसीय रेजिडेंसी कार्यक्रम में भारत की राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मु ने भी अपनी गरिमामय उपस्थिति दर्ज कराई और यह भारत की समृद्ध लोक और आदिवासी कला परंपराओं के उत्सव में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि बनकर उभरी।

राष्ट्रपति ने प्रदर्शनी का अवलोकन किया और कलाकारों से व्यक्तिगत रूप से बातचीत की। उन्होंने अपने संबोधन में, कलाकारों के समर्पण की प्रशंसा करते हुए कहा: 'ये कलाकृतियाँ भारत की आत्मा को दर्शाती हैं - प्रकृति से हमारा जुड़ाव, हमारी पौराणिक कथाएं और हमारा सामुदायिक जीवन। मैं इस बात की बहुत सराहना करती हूं कि आप सभी इन अमूल्य परंपराओं को कैसे संजोए हुए हैं।'

इस अवसर पर, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र (आईजीएनसीए) के सदस्य सचिव डॉ. सच्चिदानंद जोशी, क्षेत्रीय निदेशक डॉ. कुमार संजय झा और आईजीएनसीए क्षेत्रीय केंद्र, रांची की परियोजना सहयोगी श्रीमती सुमेधा सेनगुप्ता उपस्थित थे। सम्मान और परंपरा के प्रतीक स्वरूप, आईजीएनसीए ने राष्ट्रपति को एक पारंपरिक साड़ी भेंट की।

आईजीएनसीए क्षेत्रीय केंद्र, रांची के परियोजना सहायकों - श्रीमती बोलो कुमारी उरांव, श्री प्रभात लिंडा और डॉ. हिमांशु शेखर ने १४ से २४ जुलाई २०२५ तक आयोजित इस कार्यक्रम के लिए कलाकार समूह के साथ समन्वय करने और टीम भागीदारी का प्रबंधन करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

झारखंड के आदिवासी समुदायों में प्रचलित पारंपरिक भित्ति चित्रकला 'सोहराई पेंटिंग' आमतौर पर फसल कटाई और त्योहारों के मौसम में महिलाओं द्वारा बनाई जाती है। प्राकृतिक मिट्टी के रंगों और बांस के ब्रशों का उपयोग करके, कलाकार मिट्टी की दीवारों पर जानवरों, पौधों और ज्यामितीय आकृतियां बनाते हैं - जो कृषि जीवन और आध्यात्मिक मान्यताओं से गहराई से जुड़े होते हैं।

हजारीबाग जिले के दस प्रशंसित सोहराय कलाकार; सुश्री रुदन देवी, सुश्री अनीता देवी, सुश्री सीता कुमारी, सुश्री मालो देवी, सुश्री साजवा देवी, सुश्री पार्वती देवी, सुश्री आशा देवी, सुश्री कदमी देवी, सुश्री मोहिनी देवी और सुश्री रीना देवी ने इस दस दिवसीय रेजिडेंस कार्यक्रम में भाग लिया और दर्शकों के सामने अपनी पारंपरिक कला का प्रदर्शन किया।

कलाकार सुश्री मालो देवी और सुश्री सजवा देवी ने अपनी खुशी व्यक्त करते हुए कहा, 'हमें इस पहल का हिस्सा बनकर बेहद खुशी हो रही है। अपने राज्य की सोहराई कला को प्रस्तुत करने का अनुभव बहुत अच्छा रहा।'

अभी तक गोदना, मिथिला और पारली जैसी अन्य पारंपरिक चित्रकलाओं को राष्ट्रीय स्तर पर जाना जाता था लेकिन अब सोहराई कला को इतना प्रतिष्ठित मंच मिलना झारखंड के लिए गर्व की बात है। इस आयोजन ने झारखंड के पारंपरिक ज्ञान और सांस्कृतिक समृद्धि को भारत के कलात्मक परिदृश्य में अग्रणी स्थान दिलाने में मदद की है। आईजीएनसीए और रांची स्थित इसके क्षेत्रीय केंद्र ने झारखंड के सुदूर गांवों के सोहराई कलाकारों की पहचान, समन्वय और भागीदारी को समर्थन देकर इस सांस्कृतिक पहल में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनके अथक प्रयासों से यह अनूठी आदिवासी कला राष्ट्रीय मंच पर प्रदर्शित हुई और कलाकारों को लंबे समय से प्रतीक्षित पहचान मिली। आईजीएनसीए ऐसे पारंपरिक कला रूपों के उत्थान और संवर्धन के लिए समर्पित भाव से कार्य करता रहा है।

'सोहराई कला भारत की आत्मा है': राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु

कला उत्सव २०२५ के दौरान राष्ट्रपति भवन में चमकी झारखंड की सोहराई कला

कला उत्सव २०२५ के माध्यम से, सोहराई कला को राष्ट्रीय स्तर पर मान्यता मिली, जो झारखंड के आदिवासी समुदायों की चिरस्थायी भावना का जीवंत प्रतीक है। भारत के स्वदेशी कला रूपों को बढ़ावा देने और संरक्षित करने के लिए आईजीएनसीए की प्रतिबद्धता ने यह सुनिश्चित किया कि सोहराई के सांस्कृतिक महत्व और सौंदर्य को देश के सबसे प्रतिष्ठित मंचों में से एक पर सम्मानित किया जाए और इसे खूब प्रचारित कर बढ़ावा दिया जाए।

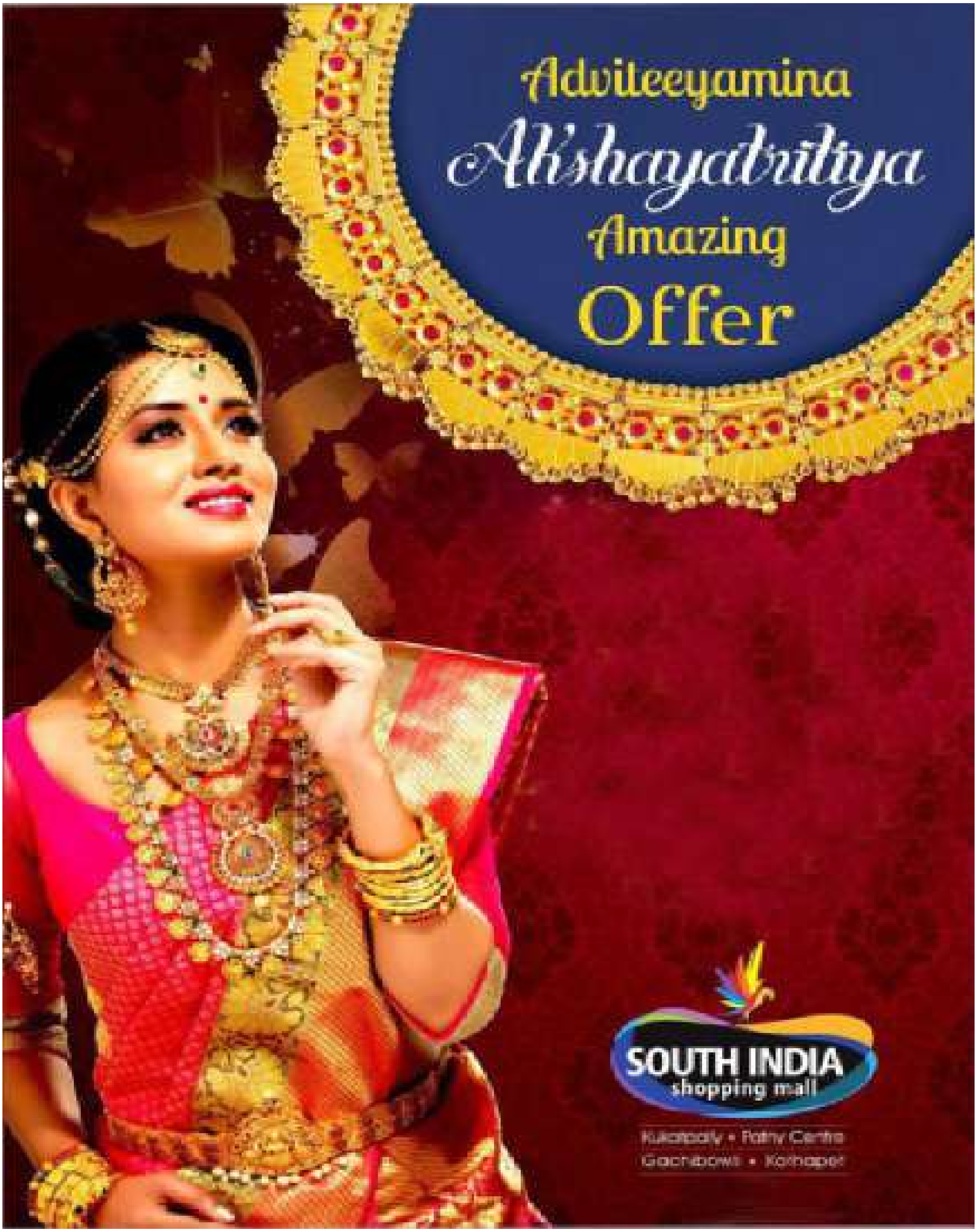
Adviteeyamina
Akshayatritiya
Amazing
Offer
SOUTH INDIA
shopping mall

६८ मानद डॉक्टरेट की डिग्री पानेवाले भारत के इकलौते शिक्षाविद् प्रोफेसर अच्युत सामंत

प्रोफेसर अच्युत सामंत का कीट अगर एक कारपोरेट है तो कीस उसका सामाजिक दायित्व है। कीस तो भारत का वास्तविक शांतिनिकेतन है जहां पर प्रतिवर्ष कुल ४०-४० हजार आदिवासी बच्चे सच्चरित्र और जिम्मेदार नागरिक बनकर तथा स्वावलंबी बनकर अपने-अपने जीवन क्षेत्र में जा रहे हैं। सच तो यह भी है कि अबतक कुल २२ से भी अधिक नोबेल पुरस्कार विजेता कीट-कीस का दौरा कर चुके हैं। विश्व के अनेक राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, मंत्री, राजनेता, राजदूत, राज्यपाल, विधिवेत्ता, फिल्मी हस्तियां, खिलाडी, अभिनेता आदि कीट-कीस का दौरा कर चुके हैं। वहीं २०१५ में कीस को यूएन में विशेष सलाहकार का दर्जा भी मिल चुका है।

जिस अनाथ बालक को कभी दो शाम का भोजन नहीं मिलता था वही बालक आज अपने पुरुषार्थ, त्याग, लगन, सत्यनिष्ठा, सदाचार और कठोर परिश्रम के बल पर दुनिया का महान् शिक्षाविद् बन गया है। वह कोई और नहीं है अपितु प्रोफेसर अच्युत सामंत हैं, ओड़िशा की माटी के लाल। जिसने अपने अदम्य साहस और विश्वास के बल पर मात्र पांच हजार रुपये की अपनी जमा पूंजी से ९० के दशक में राजधानी भुवनेश्वर में कीट (कलिंग इंस्टीट्यूट ऑफ इण्डस्ट्रीयल टेक्नालोजी) तथा कीस (कलिंगा इंस्टीट्यूट ऑफ सोसल साइंसेज) दो शैक्षिक संस्थाएं एक किराये के मकान में खोली वे दोनों शैक्षिक संस्थाएं आज दो डीम्ड विश्वविद्यालय बन चुकी हैं।

एक तरफ कीट में कुल लगभग ४० हजार युवा-युवती उच्च व उत्कृष्ट शिक्षा अर्जित कर रहे हैं तो वहीं कीस में कुल लगभग ४० हजार अनाथ, बेसहारे आदिवासी बच्चे निःशुल्क समस्त आवासीय सुविधाओं के साथ केजी कक्षा से लेकर पीजी कक्षा तक उत्कृष्ट शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं।

प्रोफेसर अच्युत सामंत का कीट अगर एक कारपोरेट है तो कीस उसका सामाजिक दायित्व है। कीस तो भारत का वास्तविक शांतिनिकेतन है जहां पर प्रतिवर्ष कुल ४०-४० हजार आदिवासी बच्चे सच्चरित्र और जिम्मेदार नागरिक बनकर तथा स्वावलंबी बनकर अपने-अपने जीवन क्षेत्र में जा रहे हैं। सच तो यह भी है कि अबतक कुल २२ से भी अधिक नोबेल पुरस्कार विजेता कीट-कीस का दौरा कर चुके हैं। विश्व के अनेक राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, मंत्री, राजनेता, राजदूत, राज्यपाल, विधिवेत्ता, फिल्मी हस्तियां, खिलाडी, अभिनेता आदि कीट-कीस का दौरा कर चुके हैं। वहीं २०१५ में कीस को यूएन में विशेष सलाहकार का दर्जा भी मिल चुका है।

गौरतलब है कि लगभग एक वर्ष के लिए बीजू जनता दल के राज्यसभा सांसद रहे प्रोफेसर अच्युत सामंत ५ वर्षों के लिए कंधमाल संसदीय लोकसभा क्षेत्र से सांसद भी रह चुके हैं। प्रोफेसर अच्युत सामंत का लक्ष्य है कि २०३० तक ओड़िशा के प्रत्येक जिले में कीस की शाखाएं वे खोलेंगे जहां पर निःशुल्क तथा जीवनोपयोगी शिक्षा प्रदानकर आदिवासी समुदाय की गरीबी और भूखमरी को वे समाप्त कर देंगे।

अपनी शैक्षिक पहल कीट-कीस-कीम्स (मेडिकल कॉलेज) तथा अनेकानेक सामाजिक दायित्वों के बदौलत देश-विदेश के नामी विश्वविद्यालयों से प्रोफेसर अच्युत सामंत को अबतक कुल ६८ मानद डॉक्टरेट की डिग्री मिल चुकी है। इसप्रकार कीट-कीस-कीम्स के संस्थापक प्रोफेसर अच्युत सामंत आज की तारीख में भारत के इकलौते ऐसे शिक्षाविद् बन चुके हैं जिनको अबतक कुल ६८ मानद डॉक्टरेट की डिग्री मिल चुकी है। सच्चे गांधीवादी प्रोफेसर अच्युत सामंत जो इसके लिए बहुत-बहुत बधाई।

-अशोक पाण्डेय

कलिंग टेलीविजन ने मनाया अपना ११वां स्थापना दिवस

ओड़िशा के विकास में कलिंग टेलीविजन का योगदान काफी सराहनीय है। समारोह के मुख्यअतिथि ओडिशा सरकार के माननीय कानून मंत्री श्री पृथ्वीराज हरिचंदन ने बताया कि उनका सबसे लोकप्रिय चैनल कलिंग टेलीविजन ही है जिसके संस्थापक महान् शिक्षाविद् प्रोफेसर अच्युत सामंत हैं और जिन्होंने कीट-कीस और कीम्स की स्थापनाकर ओड़िशा का गौरव पूरे विश्व में फैलाया।

स्थानीय क्राउन होटल में कलिंग टेलीविजन ने अपना ११वां स्थापना दिवस मनाया। अवसर पर मुख्य अतिथि के रुप में ओड़िशा सरकार के कानून मंत्री श्री पृथ्वीराज हरिचंदन, मुख्य वक्ता के रुप में न्यायमूर्ति विश्वनाथ रथ चेयरमैन श्री जगन्नाथ रत्नभण्डार जांच कमेटी तथा ओड़िशा सरकार के पूर्व मंत्री तथा वर्तमान में बीजू जनता दल के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष देवी प्रसाद मिश्रा आदि मंचासीन थे। स्वागत भाषण दिया कलिंग टेलीविजन के सीएमडी हिमांशु शेखर खटुआ ने जबकि मुख्य सम्पादक सौम्यजीत पटनायक ने विगत १० सालों के अपने सुखद अनुभव को साझा किया। मुख्य वक्ता के रुप में न्यायमूर्ति विश्वनाथ रथ चेयरमैन श्री जगन्नाथ रत्नभण्डार जांच कमेटी ने कलिंग टेलीविजन की कुल १० सालों की यात्रा को दर्शकोपयोगी तथा ओड़िशा के विकास की सफल यात्रा बताया।

लगभग आधे घण्टे के अपने वक्तव्य में न्यायमूर्ति विश्वनाथ रथ ने बताया कि ओड़िशा का एकमात्र सकारात्मक क्षेत्रीय चैनल कलिंग टेलीविजन ही है जो कहता ठीक है और दिखाता भी ठीक है। चैनल के प्रमुख कार्यक्रमों में इति आलाप की उन्होंने उन्मुक्त कण्ठ से प्रशंसा की। मंचासीन कलिंग टेलीविजन के मुख्य सलाहकार उमापद बोस ने कलिंग टेलीविजन के सभी कार्यक्रमों को ओड़िशा के लोगों के लिए अत्यंत उपयोगी बताया।

पूर्व मंत्री देवी प्रसाद मिश्रा ने बताया कि ओड़िशा के विकास में कलिंग टेलीविजन का योगदान काफी सराहनीय है। समारोह के मुख्यअतिथि ओडिशा सरकार के माननीय कानून मंत्री श्री पृथ्वीराज हरिचंदन ने बताया कि उनका सबसे लोकप्रिय चैनल कलिंग टेलीविजन ही है जिसके संस्थापक महान् शिक्षाविद् प्रोफेसर अच्युत सामंत हैं और जिन्होंने कीट-कीस और कीम्स की स्थापनाकर ओड़िशा का गौरव पूरे विश्व में फैलाया। उन्होंने यह भी बताया कि प्रोफेसर सामंत जैसे महान शिक्षाविद् का ओड़िशा के युवाओं के सम्यक विकास के लिए शिक्षा, स्वास्थ्य, मनोरंजन, विज्ञान, सिनेमा, खेलकूद, कौशल विकास आदि के क्षेत्र में योगदान अभूतपूर्व और अतुलनीय है।

कलिंग टेलीविजन के संस्थापक के साथ-साथ कीट-कीस-कीम्स के संस्थापकमहान् शिक्षाविद् प्रोफेसर अच्युत सामंत ने अपने संबोधन में आमंत्रित सभी के प्रति आभार जताते हुए तथा कलिंग टेलीविजन के कुल ३५० सहयोगियों को साधुवाद देते हुए यह कहा कि वे अपने जन्म से लेकर अबतक न कोई गलत काम किये हैं न ही भविष्य में करेंगे। वे तो सत्यनिष्ठ तथा निःस्वार्थ समाजसेवी हैं। उनके जीवन का मुख्य उद्देश्य ओड़िशा प्रदेश को एक विकसित प्रदेश बनाना है इसीलिए वे ओड़िशा के विकास के लिए आजीवन कार्य कर रहे हैं। अवसर पर कलिंग टेलीविजन के कुल २० मेधावी सहयोगियों को कलिंग टेलीविजन के संस्थापक की ओर से कुल ५०-५० हजार रुपये की कैश राशि, मानपत्र, अंगवस्त्र तथा पुष्पगुच्छ प्रदान कर मुख्य अतिथि ने उन्हें सम्मानित किया। -अशोक पाण्डेय

कीट डीम्ड विश्वविद्यालय ने रचा इतिहासः

वर्ल्ड यूनिवर्सिटी गेम्स २०२५ में भारत की सबसे सफल यूनिवर्सिटी बनी

कीट के पदक विजेताः

- अंकिताः ३००० मीटर स्टीपलचेज - सिल्वर पदक
- प्रवीन चित्रवेलः ट्रिपल जंप - सिल्वर पदक
- सीमनः ५००० मीटर फाइनल - सिल्वर पदक
- पुरुषों की 4x१०० मीटर रिले टीम - ब्रॉन्ज पदक
- महिलाओं की २० किलोमीटर रेस वॉक टीम - ब्रॉन्ज पदक
- अविनाश मोहंतीः बैडमिंटन - ब्रॉन्ज पदक

राइन-रूहर (जर्मनी), २८ जुलाईः जर्मनी के राइन-रूहर में संपन्न हुए वर्ल्ड यूनिवर्सिटी गेम्स २०२५ में कीट डीम्ड विश्वविद्यालय ने अभूतपूर्व ऐतिहासिक प्रदर्शन करते हुए भारत की सबसे ज्यादा पदक जीतने वाला विश्वविद्यालय का गौरव प्राप्त किया। इस प्रदर्शन ने भारत को अब तक की सबसे बेहतरीन रैंक मिला है और मेडल टैली में २०वें स्थान पर भारत पहुंच चुका है। एक ही दिन में कीट के छात्र-खिलाड़ियों ने कुल पाँच पदक–तीन सिल्वर और दो ब्रॉन्ज–हासिल किए। इसके चलते भारत की कुल पदकों की संख्या १२ हो गई, जो पिछली बार से दोगुनी है।

अविनाश मोहंती के पदक के साथ कीट के कुल पदकों की संख्या ६ हो गई, जो भारत की कुल पदक संख्या का आधा है। इससे कीट ने खुद को देश की खेलों में सबसे अग्रणी यूनिवर्सिटी के रूप में स्थापित कर दिया है।

भारत की आधिकारिक टीम में ओडिशा के ४२ खिलाड़ियों ने हिस्सा लिया था जिनमें से ४० कीट के खिलाडी छात्र थे। कीट-कीस और कीम्स के संस्थापक डॉ. अच्युत सामंत ने इस शानदार उपलब्धि पर खुशी जताते हुए कहा,

'यह दिन सिर्फ पदकों का नहीं, बल्कि यह प्रमाण है कि जब प्रतिभा को समर्पण और सही मार्गदर्शन मिले, तो हमारे युवा वैश्विक मंच पर चमक सकते हैं।'

उन्होंने ओडिशा खेल विभाग, भारतीय विश्वविद्यालय संघ (AIU), भारतीय खेल प्राधिकरण (SAI) और भारत सरकार के युवा मामले एवं खेल मंत्रालय का आभार व्यक्त किया। साथ ही प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को देश में खेलों को बढ़ावा देने के लिए विशेष धन्यवाद भी दिया।

'भगवान की कृपा से हमने पिछले संस्करण के मुकाबले इस बार तीन गुना पदक जीते हैं। मैं AIU और कीट के पूरे सहयोगी दल को उनके अथक प्रयासों के लिए धन्यवाद देता हूँ,' डॉ. सामंत ने कहा।

श्रावण माह विशेष

भगवान शिव के १०८ नाम

१- ॐ भोलेनाथाय नमः
२-ॐ कैलाश पतये नमः
३-ॐ भूतनाथाय नमः
४-ॐ वृषभ ध्वजाय नमः
५-ॐ वृषभेश्वराय नमः
६-ॐ ज्योतिर्लिंगाय नमः
७-ॐ महाकालेश्वराय नमः
८-ॐ रुद्रनाथ नमः
९-ॐ भीमशंकराय नमः
१०-ॐ नटराजाय नमः
११-ॐ प्रलयन्कराय नमः
१२-ॐ चंद्रमोल्यै नमः
१३-ॐ डमरूधारिणे नमः
१४-ॐ चंद्रधारिणे नमः
१५-ॐ मल्लिकार्जुनाय नमः
१६-ॐ भीमेश्वराय नमः
१७-ॐ विषधारिणे नमः
१८-ॐ गंगाधराय नमः
१९-ॐ बाघाम्बराय नमः
२०-ॐ ओंकारेश्वराय नमः
२१-ॐ त्रिशूलधारिणे नमः
२२-ॐ विश्वनाथाय नमः
२३-ॐ अनादिदेवाय नमः
२४-ॐ उमानाथाय नमः
२५-ॐ गौरीपतये नमः
२६-ॐ गणपित्रे नमः
२७-ॐ भोलेनाथाय नमः
२८-ॐ पार्वती पतये नमः
२९-ॐ शम्भवे नमः
३०-ॐ नीलकंठाय नमः
३१-ॐ महाकालेश्वराय नमः
३२-ॐ त्रिपुरारीये नमः
३३-ॐ त्रैलोक्यनाथाय नमः
३४-ॐ त्रिनेत्राय नमः
३५-ॐ कार्तिक पित्रे नमः
३६-ॐ जगतपित्रे नमः
३७-ॐ मृत्युन्जयाय नमः
३८-ॐ नागधारीणे नमः
३९- ॐ रामेश्वराय नमः
४०-ॐ लंकेश्वराय नमः
४१-ॐ अमरनाथाय नमः
४२-ॐ केदारनाथाय नमः
४३-ॐ मंगलेश्वराय नमः
४४-ॐ अर्धनारीश्वराय नमः
४५-ॐ नागार्जुनाय नमः
४६-ॐ जटाधारीणे नमः
४७-ॐ नीलेश्वराय नमः
४८-ॐ गलसर्पमाला धारिणे नमः
४९- ॐ दीननाथायनमः
५०-ॐ सोमनाथाय नमः
५१-ॐ योगीश्वर्यै नमः
५२-ॐ भंडारीणे नमः
५३-ॐ बमलेश्वराय नमः
५४-ॐ गोरीशंकराय नमः
५५-ॐ शिवाकांताय नमः
५६-ॐ महेश्वराय नमः
५७-ॐ महेशाय नमः
५८-ॐ आलोकनाथाय नमः
५९-ॐ आदिनाथाय नमः
६०-ॐ देवदेवेश्वराय नमः
६१-ॐ प्राणनाथाय नमः
६२-ॐ शिवाय नमः
६३-ॐ महादानीये नमः
६४-ॐ शिवदानीये नमः
६५-ॐ संकटहारिणे नमः
६६-ॐ महेश्वराय नमः
६७-ॐ रुंडमालाधारीणे नमः
६८-ॐ जगपालनकर्त्रे नमः
६९-ॐ पशुपतये नमः
७०-ॐ संगमेश्वराय नमः
७१-ॐ दक्षेश्वराय नमः
७२-ॐ घृश्मेश्वराय नमः
७३-ॐ मणिमहेशाय नमः
७४-ॐ अनादीश्वर्यै नमः
७५-ॐ अमरनाथाय नमः
७६-ॐ आशुतोषाय नमः
७७-ॐ विल्वकेश्वराय नमः
७८-ॐ अचलेश्वराय नमः
७९-ॐ अभयंकर्यै नमः
८०-ॐ पातालेश्वराय नमः
८१-ॐ सर्पेश्वराय नमः
८२-ॐ सर्पधारीणे नमः
८३-ॐ त्रिलोकि नरेशाय नमः
८४-ॐ हठ योगीन्ये नमः
८५-ॐ विश्लेश्वराय नमः
८६- ॐ नागाधिराजाय नमः
८७- ॐ सर्वेश्वराय नमः
८८-ॐ उमाकांताय नमः
८९-ॐ त्र्यम्बकाय नमः
९०-ॐ त्रिकालदर्शये नमः
९१-ॐ त्रिलोकी स्वामीने नमः
९२-ॐ महादेवाय नमः
९३-ॐ गढ़शंकराय नमः
९४-ॐ मुक्तेश्वराय नमः
९५-ॐ नटेश्वराय नमः
९६-ॐ गिरजापतये नमः
९७- ॐ भद्रेश्वराय नमः
९८-ॐ त्रिपुनाशकाय नमः
९९-ॐ निर्झरेश्वराय नमः
१०० -ॐ किरातेश्वराय नमः
१०१-ॐ कैलासाधिपतये नमः
१०२-ॐ अबधूतपतये नमः ।
१०३ -ॐ भीलपतये नमः ।
१०४-ॐ जितनाथाय नमः
१०५-ॐ वृषेश्वराय नमः
१०६-ॐ भूतेश्वराय नमः
१०७-ॐ बैजनाथाय नमः
१०८-ॐ नागेश्वराय नमः

- अशोक चौबे - कटक

मारवाड़ी सोसायटी,भुवनेश्वर के संरक्षक चौधरी सुरेश अग्रवाल के जन्मदिन पर विशेष

जिसके प्रति सभी का आदर-सम्मान,आत्मीयता और श्रद्धा हैं,जो आज भी भारतीय शाश्वत संयुक्त परिवार के यथार्थ सह आदर्श रुप में मुखिया हैं, जो प्रतिदिन यज्ञ करते और कराते हैं, जो भगवान जगन्नाथ, महाप्रभु लिंगराज, जो श्रीश्याम खाटूवाले के अनन्य भक्त हैं, जो एक आदर्श पिता, एक आदर्श पति, एक आदर्श भाई, एक आदर्श चाचा, एक आदर्श मित्र तथा जो एक सफलतम निःस्वार्थ समाजसेवी हैं वे हैं चौधरी सुरेश अग्रवालजी जिन्हें लोग आत्मीयतावश सुरेश चाचा कहकर पुकारते हैं।

कृषिप्रधान प्रदेश राजस्थान के पैतृक गांव, तारागंज, जिला चुरु के वे मूल निवासी हैं। वे एक आध्यात्मिक पुरुष हैं जो लंबे समय से ओड़िशा की राजधानी भुवनेश्वर में स्थाई रुप से रहते हैं। चौधरी सुरेश अग्रवाल की कुल सात बहनें तथा सात जीजाजी हैं।

सच कहा जाय तो चौधरी सुरेश अग्रवाल पूरी तरह से एक व्यावहारिक व्यक्ति हैं, मित्र हैं और सहयोगी हैं। जिस व्यावहारिकता की बात हमने अपने धर्मशास्त्रों के अध्ययन से जानी वह अनुभव व्यावहारिक रुप में चौधरी सुरेश अग्रवाल के आत्मीय व्यवहार में पाया। अस्सी के दशक से लेकर आजतक जितने भी मारवाड़ी सोसायटी भुवनेश्वर के विशालतम मारवाड़ी होली बंधुमिलन हुए, प्रतिवर्ष श्रीपुरीधाम भगवान जगन्नाथ की विश्वप्रसिद्ध रथयात्रा जगन्नाथभक्त सेवा शिविर लगा, बोलबम कांवड़िया सेवा हुई, श्रीश्याम फाल्गुनी महोत्सव अनुष्ठित हुए सभी में चौधरी सुरेश अग्रवाल की भूमिका अभूतपूर्व और सराहनीय रही।

बहुआयामी प्रतिभासंपन्न चौधरी सुरेश अग्रवाल के जन्मदिन पर भगवान जगन्नाथ, महाप्रभु लिंगराज तथा बाबा खाटू नरेश से एक ही प्रार्थना है कि वे निःस्वार्थ समाजसेवी तथा आध्यात्मिक पुरुष चौधरी सुरेश अग्रवाल को शतायु बनाएं तथा उनके खुशहाल संयुक्त परिवार को सभी प्रकार का ऐश्वर्य प्रदान करें।

प्रधानमंत्री मातृ वंदना योजना के लिए विशेष पंजीकरण अभियान १५ अगस्त, २०२५ तक बढ़ाया गया

प्रधानमंत्री मातृ वंदना योजना से अब तक ४.०५ करोड़ महिलाओं को लाभ

PIB Delhi

महिला एवं बाल विकास मंत्रालय ने प्रधानमंत्री मातृ वंदना योजना (पीएमएमवीवाई) के लिए विशेष पंजीकरण अभियान की अवधि १५ अगस्त, २०२५ तक बढ़ा दी है। आंगनवाड़ी और आशा कार्यकर्ताओं के नेतृत्व में घर-घर जाकर जागरूकता एवं नामांकन अभियान का उद्देश्य सभी पात्र गर्भवती और स्तनपान कराने वाली महिलाओं तक पहुंचना और योजना के तहत उनका समय पर पंजीकरण सुनिश्चित करना है। पीएमएमवीवाई गर्भवती महिलाओं और स्तनपान कराने वाली माताओं (पीडब्लूएंडएलएम) के बीच पौष्टिक आहार उपलब्ध कराने और स्वास्थ्य संबंधी व्यवहार में सुधार लाने के लिए वित्तीय सहायता प्रदान करती है और बालिकाओं के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण को बढ़ावा देती है।

पीएमएमवीवाई वेतन में कमी होने की स्थिति में आंशिक मुआवजे के रूप में नकद प्रोत्साहन प्रदान करती है ताकि माताएं पहले बच्चे के जन्म से पहले और बाद में आराम कर सकें। इस योजना की शुरुआत से लेकर ३१ जुलाई, २०२५ तक ४.०५ करोड़ से अधिक लाभार्थियों को उनके बैंक/डाकघर खातों में प्रत्यक्ष लाभ अंतरण के माध्यम से १९,०२८ करोड़ रूपये की राशि का मातृत्व लाभ (कम से कम एक किस्त) का भुगतान किया जा चुका है।

प्रधानमंत्री मातृ वंदना योजना, मिशन शक्ति की उप-योजना 'सामर्थ्य' के अंतर्गत एक केंद्र प्रायोजित योजना है, जो प्रत्यक्ष लाभ अंतरण के माध्यम से प्रत्यक्ष वित्तीय सहायता प्रदान करती है। प्रधानमंत्री मातृ वंदना योजना के अंतर्गत, मिशन शक्ति योजना के दिशानिर्देशों के अनुसार, पहली संतान के लिए दो किस्तों में ५,००० रूपये और दूसरी बालिका के जन्म के बाद एक किस्त में ६,००० रूपये की नकद प्रोत्साहन राशि प्रदान की जाती है। इस योजना का उद्देश्य गर्भवती महिलाओं और स्तनपान कराने वाली माताओं में स्वास्थ्य संबंधी व्यवहार में सुधार लाना और देश भर में बेहतर मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य सुनिश्चित करना है। इस योजना का कार्यान्वयन राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों के अधिकारियों द्वारा अपने क्षेत्रीय कार्यकर्ताओं के माध्यम से नए प्रधानमंत्री मातृ वंदना योजना सॉफ्टवेयर का उपयोग करके किया जाता है, जिसे मार्च, २०२३ में लॉन्च किया गया था। प्रधानमंत्री मातृ वंदना योजना सॉफ्टवेयर के तहत, यूआईडीएआई के माध्यम से आधार प्रमाणीकरण डिजिटल रूप से किया जाता है और भारतीय राष्ट्रीय भुगतान निगम द्वारा सत्यापन सुनिश्चित किया जाता है ताकि धनराशि सीधे उनके डीबीटी-सक्षम आधार-सीडेड बैंक या डाकघर खातों में स्थानांतरित की जा सके। योजना के सुचारू वितरण और व्यापक कवरेज को सुनिश्चित करने के लिए प्रधानमंत्री मातृ वंदना योजना पोर्टल में एकीकृत शिकायत मॉड्यूल, बहुभाषी और टोल-फ्री प्रधानमंत्री मातृ वंदना योजना हेल्पलाइन (१४४०८), चेहरे की पहचान प्रणाली का उपयोग करके आधार-समर्थित बायोमेट्रिक प्रमाणीकरण और प्रधानमंत्री मातृ वंदना योजना की संभावित लाभार्थियों की सूची आदि जैसे कई सुधार किए गए हैं।

अमृत उद्यान का ग्रीष्मकालीन वार्षिकोत्सव १६ अगस्त से १४ सितंबर तक जनता के लिए खुला रहेगा

PIB Delhi

अमृत उद्यान का ग्रीष्मकालीन वार्षिकोत्सव १६ अगस्त से १४ सितंबर, २०२५ तक जनता के लिए खुला रहेगा। इस दौरान, उद्यान सुबह १०:०० बजे से शाम ६:०० बजे तक खुला रहेगा, और अंतिम प्रवेश शाम ५:१५ बजे होगा। रखरखाव के कारण उद्यान सभी सोमवार को बंद रहेगा। राष्ट्रीय खेल दिवस और शिक्षक दिवस के अवसर पर क्रमशः २९ अगस्त को एथलीटों और खिलाड़ियों को तथा ५ सितम्बर को शिक्षकों को अमृत उद्यान में विशेष प्रवेश दिया जायेगा। आगंतुकों के लिए प्रवेश और निकास नॉर्थ एवेन्यू मार्ग के पास स्थित गेट संख्या ३५ से होगा। अमृत उद्यान में प्रवेश निःशुल्क होगा। आगंतुक visit. rashtrapatibhavan.gov.in पर ऑनलाइन अपना स्लॉट बुक कर सकते हैं। प्रत्यक्ष आगंतुक गेट संख्या ३५ के बाहर स्थित स्वयं-सेवा कियोस्क का उपयोग करके पंजीकरण करा सकते हैं।

आगंतुक उद्यान के अंदर मोबाइल फोन, इलेक्ट्रॉनिक चाबियां, पर्स, हैंडबैग, पानी की बोतलें, बच्चों की दूध की बोतलें और छाते ले जा सकते हैं। इनके अलावा, कोई अन्य वस्तु ले जाने की अनुमति नहीं होगी। गार्डन ट्रेल में बाल वाटिका, हर्बल गार्डन, बोनसाई गार्डन, सेंट्रल लॉन, लॉन्ग गार्डन और सर्कुलर गार्डन शामिल होंगे। पूरे सर्किट में लगाए गए क्यूआर कोड आगंतुकों को विभिन्न पौधों और डिज़ाइन विशेषताओं के बारे में जानकारी प्रदान करेंगे। इस वर्ष, आगंतुकों को एक नई विशेषता-बैबलिंग ब्रुक-देखने को मिलेगी। इस भूदृश्य क्षेत्र में शामिल हैं:

- झरने, फुहारे युक्त मूर्तिकलाएं, सीढीदार पत्थर और भूमि से ऊपर बने तालाब के साथ एक घुमावदार जलधारा
- आकर्षक पथों के साथ जुड़ा पंचतत्व ट्रेल्स और प्राकृतिक ध्वनि परिदृश्यों से युक्त एक शांत बरगद उपवन
- एक शांत हर्बल और प्लूमेरिया गार्डन, जिसमें मनमोहक घास के टीले और बागान हैं जो आत्मिक शांति का अनुभव प्रदान करते हैं।

स्वर्णिम मुंबई

प्रतियोगिता नंबर-99

सभी के लिए सुनहरा

दीजिए आसान से सवालों का जवाब और

जीतिये 2,000/- का नकद इनाम!

अवसर!

प्रश्न १ : भारत की राष्ट्रीय नदी कौन सी है?

प्रश्न २ : दुनिया में कितने महाद्वीप हैं?

प्रश्न ३ : भारत की राजधानी क्या है?

प्रश्न ४ : भारत को घेरने वाले दो समुद्रों के नाम बताइए।

प्रश्न ५ : भारत के उत्तरी हिस्से में स्थित पर्वत श्रेणी कौन सी है?

प्रश्न ६ : दुनिया का सबसे गहरा महासागर कौन सा है?

प्रश्न ७ : पृथ्वी के मध्य से कौन सा अक्षांश गुजरता है?

प्रश्न ८ : भारत किस महाद्वीप का हिस्सा है?

प्रश्न ९ : भारत का एकमात्र मरुस्थल कौन सा है?

प्रश्न १० : दुनिया की सबसे ऊंची पर्वत चोटी कौन सी है?

प्रश्न ११ : मनुष्य कौन सा गैस श्वास में लेते हैं?

प्रश्न १२ : कौन सा ग्रह लाल ग्रह कहलाता है?

प्रश्न १३ : सौर मंडल किस आकाशगंगा का हिस्सा है?

प्रश्न १४ : हमारे राष्ट्रपिता कौन हैं? महात्मा गांधी

प्रश्न १५ : भारत पर किसने शासन किया था?

प्रश्न १६ : भारत को स्वतंत्रता कब मिली?

प्रश्न १७ : भारत का सबसे महान शासक कौन था?

प्रश्न १८ : सौर मंडल में कितने ग्रह हैं?

प्रश्न १९: पौधे के कौन-कौन से भाग होते हैं?

आपके द्वारा सही जवाब की पहेली इस माह की २५ तारीख तक डाक द्वारा हमारे कार्यालय में पहुंच जानी चाहिए। भरी गयी पहेली का रिजल्ट लॉटरी सिस्टम द्वारा निकाला जाएगा। विजेता के नाम और सही हल अगले माह के अंक में प्रकाशित किये जाएंगे। परिजन विजेता बच्चे का फोटो व उसका पहचान पत्र लेकर हमारे कार्यालय में आएं और मुंबई के बाहर रहने वाले विजेता अपने पहचान पत्र की सत्यापित प्रति डाक या मेल से निम्न पते पर भेजें।

Add: A-102, A-1 Wing ,Tirupati Ashish CHS. , Near Shahad Station
Kalyan (W) , Dist: Thane,
PIN: 421103, Maharashtra.
Phone: 9082391833 , 9820820147
E-mail: swarnim_mumbai@yahoo.in,
Website: swarnimumbai.com

नामः ....

पूरा पताः ....
....
....

फोन नं.: ....

ई-मेलः ....

लुटा हुआ

> **सुच्चासिंह चौंक उठा। इन्दर होगी? यह? कान से लेकर ओंठ तक लम्बा घाव तो उसके मुंह पर कभी था ही नहीं। लेकिन आँखें तो उसका परिचय ठीक देती हैं। गाल का गड्ढा तो वैसा ही है। सारी बातें भूलकर उसने पुकारा, ''इन्दर!'' और आनन्द और आश्चर्य से भरी हुई आँखें आवांज की ओर जाती हैं। वही तो है। सरकारी कानून भी कैसे हैं! पति-पत्नी इतने लम्बे समय के बाद मिलते हैं, फिर भी सारे कांगजात पर दस्तंखत करके आधे घंटे के बाद ही वह इन्दर को आत्मीयता से मिल पाते हैं। इन्दर आ गयी। लेकिन उसके मुंह में जैसे जीभ नहीं है ऐसा व्यवहार करती है। कुछ बोलती नहीं है। चुपचाप घर में काम करती रहती है। घाव के बारे में, जो सितम उस पर ढहा उसके बारे में वह कुछ नहीं कहती। सुच्चासिंह पहले भी इन्दर को समझ नहीं सका था, आज भी वह उसे रहस्यमयी लगती है। उस पर क्या-क्या सितम गुंजरे होंगे! यह घाव! क्या इन्दर इन्दर ही रही होगी?**

सरदार सुच्चासिंह को अपनी मनोव्यथा का कारण समझ में नहीं आता था।

उसे अपने पर ही गुस्सा आता था। क्यों उसने अपने वतन का त्याग किया और बम्बई चला आया? बम्बई में न कोई रिश्तेदार था न किसी से जान-पहचान, फिर भी वह वहाँ से भागकर क्यों आया? उसको मालूम था कि वतन में खून की नदियाँ बहने वाली हैं। मां बहन पर पाशविक अत्याचार होनेवाले हैं, और धर्मदेव की आग में विश्वास, मानवता, ईमान सब गलकर भस्मीभूत होने वाले हैं, सो मां-बाप और पत्नी को वहाँ अकेले छोड़कर वह क्यों भाग आया? विधर्मी होने के कारण कई निर्दोष व्यक्तियों की हत्या तो उसकी नंजरों के सामने हुई थी, चारों ओर नालियों में खून तेज गति से बहता था, तो भी वह अपने स्वजनों को छोड़कर क्यों आया! वह अपने मन को समझाने की कोशिश करता रहा कि मां-बाप और पत्नी के लिए बम्बई में कुछ व्यवस्था करने के लिए वह बम्बई आया था, पर मन को इस विचार से सन्तोष नहीं था। उसका भीतर का मन तो उससे कहता था कि वह माता-पिता और पत्नी को उन नृशंस हत्यारों के सहारे छोड़कर वहाँ से भागा है। पर उसका मन एक और दलील देता रहा कि 'तू तो कायर था और भागकर आया, पर तेरे माता-पिता और अनन्य सुन्दरी पत्नी ने क्यों तुझे अनुमति दी?'

मां और बाप ने तो सोचा होगा कि उनका कुछ भी हो, पर उनके लाल की जिन्दगी बच जाए। उसको भेजकर उन्होंने जान-बूझकर मृत्यु का शिकार बनना चाहा। माता-पिता की त्याग और बलिदान की भावना से उसका कण्ठ भर आया था। उसके विचार ने एक दूसरा मोड़ लिया। उनका बलिदान बेवकूफी थी। वे अपनी जायदाद बचाने के लिए वहाँ रहे, लेकिन जायदाद तो लूट ली गयी। उनका मकान तो जलकर भस्म हो गया। गहने-जवाहरात और अपना जीवन, सब तो गंवा दिया। त्याग और बलिदान तो तब माना जाता है जब वे भी उसके साथ बम्बई चले आते गहने-पैसे लेकर। उनका त्याग और बलिदान तो बिलकुल पागलपन था पागलपन।

मां-बाप तो ठीक, पर समझदार और सुन्दर इन्दर ने उसको बम्बई जाने के लिए क्यों मजबूर किया? उसको चाहिए था कि वह अपनी कसम दिलाकर मुझे साथ रहने पर मजबूर करती या मेरे साथ बम्बई आने की हठ करती। बूढ़े मां-बाप सही ढंग से सोच नहीं सकते थे, पर उसका दिमाग तो काम का था? उसने क्यों उस प्रकार व्यवहार किया! उसने जान-बूझकर तो मुझे वतन का त्याग करने के लिए मजबूर नहीं किया होगा।

सरदार जी को अपने विवाह के समय की घटना याद आ गयी। अभी तो एक साल भी पूरा नहीं हुआ। इन्दर सचमुच बहुत खूबसूरत थी। उसकी खूबसूरती का सरदार जी को गर्व था। इन्दर उसकी पत्नी है, इसलिए उसके आनन्द की कोई सीमा नहीं थी।

लेकिन इन्दर! वह उससे प्यार करती थी? सुच्चासिंह के मन में सन्देह उत्पन्न हुआ। इन्दर के चेहरे पर प्रेम के भाव उसने कभी नहीं देखे थे। वह तो केवल संगमरमर की प्रतिमा-सी थी। तो क्या उसने उसको वहाँ से हटाने के लिए तो बम्बई नहीं भेजा? अगर वैसा न होता तो वह उसको जाने के लिए मजबूर क्यों करती! सुच्चासिंह के मुंह से निकला ''शैतान की बच्ची। काली नागिन! उसका ही षडयन्त्र होगा मुझे यहाँ भेजकर मेरे मां-बाप की हत्या करवाने का।''

सुच्चासिंह की आँखें आँसुओं से भर गयीं। वह कितना बुजदिल था! कितना कमअक्ल!

वे आये कटरे के मोड़ पर। गोलियाँ बरसती हैं, भयानक पत्थरबांजी होती है। आग हजारों दिशाओं से भड़क उठी है। बचने का कोई मार्ग नहीं था। अच्छा था कि लड़का दूर-दूर चला गया था। वह बच गया।

आत्महत्या ! ना ना, अगर मरना है तो शूरवीर की तरह मारकर क्यों न मरें। गुरुजी का आदेश धर्म को डुबाकर नहीं मरना है। सत् श्री अकाल। गये। सब चले बस। कोई आग में जलकर मर गये, कोई लड़ते-लड़ते मरे, किसी ने आत्महत्या की, ना, कटरा रामसिंह की सब

महिलाओं ने राजपूत स्त्रियों की भाँति जौहर किया था। बेइज्जती और तिरस्कार से भरी हुई जिन्दगी से इंज्जत की गौरवपूर्ण मौत ही अच्छी थी।

रूप कितना विनाशकारी बन गया था। अच्छा हुआ कि रूपवती स्त्रियों ने आत्महत्या कर ली।

और उस रूप को सुरक्षित रखना ही किसके लिए! लेकिन उन सब बातों का स्मरण क्यों करें? गोलियों की वर्षा! ये तो नजदीक आ गये! दरवाजे टूटे, इन्दर ने किरपाण उठायी, ये और ये सारे पागलपन का कारण जो रूप था उसको कुरूप करने के लिए हाथ उठाया तो...

सुच्चासिंह को बम्बई में ठीक ही सूचना मिली। उसका मकान मां-बाप के साथ जलकर खाक हो गया था। सूचना देनेवाले न यह नहीं बताया था कि वे जिन्दा जला दिये गये थे या मरे हुए। सामान, घर की सारी चीजें सब लूट ली गयी थीं। पवित्र चींजों की बेइंज्जती भी की गयी थी।

कितनी भारी वेदना का बोझ सिर पर है? किससे कहे। सबके सिर पर अपनी-अपनी व्यथा का बोझ है। और वहाँ से अब जिसको पाकिस्तान नाम दे दिया गया है उसकी करुण कहानी सुनाने के लिए असंख्य लोग शरणार्थी बनकर आ गये हैं। किसकी कहानी सुने? उन कहानियों को सुनने में अब किसको दिलचस्पी है? हमदर्दी! वैसी कोई चींज है ही नहीं ! वे लोग क्यों भूल जाते हैं कि भारत को स्वराज्य हमारे बलिदान से मिला है। आजादी की आग में धुएं के रूप में हमारे मकान जलाए गये। आजादी-यज्ञ में आहुति के रूप में हमारा सर्वस्व खाक हो गया। हमारे भाई-बहन, मां-बाप सबने बलिदान दिया, और और तुम्हारा बाल तनिक भी नहीं हिलता! तुम्हारे, बड़े-बड़े महल बिजली की वातानुकूलित मशीन, तुम्हारी मोटर-गाड़ियाँ तुम्हारी महफिल...और मोहताज बने हम...और तुम लोग...लेकिन इसका कोई अर्थ नहीं। जिन्होंने अपने मां-बाप, भाई-बहन, अपने मकान और अपनी पत्नी को भी गँवाया है, और जिनका सर्वस्व लुट गया है उनको आप लोग क्या देते हैं? फुटपाथ, रहने के लिए कोई धर्मशाला, और विशेष कृपा की तो दो फुलके! बड़ी-बड़ी मोटरों में बैठकर बड़ी तोपवाले लोग आते हैं हमारी धर्मशाला में, हमारी ओर इस प्रकार देखते हैं जैसे चिड़ियाघर के पशु-पक्षी हों और मुट्ठी भर चने दान में दे जाते हैं और दो क्षण दिल बहलाकर चले जाते हैं। हां, सच बात है, दिल बहलाकर! यहाँ सुन्दर लड़कियों को मोटरों में घुमाने वालों की कमी नहीं। मोटर में घूमना।...

इन्दर का क्या होता होगा? मां-बाप के साथ उसकी मृत्यु भी क्यों न हुई? क्यों वह जीवन का मोह छोड़ न सकी। अपने सौन्दर्य के अभिमान ने ही उसको आत्महत्या नहीं करने दी होगी!

वह भी क्या मोटर में घूमती होगी?

सुच्चासिंह के रोंगटे खड़े हो जाते हैं। इन्दर के लिए वैसा खयाल उसको क्यों आया? अकालतख्त की साक्षी में तो दोनों का विवाह हुआ था। उसमें इतना विष? ना। ना। ना।

वह बिचारी क्या करे? पाँच नदियों का पानी पिया, गुरु की प्रतापी बानी सुनी, शूरवीरों के खून से देह बनी, फिर भी औरत! वह कितनी टक्कर झेल सकती थी। उसकी क्षमता कितनी? क्या करे बेचारी?

मेरी क्या कोई जिम्मेदारी नहीं थी? मैंने क्या किया? पति होकर पत्नी को ढूंढ़ने का प्रयत्न भी नहीं किया! केवल नुक्ताचीनी ही करता रहा! उसने सोचा।

पति और पत्नी! क्या अब इन्दर मेरी पत्नी बनने योग्य रही होगी? मोटर में घूमना! और वे तो पशु थे। उनके बीच इन्दर का क्या हुआ होगा? मेरे प्रति निष्ठावान रही होगी? उसको कई जानवरों ने भ्रष्ट किया होगा...अरे रे। विश्वास से उसको हृदय में जलन होने लगी।

दीवार से सिर पटकने की आवश्यकता होती है। सिर झुकाए हुए जीना पड़ेगा। वे मोटरवाले आते हैं। कोई कहता है सुच्चासिंह की पत्नी को गुंडे ले गये। कहाँ गया मेरा शौर्य, कहाँ गया मेरा पौरुष? उनकी हमदर्दी में सच्चाई होती है। वे कहते हैं 'बिचारे सरदार जी की पत्नी को ले गये।' मैं कैसा पति हूं जो पत्नी की रक्षा भी न कर पाया?

विशाल राजमार्ग पर घूमते हुए लोग मेरी ओर एकटक देखते रहते हैं? क्या उनको भी पता चल गया कि मैं पत्नी को गुण्डों के हाथों से छुड़वा कर नहीं ले आया? क्या किस्मत ने ही मेरे मुंह पर काले अक्षरों में मेरी बुजदिली के अक्षर लिख दिये हैं? देखिए उनकी नंजरों में भी मेरे प्रति तिरस्कार दिखाई देता है। अवश्य उनको पता चल गया होगा। अवश्य। अगर वैसा न होता तो कोई व्यक्ति दूसरे व्यक्ति की ओर इस प्रकार देखता है?

इन्दर! जब से तूने मेरे घर में पाव रखा है, तब से एक के बाद एक मुसीबत उत्पन्न होती जा रही है।

लेकिन उसमें उस बिचारी का क्या दोष? वह जहाँ होगी इस खयाल से जीवित होगी कि एक दिन उसका पति उसको छुड़ाकर ले जाएगा। बिचारी हर क्षण मेरा इन्तजार करती होगी। अब मेरे सिवा उसका है भी कौन?

धर्मशाला में एक महिला आयी है। इसका सब कुछ लूट लिया गया है। वह सारा दिन अपने मकान की, घर के सामान की, बातें करती रहती हैं लेकिन लाखों आदमियों का सब कुछ लूटा गया है, वह एक व्यक्ति अपने दुर्भाग्य के लिए क्यों रोये! मानवता ही लुप्त हो गयी है।

इन्दर को ढूँढ़कर वापिस लाना ही चाहिए।

दिल्ली, अमृतसर!

मेरे जैसे कितने आदमी यहाँ बेबस घूमते-फिरते हैं। गुम हुए रिश्तेदारों को वापिस लाने का कार्य सरकार ने शुरू कर दिया है। लेकिन कोई किसी की पूरी बात सुनता ही नहीं। सबको इस दुख से लाभ उठाकर पैसे बनाने हैं। प्रसिद्ध वृद्ध सरमायेदार की पत्नी ढूँढ़कर उन्होंने वापिस ला दिया और इसके लिए दस हंजार रुपये लिये। मैं तो मुफिलस हूं। मेरे लिए कौन इन्दर को ढूँढ़ेगा? पैसे के बिना इन्दर कैस मिलेगी?

सुच्चासिंह ने सरकार की कचहरी में इन्दर की तलाश के लिए दरखास्त दे दी। उस जैसे बहुत-से लोग कचहरी में अपने स्वजनों की तलाश में आये थे। कोई अपनी बेटी की तलाश में था, कोई अपनी पत्नी की। कई मासूम बच्चे मां को ढूँढ़ने निकले थे।

दिन पर दिन बीत जाते हैं। कई लोग तो 'पता लगने पर हमें सूचना देना' कहकर चले जाते हैं। वह स्वयं कहाँ जाए? धर्मशाला में? ऐसी धर्मशाला अन्य स्थान पर कहाँ मिलने वाली थी! वैसी करुण परिस्थिति का कोई असर अंफसर पर नहीं हुआ था। वे खाली आश्वासन भी नहीं देते थे। यदि उनकी पत्नी को गुंडे उठाकर ले गये होते तो उनको अपहृत स्त्री के पति की व्यथा का पता चलता।

सुच्चासिंह ने देखा कि दो आदमी उसकी ओर आ रहे हैं। उन्होंने आकर उसे अभिवादन किया और बोले "हम लोग आपको मिलने ही आये हैं। आपको पता नहीं होगा, लेकिन हम

लोग आपके गाँव के ही वाशिन्दे थे।'' उसके बाद उन्होंने बताया कि सुच्चासिंह का घर किस प्रकार जला दिया गया और इन्दर को गुंडे किस प्रकार उठाकर ले गये।

सुच्चासिंह अधीर हो उठा। उसने पूछा, ''तब आप लोगों को तो पता होगा कि इन्दर कहाँ है?''

''यह कहने के लिए ही तो हम आपके पास आये हैं।'' और उन्होंने गाँव का नाम बताए बिना तथा किसी अन्य नामोल्लेख के कहा, ''यदि एक हजार रुपया आप दे सकें तो इन्दर वापिस लायी जा सकती है। आप तो हमारे गाँव के हैं, इसलिए यह समाचार लेकर हम आये हैं, यदि जल्दी ही रुपये मिल जाएं तो आपका काम हो सकेगा, यदि देर हुई तो वापिस लाने की कोई सम्भावना नहीं।''

हंजार रुपये कहाँ से लाए! हजार बार चिल्लाने की भी शक्ति नहीं बची थी तो हंजार रुपये कहाँ से लाए! लेकिन यदि हजार रुपये में इन्दर वापिस लायी जा सकती तो सौदा हो सकता है। वहाँ जो लोग इकट्ठे हुए थे, उनमें से वैसे लोग भी थे जिन्होंने अपनी बहू-बेटी फिर से पाने के लिए पाँच-पाँच, दस-दस हजार रुपए दिये थे। और इन्दर तो बहुत सुन्दर थी। उसके लिए हजार रुपये तो बहुत कम हैं।

''देखिए सरदार जी, इसमें कुछ सोचने जैसा है ही नहीं। कितनी मुसीबत झेलकर और कितने कष्ट उठाकर हम यह समाचार लेकर आये हैं और आप पैसों की गिनती कर रहे हैं!''

ये भी मुझे नंफरत की नंजर से देख रहे हैं। ये सोचते होंगे, कैसा है यह पति जो पत्नी को वापिस लाने की बात में भी पैसे को विशेष महत्त्व देता है। ''लेकिन यह है कहाँ? यदि आप लोगों को मालूम हो तो हम इस दफ्तर के बड़े अफसर को इस बात की खबर दे सकते हैं, जो उसे वापिस लाने का सारा इन्तजाम करेगा।'' उन लोगों की आँखें उसकी बात सुनकर कैसी लाल हो गयी! सुच्चासिंह डर गया। ''आपके लिए सरदारिन को वापिस लाना असम्भव है। यह बात क्या सरकारी अंफसर को कहने जैसी है? यदि सरकार को ये बातें करनी होतीं तो हम आपके पास क्यों आते? हम स्वयं ही बड़े अंफसर को जाकर सूचना देते। अगर सरकार कुछ कर सकती तो ऐसी परिस्थिति उत्पन्न ही क्यों होती? कुछ अंक्ल से काम करना चाहिए, सरदार जी!''

सरकार का नाम लेते ही ये लोग क्यों इस प्रकार टेढ़ी-मेढ़ी बातें करते हैं? क्या कुछ रहस्य होगा इसके पीछे? क्या सरकार को सूचना दिए ये बिना ही यह मामला निपटाना होगा? कुछ समझ में नहीं आता। सुच्चासिंह सोचने लगा और वे लोग जाने लगे। इन्दर कहाँ है, कैसी हालत में है, कुछ मालूम नहीं हुआ। वह दौड़कर उन लोगों के पीछे गया। वह जानना चाहता था कि इन्दर कैसी है। उसने जब यह बात पूछी तब वे हँस पड़े। हँसने का मतलब है कि इन्दर जीवित है। तो क्या उसका दामन अछूत ही रहा होगा? रहा ही होगा, क्योंकि वह वैसी नेक औरत थी कि अगर किसी भ्रष्ट की होती तो मर जाती।

वे बदमाश उधार लाए हुए आठ सौ रुपये लेकर रफू-चक्कर हो गये। इन्दर तो वापिस न मिली और लोग मंजांक करते हैं कि पत्नी भी गवांयी और रुपये भी। इन्दर भी लूट ली गयी और ऊपर से पैसे भी लूट लिए गये। लुटे हुए आदमी के प्रति किसी को हमदर्दी नहीं है, हां नंफरत प्रचुर मात्रा में है।

अपहृत स्त्रियों की तलाश के लिए और उन्हें वापिस लाने के लिए जो दफ्तर था वहाँ भीड़ लगी हुई थी और उसमें सुच्चासिंह भी था। सरकार ने बहुत-सी स्त्रियों को वापिस लाने का प्रबन्ध किया है सैनिक उन्हें अमृतसर ला रहे हैं। उसके जैसे कितने लोग यह समाचार सुनकर दफ्तर में इकट्ठे हुए हैं। सब उद्विग्न दृष्टि से इन्तंजार कर रहे हैं।

मोटरें आयीं। बहादुर सैनिकों के बीच अपने स्वजनों को ग्लानि भरी दृष्टि से ढूँढ़ती हुई वे सब स्त्रियाँ। आँखों से आँसुओं की धारा बहती है। भीड़ मोटर को घेर लेती है। एक आवांज आयी बेटी! और उसके बाद किसी की आवांज कोई नहीं सुन पाता इतनी आवांजें एक साथ गूँज उठती हैं। सैनिक सबको धक्का लगाकर दूर धकेलते हैं। स्त्रियों में से किसी के गले से मधुर आवांज निकलती है 'मेरे लाल!'

'इन्दर!'

सुच्चासिंह चौंक उठा। इन्दर होगी? यह? कान से लेकर ओंठ तक लम्बा घाव तो उसके मुंह पर कभी था ही नहीं। लेकिन आँखें तो उसका परिचय ठीक देती हैं। गाल का गड्ढा तो वैसा ही है। सारी बातें भूलकर उसने पुकारा, ''इन्दर!'' और आनन्द और आश्चर्य से भरी हुई आँखें आवांज की ओर जाती हैं। वही तो है। सरकारी कानून भी कैसे हैं! पति-पत्नी इतने लम्बे समय के बाद मिलते हैं, फिर भी सारे कांगंजात पर दस्तंखत करके आधे घंटे के बाद ही वह इन्दर को आत्मीयता से मिल पाते हैं। इन्दर आ गयी। लेकिन उसके मुंह में जैसे जीभ नहीं है ऐसा व्यवहार करती है। कुछ बोलती नहीं है। चुपचाप घर में काम करती रहती है। घाव के बारे में, जो सितम उस पर ढहा उसके बारे में वह कुछ नहीं कहती। सुच्चासिंह पहले भी इन्दर को समझ नहीं सका था, आज भी वह उसे रहस्यमयी लगती है। उस पर क्या-क्या सितम गुंजरे होंगे! यह घाव! क्या इन्दर इन्दर ही रही होगी?

उसका नया जीवन ही शुरू हुआ था! बहुत बार उससे पूछा गया तब उस घाव के बारे में पता चला। कहती है कि उसने आत्महत्या करने के लिए किरपान उठायी तब किसी ने पीछे से उसका हाथ पकड़ा और खींचातानी में किरपान से कान से होंठों तक घाव हो गया। उसके शरीर में खून बह रहा था तभी कोई उसे उठाकर ले गया।

सुच्चासिंह ने बार-बार पूछा, मिन्नत की, धमकी भी दी, एक बार तमाचा भी लगा दिया, पर घाव के अतिरिक्त दूसरी बातों के लिए उसने एक शब्द भी नहीं कहा। उसकी आँखों में भय, विषाद और बेबसी की छाया दिखाई देती है।

वह क्यों नहीं बोलती? पत्नी पति से अपने दुःख की बातें नहीं कहेगी तो किससे कहेगी? उसका इस दुनिया में और है भी कौन?

सुच्चासिंह को अपनी आँखों पर विश्वास न रहा। इन्दर की छाती पर यह क्या है? गोदना गुदवाया है 'पाकिस्तान जिन्दाबाद!' इन्दर यही छिपाती थी? सुच्चासिंह के रोम-रोम में आग थी लेकिन इन्दर कुछ बोलती नहीं थी। उस पर कपड़ा ढँकने का भी प्रयत्न उसने नहीं किया। वह वैसी ही प्रतिमा-सी रही निश्चेष्ट। लेकिन उसकी आँखों में कुछ स्थिर तेज दिखाई देता है। एक क्षण में पहले की व्यथा, बेबसी लुप्त हो गयी है और अचंचल दीप्ति उस पर दिखाई दे रही है।

पहले भी कुछ समझ में नहीं आता था। आज भी कुछ समझ में नहीं आता है। क्या यह देखने के लिए वह इन्दर को वापिस ले आया?

लेकिन यह शैतान की बच्ची कुछ बोलती क्यों नहीं? क्या मुझे विरक्त करने की उसकी इच्छा है क्या?

न बोल सकता हूं न सहन कर पाता हूं।

इन्दर किसकी रही? अरे। किसकी हो गयी?

पुनः आँखें वहाँ जाकर स्थिर हो गयीं 'पाकिस्तान जिन्दाबाद।'

जैसे इतना पर्याप्त न हो, इन्दर ने धीमी, स्पष्ट आवांज में कहा' 'देख लिया?''

सुच्चासिंह क्या जवाब दे? क्या बोले?

- जयन्ति दलाल

गैंग्रीन

दोपहर में उस सूने आँगन में पैर रखते ही मुझे ऐसा जान पड़ा, मानो उस पर किसी शाप की छाया मँडरा रही हो, उसके वातावरण में कुछ ऐसा अकथ्य, अस्पृश्य, किन्तु फिर भी बोझिल और प्रकम्पमय और घना-सा फैल रहा था...

मेरी आहट सुनते ही मालती बाहर निकली। मुझे देखकर, पहचानकर उसकी मुरझायी हुई मुख-मुद्रा तनिक-सी मीठे विस्मय से जागी-सी और फिर पूर्ववत् हो गयी। उसने कहा, "आ जाओ।" और बिना उत्तर की प्रतीक्षा किये भीतर की ओर चली। मैं भी उसके पीछे हो लिया।

भीतर पहुँचकर मैंने पूछा, "वे यहाँ नहीं हैं?"

"अभी आए नहीं, दफ्तर में हैं। थोड़ी देर में आ जाएँगे। कोई डेढ़-दो बजे आया करते हैं।"

"कब से गये हुए हैं?"

"सवेरे उठते ही चले जाते हैं।"

मैं 'हूँ' कहकर पूछने को हुआ, "और तुम इतनी देर क्या करती हो?" पर फिर सोचा आते ही एकाएक प्रश्न ठीक नहीं है। मैं कमरे के चारों ओर देखने लगा।

मालती एक पंखा उठा लायी, और मुझे हवा करने लगी। मैंने आपत्ति करते हुए कहा, "नहीं, मुझे नहीं चाहिए।" पर वह नहीं मानी, बोली, "वाह। चाहिए कैसे नहीं? इतनी धूप में तो आए हो। यहाँ तो..."

मैंने कहा, "अच्छा, लाओ मुझे दे दो।"

वह शायद, 'ना' करनेवाली थी, पर तभी दूसरे कमरे से शिशु के रोने की आवाज सुनकर उसने चुपचाप पंखा मुझे दे दिया और घुटनों पर हाथ टेककर एक थकी हुई 'हुँह' करके उठी और भीतर चली गयी। मैं उसके जाते हुए, दुबले शरीर को देखकर सोचता रहा। यह क्या है... यह कैसी छाया-सी इस घर पर छायी हुई है...

मालती मेरी दूर के रिश्ते की बहिन है, किन्तु उसे सखी कहना ही उचित है, क्योंकि हमारा परस्पर सम्बन्ध सख्य का ही रहा है। हम बचपन से इकट्ठे खेले हैं, इकट्ठे लड़े और पिटे हंक और हमारी पढ़ाई भी बहुत-सी इकट्ठे ही हुई थी, और हमारे व्यवहार में सदा सख्या की स्वेच्छा और स्वच्छन्दता रही है, वह कभी भ्रातृत्व के, या बड़े-छोटेपन के बन्धनों में नहीं घिरा...

मैं आज कोई चार वर्ष बाद उसे देखने आया हूँ। जब मैंने उसे इससे पूर्व देखा था, तब वह लडक़ी ही थी, अब वह विवाहिता है, एक बच्चे की माँ भी है। इससे कोई परिवर्तन उसमें आया होगा और यदि आया होगा तो क्या, यह मैंने अभी सोचा नहीं था, किन्तु अब उसकी पीठ की ओर देखता हुआ मैं सोच रहा था, यह कैसी छाया इस घर पर छायी हुई है... और विशेषतया मालती पर...

मालती बच्चे को लेकर लौट आयी और फिर मुझसे कुछ दूर नीचे बिछी हुई दरी पर बैठ गयी। मैंने अपनी कुरसी घुमाकर कुछ उसकी ओर उन्मुख होकर पूछा, "इसका नाम क्या है?"

मालती ने बच्चों की ओर देखते हुए उत्तर दिया, "नाम तो कोई निश्चित नहीं किया, वैसे टिटी कहते हैं।"

मैंने उसे बुलाया, "टिटी, टीटी, आ जा" पर वह अपनी बड़ी-बड़ी आँखों से मेरी ओर देखता हुआ अपनी माँ से चिपट गया, और रुआँसा-सा होकर कहने लगा, "उहुँ-उहुँ-उहुँ-ऊँ..."

मालती ने फिर उसकी ओर एक नजर देखा, और फिर बाहर आँगन की ओर देखने ली...

काफ़ी देर मौन रहा। थोड़ी देर तक तो वह मौन आकस्मिक ही था, जिसमें मैं प्रतीक्षा में था कि मालती कुछ पूछे, किन्तु उसके बाद एकाएक मुझे ध्यान हुआ, मालती ने कोई बात ही नहीं की... यह भी नहीं पूछा कि मैं कैसा हूँ, कैसे आया हूँ... चुप बैठी है, क्या विवाह के दो वर्ष में ही वह बीते दिन भूल गयी? या अब मुझे दूर इस विशेष अन्तर पर-रखना चाहती है? क्योंकि वह निर्बाध स्वच्छन्दता अब तो नहीं हो सकती... पर फिर भी, ऐसा मौन, जैसा अजनबी से भी नहीं होना चाहिए...

मैंने कुछ खिन्न-सा होकर, दूसरी ओर देखते हुए कहा, "जान पड़ता है, तुम्हें मेरे आने से विशेष प्रसन्नता नहीं हुई-"

उसने एकाएक चौंककर कहा, "हूँ?"

यह 'हूँ' प्रश्न-सूचक था, किन्तु इसलिए नहीं कि मालती ने मेरी बात सुनी नहीं थी, केवल विस्मय के कारण। इसलिए मैंने अपनी बात दुहरायी नहीं, चुप बैठा रहा। मालती कुछ बोली ही नहीं, थोड़ी देर बाद मैंने उसकी ओर देखा। वह एकटक मेरी ओर देख रही थी, किन्तु मेरे उधर उन्मुख होते ही उसने आँखें नीची कर लीं। फिर भी मैंने देख, उन आँखों में कुछ विचित्र-सा भाव था, मानो मालती के भीतर कहीं कुछ चेष्टा कर रहा हो, किसी बीती हुई बात को याद करने की, किसी बिखरे हुए वायुमंडल को पुन: जगाकर गतिमान करने कभी, किसी टूटे हुए व्यवहार-तन्तु को पुनरुज्जीवित करने

> मालती कुछ नहीं पढ़ती थी, उसके माता-पिता तंग थे, एक दिन उसके पिता ने उसे एक पुस्तक लाकर दी और कहा कि इसके बीस पेज रोज पढ़ा करो, हफ्ते भर बाद मैं देखूँ कि इसे समाप्त कर चुकी हो, नहीं तो मार-मारकर चमड़ी उधेड़ दूँगा, मालती ने चुपचाप किताब ले ली, पर क्या उसने पढ़ी? वह नित्य ही उसके दस पन्ने, बीस पेज, फाडक़र फेंक देती, अपने खेल में किसी भाँति फ़र्क़ न पड़ने देती। जब आठवें दिन उसके पिता ने पूछा, "किताब समाप्त कर ली?" तो उत्तर दिया- "हाँ, कर ली," पिता ने कहा, "लाओ मैं प्रश्न पूछूँगा," तो चुप खड़ी रही। पिता ने फिर कहा, तो उद्धत स्वर में बोली, "किताब मैंने फाडक़र फेंक दी है, मैं नहीं पढ़ूँगी।" उसके बाद वह बहुत पिटी, पर वह अलग बात है। इस समय मैं यही सोच रहा था कि वही उद्धत और चंचल मालती आज कितनी सीधी हो गयी है, कितनी शान्त, और एक अखबार के टुकड़े को

मालती के पति का नाम है महेश्वर। वह एक पहाड़ी गाँव में सरकारी डिस्पेन्सरी के डॉक्टर हैं, उसकी हैसियत से इन क्वार्टरों में रहते हैं। प्रात:काल सात बजे डिस्पेंसरी चले जाते हैं और डेढ़ या दो बजे लौटते हैं, उसके बाद दोपहर-भर छुट्टी रहती है, केवल शाम को एक-दो घंटे फिर चक्कर लगाने के लिए जाते हैं, डिस्पेंसरी के साथ के छोटे-से अस्पातल में पड़े हुए रोगियों को देखने और अन्य ज़रूरी हिदायतें करने... उनका जीवन भी बिलकुल एक निर्दिष्ट ढर्रे पर चलता है, नित्य वही काम, उसी प्रकार के मरीज, वही हिदायतें, वही नुस्खे, वही दवाइयाँ। वह स्वयं उकताये हुए हैं और इसलिए और साथ ही इस भयंकर गरमी के कारण वह अपने फ़ुरसत के समय में भी सुस्त ही रहते हैं... मालती हम दोनों के लिए खाना ले आयी। मैंने पूछा, ''तुम नहीं खाओगी? या खा चुकीं?'' महेश्वर बोले, कुछ हँसकर, ''वह पीछे खाया करती है...''

की, और चेष्टा में सफल न हो रहा हो... वैसे जैसे बहुत देर से प्रयोग में न लाये हुए अंग को व्यक्ति एकाएक उठाने लगे और पाए कि वह उठता ही नहीं है, चिरविस्मृति में मानो मर गया है, उतने क्षीण बल से (यद्यपि वह सारा प्राप्य बल है) उठ नहीं सकता... मुझे ऐसा जान पड़ा मानो किसी जीवित प्राणी के गले में किसी मृत जन्तु का तौक डाल दिया गया हो, वह उसे उतारकर फेंकना चाहे, पर उतार न पाए...

तभी किसी ने किवाड़ खटखटाये। मैंने मालती की ओर देखा, पर वह हिली नहीं। जब किवाड़ दूसरी बार खटखटाये गये, तब वह शिशु को अलग करके उठी और किवाड़ खोलने गयी।

वे, यानी मालती के पति आए। मैंने उन्हें पहली बार देखा था, यद्यपि फोटो से उन्हें पहचानता था। परिचय हुआ। मालती खाना तैयार करने आँगन में चली गयी, और हम दोनों भीतर बैठकर बातचीत करने लगे, उनकी नौकरी के बारे में, उनके जीवन के बारे में, उस स्थान के बारे में, और ऐसे अन्य विषयों के बारे में जो पहले परिचय पर उठा करते हैं, एक तरह का स्वरक्षात्मक कवच बनकर...

मालती के पति का नाम है महेश्वर। वह एक पहाड़ी गाँव में सरकारी डिस्पेन्सरी के डॉक्टर हैं, उसकी हैसियत से इन क्वार्टरों में रहते हैं। प्रात:काल सात बजे डिस्पेंसरी चले जाते हैं और डेढ़ या दो बजे लौटते हैं, उसके बाद दोपहर-भर छुट्टी रहती है, केवल शाम को एक-दो घंटे फिर चक्कर लगाने के लिए जाते हैं, डिस्पेंसरी के साथ के छोटे-से अस्पातल में पड़े हुए रोगियों को देखने और अन्य ज़रूरी हिदायतें करने... उनका जीवन भी बिलकुल एक निर्दिष्ट ढर्रे पर चलता है, नित्य वही काम, उसी प्रकार के मरीज, वही हिदायतें, वही नुस्खे, वही दवाइयाँ। वह स्वयं उकताये हुए हैं और इसलिए और साथ ही इस भयंकर गरमी के कारण वह अपने फ़ुरसत के समय में भी सुस्त ही रहते हैं...

मालती हम दोनों के लिए खाना ले आयी। मैंने पूछा, ''तुम नहीं खाओगी? या खा चुकीं?''

महेश्वर बोले, कुछ हँसकर, ''वह पीछे खाया करती है...'' पति ढाई बजे खाना खाने आते हैं, इसलिए पत्नी तीन बजे तक भूखी बैठी रहेगी!

महेश्वर खाना आरम्भ करते हुए मेरी ओर देखकर बोले, ''आपको तो खाने का मजा क्या ही आएगा ऐसे बेवक्त खा रहे हैं?'' मैंने उत्तर दिया, ''वाह! देर से खाने पर तो और भी अच्छा लगता है, भूख बढ़ी हुई होती है, पर शायद मालती बहिन को कष्ट होगा।''

मालती टोककर बोली, ''ऊहूँ, मेरे लिए तो यह नई बात नहीं है... रोज़ ही ऐसा होता है...''

मालती बच्चे को गोद में लिये हुए थी। बच्चा रो रहा था, पर उसकी ओर कोई भी ध्यान नहीं दे रहा था। मैंने कहा, ''यह रोता क्यों है?''

मालती बोली, ''हो ही गया है चिड़चिड़ा-सा, हमेशा ही ऐसा रहता है।'' फिर बच्चे को डाँटकर कहा, ''चुप कर।'' जिससे वह और भी रोने लगा, मालती ने भूमि पर बैठा दिया। और बोली, ''अच्छा ले, रो ले।'' और रोटी लेने आँगन की ओर चली गयी! जब हमने भोजन समाप्त किया तब तीन बजनेवाले थे, महेश्वर ने बताया कि उन्हें आज जल्दी अस्पताल जाना है, वहाँ एक-दो चिन्ताजनक केस आए हुए हैं, जिनका ऑपरेशन करना पड़ेगा... दो की शायद टाँग काटनी पड़े, गैंग्रीन हो गया है... थोड़ी ही देर में वह चले गये। मालती किवाड़ बन्द कर आयी और मेरे पास बैठने ही लगी थी कि मैंने कहा, ''अब खाना तो खा लो, मैं उतनी देर टिटी से खेलता हूँ।''

वह बोली, ''खा लूँगी, मेरे खाने की कौन बात है,'' किन्तु चली गयी। मैं टिटी को हाथ में लेकर झुलाने लगा, जिससे वह कुछ देर के लिए शान्त हो गया। दूर... शायद अस्पताल में ही, तीन खडके। एकाएक मैं चौंका, मैंने सुना, मालती वहीं आँगन में बैठी अपने-आप ही एक लम्बी-सी थकी हुई साँस के साथ कह रही है, ''तीन बज गये...'' मानो बड़ी तपस्या के बाद कोई कार्य सम्पन्न हो गया हो...

थोड़ी ही देर में मालती फिर आ गयी, मैंने पूछा, ''तुम्हारे लिए कुछ बचा भी था? सब कुछ तो...''

''बहुत था।''

''हाँ, बहुत था, भाजी तो सारी मैं ही खा गया था, वहाँ बचा कुछ होगा नहीं, यों ही रौब तो न जमाओ कि बहुत था।'' मैंने हँसकर कहा।

मालती मानो किसी और विषय की बात कहती हुई बोली, ''यहाँ सब्जी-वब्जी तो कुछ होती ही नहीं, कोई आता-जाता है, तो नीचे से मँगा लेते हैं; मुझे आए पन्द्रह दिन हुए हैं, जो सब्जी साथ लाए थे वही अभी बरती जा रही है...''

मैंने पूछा, ''नौकर कोई नहीं है?''

''कोई ठीक मिला नहीं, शायद दो-एक दिन में हो जाए।''

''बरतन भी तुम्हीं माँजती हो?''

''और कौन?'' कहकर मालती क्षण-भर आँगन में जाकर लौट आयी। मैंने पूछा, ''कहाँ गयी थीं?''

''आज पानी ही नहीं है, बरतन कैसे मँजेंगे?''

''क्यों, पानी को क्या हुआ?''

''रोज ही होता है... कभी वक्त पर तो आता नहीं, आज शाम को सात बजे आएगा, तब बरतन मँजेंगे।'' ''चलो तुम्हें सात बजे तक तो छुट्टी हुई'' कहते हुए मैं मन-ही-मन सोचने लगा, ''अब इसे रात के ग्यारह बजे तक काम करना पड़ेगा, छुट्टी क्या खाक हुई?''

यही उसने कहा। मेरे पास कोई उत्तर नहीं था, पर मेरी सहायता टिटी ने कह, एकाएक फिर रोने लगा और मालती के पास जाने की चेष्टा करने लगा। मैंने उसे दे दिया।

MONAD
UNIVERSITY
Recognized & Approved by :
आज़ादी का अमृत महोत्सव
बेटी बचाओ
बेटी पढ़ाओ
शिक्षित महिला - सशक्त भारत
ADMISSIONS OPEN 2024-25
*Free Education for Girls.
COURSES OFFERED

काजल फुट वेयर
हमारे यहां सभी प्रकार के फुटवेयर उपलब्ध है
कर्जत स्टेशन के पास (वेस्ट)
स्पेशल ऑफर के साथ

थोड़ी देर फिर मौन रहा, मैंने जेब से अपनी नोटबुक निकाली और पिछले दिनों के लिखे हुए नोट देखने लगा, तब मालती को याद आया कि उसने मेरे आने का कारण तो पूछा नहीं, और बोली, ''यहाँ आए कैसे?''

मैंने कहा ही तो, ''अच्छा, अब याद आया? तुमसे मिलने आया था, और क्या करने?''

''तो दो-एक दिन रहोगे न?''

''नहीं, कल चला जाऊँगा, ज़रूरी जाना है।''

मालती कुछ नहीं बोली, कुछ खिन्न-सी हो गयी। मैं फिर नोट बुक की तरफ़ देखने लगा।

थोड़ी देर बाद मुझे ही ध्यान हुआ, मैं आया तो हूँ मालती से मिलने किन्तु, यहाँ वह बात करने को बैठी है और मैं पढ़ रहा हूँ, पर बात भी क्या की जाए? मुझे ऐसा लग रहा था कि इस घर पर जो छाया घिरी हुई है, वह अज्ञात रहकर भी मानो मुझे भी वश कर रही है, मैं भी वैसा ही नीरस निर्जीव-सा हो रहा हूँ, जैसे-हाँ, जैसे यह घर, जैसे मालती...

मैंने पूछा, ''तुम कुछ पढ़ती-लिखती नहीं?'' मैं चारों ओर देखने लगा कि कहीं किताबें दीख पड़ें।

''यहाँ!'' कहकर मालती थोड़ा-सा हँस दी। वह हँसी कह रही थी, ''यहाँ पढने को क्या?''

मैंने कहा, ''अच्छा, मैं वापस जाकर जरूर कुछ पुस्तकें भेजूँगा...'' और वार्तालाप फिर समाप्त हो गया...

थोड़ी देर बाद मालती ने फिर पूछा, ''आए कैसे हो, लारी में?''

''पैदल।''

''इतनी दूर? बड़ी हिम्मत की।''

''आखिर तुमसे मिलने आया हूँ।''

''ऐसे ही आये हो?''

''नहीं, कुली पीछे आ रहा है,सामान लेकर। मैंने सोचा, बिस्तरा ले ही चलूँ।''

''अच्छा किया, यहाँ तो बस...'' कहकर मालती चुप रह गयी फिर बोली, ''तब तुम थके होगे, लेट जाओ।''

''नहीं बिलकुल नहीं थका।''

''रहने भी दो, थके नहीं, भला थके हैं?''

''और तुम क्या करोगी?''

''मैं बरतन माँज रखती हूँ, पानी आएगा तो धुल जाएँगे।''

थोड़ी देर में मालती उठी और चली गयी, टिटी को साथ लेकर। तब मैं भी लेट गया और छत की ओर दखेने लगा... मेरे विचारों के साथ आँगन से आती हुई बरतनों के घिसने की खन-खन ध्वनि मिलकर एक विचित्र एक-स्वर उत्पन्न करने लगी, जिसके कारण मेरे अंग धीरे-धीरे ढीले पडने लगे, मैं ऊँघने लगा...

एकाएक वह एक-स्वर टूट गया-मौन हो गया। इससे मेरी तन्द्रा भी टूटी, मैं उस मौन में सुनने लगा...

चार खडक् रहे थे और इसी का पहला घंटा सुनकर मालती रुक गयी थी...

वही तीन बजेवाली बात मैंने फिर देखी, अबकी बार और उग्र रूप में। मैंने सुना, मालती एक बिलकुल अनैच्छिक, अनुभूतिहीन, नीरस यन्त्रवत- वह भी थके हुए यन्त्र के-से स्वर में कह रही है, ''चार बज गये'' मानो इस अनैच्छिक समय गिनने-गिनने में ही उसका मशीन-तुल्य जीवन बीतता हो, वैसे ही, जैसे मोटर का स्पीडोमीटर यन्त्रवत् फासला नापता जाता है, और यन्त्रवत् विश्रान्त स्वर में कहता है (किससे!) कि मैंने अपने अमित शून्यपथ का इतना अंश तय कर लिया... न जाने कब, कैसे मुझे नींद आ गयी।

तब छह कभी के बज चुके थे,जब किसी के आने की आहट से मेरी नींद खुली, और मैं ने देखा कि महेश्वर लौट आये हैं, और उनके साथ ही बिस्तर लिये हुए मेरा कुली। मैं मुँह धोने को पानी माँगने को ही था कि मुझे याद आया, पानी नहीं होगा। मैंने हाथों से मुँह पोंछते-पोंछते महेश्वर से पूछा, ''आपने बड़ी देर की?''

उन्होंने किंचित् ग्लानि -भरे स्वर में कहा, ''हाँ, आज वह गैंग्रीन का ऑपरेशन करना ही पड़ा। एक कर आया हूँ, दूसरे को एम्बुलेंस में बड़े अस्पताल भिजवा दिया है।''

मैंने पूछा, ''गैंग्रीन कैसे हो गया?''

''एक काँटा चुभा था, उसी से हो गया, बड़े लापरवाह लोग होते हैं यहाँ के...''

मैंने पूछा, ''यहाँ आपको केस अच्छे मिल जाते हैं? आय के लिहाज से नहीं, डॉक्टरी के अभ्यास के लिए?''

बोले, ''हाँ, मिल ही जाते हैं, यही गैंग्रीन, हर दूसरे-चौथे दिन एक केस आ जाता है, नीचे बड़े अस्पताल में भी...''

मालती आँगन से ही सुन रही थी, अब आ गयी, बोली,''हाँ, केस बनाते देर क्या लगती है? काँटा चुभा था, इस पर टाँग काटनी पड़े, यह भी कोई डॉक्टरी है? हर दूसरे दिन किसी की टाँग, किसी की बाँह काट आते हैं, इसी का नाम है अच्छा अभ्यास!''

महेश्वर हँसे, बोले, ''न काटें तो उसकी जान गँवाएँ?''

''हाँ, पहले तो दुनिया में काँटे ही नहीं होते होंगे? आज तक तो सुना नहीं था कि काँटों के चुभने से मर जाते हैं...''

महेश्वर ने उत्तर नहीं दिया, मुस्करा दिये, मालती मेरी ओर देखकर बोली, ''ऐसे ही होते हैं डॉक्टर, सरकारी अस्पताल है न, क्या परवाह है। मैं तो रोज ही ऐसी बातें सुनती हूँ! अब कोई मर-मुर जाए तो खयाल ही नहीं आता। पहले तो रात-रात भर नींद नहीं आया करती थी।''

तभी आँगन में खुले हुए नल ने कहा, टिप् टिप् टिप् टिप् टिप् टिप्...

मालती ने कहा, ''पानी!'' और उठकर चली गयी। खनखनाहट से हमने जाना, बरतन धोये जाने लगे हैं...

टिटी महेश्वर की टाँगों के सहारे खड़ा मेरी ओर देख रहा था, अब एकाएक उन्हें छोड़ मालती की ओर खिसकता हुआ चला। महेश्वर ने कहा, ''उधर मत जा!'' और उसे गोद में उठा लिया, वह मचलने और चिल्ला-चिल्लाकर रोने लगा।

महेश्वर बोले... ''अब रो-रोकर सो जाएगा, तभी घर में चैन होगी।''

मैंने पूछा, ''आप लोग भीतर ही सोते हैं? गरमी तो बहुत होती है?''

''होने को तो मच्छर भी बहुत होते हैं, पर यह लोहे के पलंग उठाकर बाहर कौन ले जाए? अबकी नीचे जाएँगे तो चारपाइयाँ ले आएँगे।'' फिर कुछ रुककर बोले, ''अच्छा तो बाहर ही सोएँगे। आपके आने का इतना लाभ ही होगा।''

टिटी अभी तक रोता ही जा रहा था। महेश्वर ने उसे एक पलंग पर बिठा दिया और पलंग बाहर खींचने लगे, मैंने कहा, ''मैं मदद करता हूँ,'' और दूसरी ओर से पलंग उठाकर निकलवा दिया।

अब हम तीनों... महेश्वर, टिटी और मैं पलंग पर बैठ गये और वार्तालाप के लिए उपयुक्त विषय न पाकर उस कमी को छुपाने के लिए टिटी से खेलने लगे, बाहर आकर वह कुछ चुप हो गया था, किन्तु बीचबीच में जैसे एकाएक कोई भूला हुआ कर्तव्य याद करके रो उठता था, और फिर एकदम चुप हो जाता था... और कभी-कभी हम हँस पड़ते थे, या महेश्वर उसके बारे में कुछ बात कह देते थे...

मालती बरतन धो चुकी थी। जब वह उन्हें लेकर आँगन के एक ओर रसोई छप्पर की ओर चली, तब महेश्वर ने कहा, ''थोड़े-से आम लाया हूँ, वह भी धो लेना।''

''कहाँ हैं?''

Ram Creations
Jewelry & Gifts
28974 Orchard Lake Rd, Farmington Hills | ramcreations.com | (248) 851-1400

WORLD PLAYER
WORLD PLAYER MENSWEAR
MEGABUY ₹149-499
SAVE ₹ 100
MENS 100% CORDUROY 16 WALE WASHED SHIRTS MRP ₹ 599
MEGABUY ₹ 499
SAVE ₹ 100
MENS 100% COTTON SEMI FORMAL SHIRTS MRP ₹ 599
MEGABUY ₹ 499
SAVE ₹ 100
MENS FORMAL TROUSERS MRP ₹ 699
MEGABUY ₹ 599

''अँगीठी पर रखे हैं, कागज में लिपटे हुए।''

मालती ने भीतर जाकर आम उठाये और अपने आँचल में डाल लिये। जिस कागज में वे लिपटे हुए थे वह किसी पुराने अखबार का टुकड़ा था। मालती चलती-चलती सन्ध्या के उस क्षीण प्रकाश में उसी को पढ़ती जा रही थी... वह नल के पास जाकर खड़ी उसे पढ़ती रही, जब दोनों ओर पढ़ चुकी, तब एक लम्बी साँस लेकर उसे फेंककर आम धोने लगी।

मुझे एकाएक याद आया... बहुत दिनों की बात थी... जब हम अभी स्कूल में भरती हुए ही थे। जब हमारा सबसे बड़ा सुख, सबसे बड़ी विजय थी हाजिरी हो चुकने के बाद चोरी के क्लास से निकल भागना और स्कूल से कुछ दूरी पर आम के बगीचे में पेड़ों में चढक़र कच्ची आमियाँ तोड़-तोड़ खाना। मुझे याद आया... कभी जब मैं भाग आता और मालती नहीं आ पाती थी तब मैं भी खिन्न-मन लौट आया करता था। मालती कुछ नहीं पढ़ती थी, उसके माता-पिता तंग थे, एक दिन उसके पिता ने उसे एक पुस्तक लाकर दी और कहा कि इसके बीस पेज रोज पढ़ा करो, हफ्ते भर बाद मैं देखूँ कि इसे समाप्त कर चुकी हो, नहीं तो मार-मारकर चमड़ी उधेड़ दूँगा, मालती ने चुपचाप किताब ले ली, पर क्या उसने पढ़ी? वह नित्य ही उसके दस पन्ने, बीस पेज, फाडक़र फेंक देती, अपने खेल में किसी भाँति फ़र्क़ न पड़ने देती। जब आठवें दिन उसके पिता ने पूछा, ''किताब समाप्त कर ली?'' तो उत्तर दिया- ''हाँ, कर ली,'' पिता ने कहा, ''लाओ मैं प्रश्न पूछूँगा,'' तो चुप खड़ी रही। पिता ने फिर कहा, तो उद्धत स्वर में बोली, ''किताब मैंने फाडक़र फेंक दी है, मैं नहीं पढ़ूँगी।'' उसके बाद वह बहुत पिटी, पर वह अलग बात है। इस समय मैं यही सोच रहा था कि वही उद्धत और चंचल मालती आज कितनी सीधी हो गयी है, कितनी शान्त, और एक अखबार के टुकड़े को तरसती है.... यह क्या, यह... तभी महेश्वर ने पूछा, ''रोटी कब बनेगी?''

''बस अभी बनाती हूँ।''

पर अबकी बार जब मालती रसोई की ओर चली, तब टिटी की कर्तव्यभावना बहुत विस्तीर्ण हो गयी,वह मालती की, ओर हाथ बढ़ाकर रोने लगा और नहीं माना, मालती उसे भी गोद में लेकर चली गयी, रसोई में बैठकर एक हाथ से उसे थपकने और दूसरे से कई एक छोटे-छोटे डिब्बे उठाकर अपने सामने रखने लगी...

और हम दोनों चुपचाप रात्रि की, और भोजन की, और एक-दूसरे के कुछ कहने की, और न जाने किस-किस न्यूनता की पूर्ति की प्रतीक्षा करने लगे।

हम भोजन कर चुके थे और बिस्तरों पर लेट गये थे और टिटी सो गया था। मालती पलंग के एक ओर मोमजामा बिछाकर उसे उस पर लिटा गयी थी। वह सो गया था, पर नींद में कभी-कभी चौंक उठता था। एक बार तो उठकर बैठ भी गया था, पर तुरन्त ही लेट गया।

मैंने महेश्वर से पूछा, ''आप तो थके होंगे, सो जाइए।'' वह बोले, ''थके तो आप अधिक होंगे... अठारह मील पैदल चलकर आये हैं।'' किन्तु उनके स्वर ने मानो जोड़ दिया, ''थका तो मैं भी हूँ।''

मैं चुप रहा, थोड़ी देर में किसी अपर संज्ञा ने मुझे बताया, वह ऊँघ रहे हैं। तब लगभग साढ़े दस बजे थे, मालती भोजन कर रही थी। मैं थोड़ी देर मालती की ओर देखता रहा, वह किसी विचार में-यद्यपि बहुत गहरे विचार में नहीं, लीन हुई धीरे-धीरे खाना खा रही थी, फिर मैं इधर-उधर खिसककर, पर आराम से होकर, आकाश की ओर देखने लगा। पूर्णिमा थी, आकाश अनभ्र था। मैंने देखा.. उस सरकारी क्वार्टर की दिन में अत्यन्त शुष्क और नीरस लगनेवाली स्लेट की छत भी चाँदनी में चमक रही है, अत्यन्त शीतलता और स्निग्धता से छलक रही है, मानो चन्द्रिका उन पर से बहती हुई आ रही हो, झर रही हो...

मैंने देखा, पवन में चीड़ के वृक्ष... गरमी से सूखकर मटमैले हुए चीड़ के वृक्ष... धीरे-धीरे गा रहे हों... कोई राग जो कोमल है, किन्तु करुण नहीं, अशान्तिमय है, किन्तु उद्वेगमय नहीं... मैंने देखा, प्रकाश से धुँधले नीले आकाश के तट पर जो चमगादड़ नीरव उड़ान से चक्कर काट रहे हैं, वे भी सुन्दर दीखते हैं... मैंने देखा... दिन-भर की तपन, अशान्ति, थकान, दाह, पहाड़ों में से भाप से उठकर वातावरण में खोये जा रहे हैं, जिसे ग्रहण करने के लिए पर्वत-शिशुओं ने अपनी चीड़ वृक्षरूपी भुजाएँ आकाश की ओर बढ़ा रखी हैं..

पर यह सब मैंने ही देखा, अकेले मैंने... महेश्वर ऊँघ रहे थे और मालती उस समय भोजन से निवृत्त होकर दही जमाने के लिए मिट्टी का बरतन गरम पानी से धो रही थी, और कह रही थी... ''अभी छुट्टी हुई जाती है।'' और मेरे कहने पर ही कि ''ग्यारह बजनेवाले हैं'' धीरे से सिर हिलाकर जता रही थी कि रोज ही इतने बज जाते हैं... मालती ने वह सब कुछ नहीं देखा, मालती का जीवन अपनी रोज की नियत गति से बहा जा रहा था और एक चन्द्रमा की चन्द्रिका के लिए, एक संसार के लिए, रुकने को तैयार नहीं था... चाँदनी में शिशु कैसा लगता है, इस अलस जिज्ञासा ने मैंने टिटी की ओर देखा और वह एकाएक मानो किसी शैशवोचित वामता से उठा और खिसककर पलंग से नीचे गिर पड़ा और चिल्ला-चिल्लाकर रोने लगा। महेश्वर ने चौंककर कहा, ''क्या हुआ?'' मैं झपटकर उसे उठाने दौड़ा, मालती रसोई से बाहर निकल आयी, मैंने उस 'खट्' शब्द को याद करके धीरे से करुणा-भरे स्वर में कहा, ''चोट बहुत लग गयी बेचारे के।''

यह सब मानो एक ही क्षण में, एक ही क्रिया की गति में हो गया। मालती ने रोते हुए शिशु को मुझसे लेने के लिए, हाथ बढ़ाते हुए कहा, ''इसके चोटें लगती ही रहती हैं, रोज ही गिर पड़ता है।''

एक छोटे क्षण-भर के लिए मैं स्तब्ध हो गया, फिर एकाएक मेरे मन ने, मेरे समूचे अस्तित्व ने, विद्रोह के स्वर में कहा-मेरे मन ने भीतर ही, बाहर एक शब्द भी नहीं निकला -''माँ, युवती माँ, यह तुम्हारे हृदय को क्या हो गया है, जो तुम अपने एकमात्र बच्चे के गिरने पर ऐसी बात कह सकती हो-और यह अभी, जब तुम्हारा सारा जीवन तुम्हारे आगे है?'' और, तब एकाएक मैंने जाना कि वह भावना मिथ्या नहीं है, मैंने देखा कि सचमुच उस कुटुम्ब में कोई गहरी भयंकर छाया घर कर गयी है, उसके जीवन के इस पहले ही यौवन में घुन की तरह लग गयी है, उसका इतना अभिन्न अंग हो गयी है कि वे उसे पहचानते ही नहीं, उसी की परिधि में घिरे हुए चले जा रहे हैं। इतना ही नहीं, मैंने उस छाया को देख भी लिया...

इतनी देर में, पूर्ववत् शान्ति हो गयी था। महेश्वर फिर लेटकर ऊँघ रहे थे। टिटी मालती के लेटे हुए शरीर से चिपटकर चुप हो गया था, यद्यपि कभी एक-आध सिसकी उसके छोटे-से शरीर को हिला देती थी। मैं भी अनुभव करने लगा था कि बिस्तर अच्छा-सा लग रहा है। मालती चुपचाप आकाश में देख रही थी, किन्तु क्या चन्द्रिका को या तारों को?

तभी ग्यारह का घंटा बजा, मैंने अपनी भारी हो रही पलकें उठाकर अकस्मात् किसी अस्पष्ट प्रतीक्षा से मालती की ओर देखा। ग्यारह के पहले घंटे की खडक़न के साथ ही मालती की छाती एकाएक फफोले की भाँति उठी और धीरे-धीरे बैठने लगी, और घंटा-ध्वनि के कम्पन के साथ ही मूक हो जानेवाली आवाज में उसने कहा, ''ग्यारह बज गये...''

-अज्ञेय

Good Vibes Onion Hairfall Control Oil I Strengthening I Hair Growth I No Parabens, No Sulphates, No Mineral Oil, No Animal Testing (100 ml)

Good Vibes Argan Oil Hairfall Control Vitalizing Serum I Frizz Control, Shine, Stregthening I No Parabens, No Sulphates, No Animal Testing (50 ml)

प्रधानमंत्री ने पवित्र पिपरहवा निशानियों की १२७ वर्षों के बाद देश में वापसी का स्वागत

PIB Delhi

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने भगवान बुद्ध के पवित्र पिपरहवा निशानियों की १२७ वर्षों के लंबे अंतराल के बाद देश में वापसी की सराहना करते हुए इसे देश की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत के लिए एक गौरवपूर्ण और खुशी का क्षण बताया। 'विकास भी, विरासत भी' की भावना को प्रतिबिंबित करते हुए एक वक्तव्य में प्रधानमंत्री ने भगवान बुद्ध के उपदेशों के प्रति भारत की अपार श्रद्धा तथा अपनी आध्यात्मिक एवं ऐतिहासिक विरासत को संरक्षित करने के प्रति राष्ट्र की अटूट प्रतिबद्धता को दर्शाया। एक्स पर एक पोस्ट में श्री मोदी ने लिखाः 'हमारी सांस्कृतिक विरासत के लिए एक खुशी का दिन!

भगवान बुद्ध की पवित्र पिपरहवा निशानियां १२७ वर्षों के लंबे अंतराल के बाद स्वदेश वापस आ गई हैं, यह जानकर हर भारतीय को गर्व होगा। ये पवित्र निशानियां भगवान बुद्ध और उनकी महान शिक्षाओं के साथ भारत के घनिष्ठ संबंध को दर्शाती हैं। यह हमारी गौरवशाली संस्कृति के विभिन्न पहलुओं के संरक्षण और सुरक्षा के प्रति हमारी प्रतिबद्धता को भी दर्शाती है। ' विकास भी विरासत भी' 'यह स्मरणीय है कि पिपरहवा निशानियां १८९८ में खोजी गई थीं, किंतु औपनिवेशिक काल के दौरान इन्हें भारत से बाहर ले जाया गया था। जब इस वर्ष की शुरुआत में ये एक अंतरराष्ट्रीय नीलामी में दिखाई दीं, तो हमने यह सुनिश्चित करने के लिए काम किया कि ये स्वदेश वापस आ जाएं। मैं इस प्रयास में शामिल सभी लोगों की सराहना करता हूं।'

SAI RC मुंबई ने FIT इंडिया के 'संडे ऑन साइकिल' अभियान के लिए भारतीय डाक के साथ सहयोग किया

PIB Mumbai

फिटनेस और सार्वजनिक सेवा के जीवंत उत्सव में, भारतीय खेल प्राधिकरण - क्षेत्रीय केंद्र मुंबई ने भारतीय डाक के सहयोग से ०३ अगस्त २०२५ को #SundaysOnCycle के एक विशेष संस्करण का आयोजन किया। यह कार्यक्रम चार स्थानों पर एक साथ आयोजित किया गया थाः मुंबई जीपीओ, कर्जत पोस्ट ऑफिस, सताना पोस्ट ऑफिस, और एसएआई एनसीओई छत्रपति संभाजी नगर (छत्रपति संभाजी नगर पोस्टल डिवीजन के सहयोग से), सामूहिक रूप से ३५० से अधिक साइकिल उत्साही लोगों की भागीदारी को आकर्षित करते हुए। उल्लेखनीय उपस्थित लोगों में निदेशक, डाक सेवाओं के सहायक निदेशक, उप निदेशक (प्रशासन), प्रशासनिक कर्मचारियों और डाकियों के साथ शामिल थे।

मुंबई जीपीओ में सवारी को मुंबई जीपीओ की निदेशक श्रीमती रेखा रिजवी ने औपचारिक रूप से हरी झंडी दिखाई। उसने एक प्रेरणादायक संदेश साझा कियाः उन्होंने कहा, ''आइए इस राइड से फिटनेस का संदेश मिले और नागरिकों को मोटापे से लड़ने के लिए प्रेरित किया जाए। आज, हमारे डाकिए सिर्फ पत्र नहीं पहुंचा रहे हैं-वे कार्रवाई के लिए एक कॉल दे रहे हैं: स्वास्थ्य के लिए सवारी, परिवर्तन के लिए सवारी! साइकिल मार्ग मुंबई जीपीओ से गेटवे ऑफ इंडिया तक विस्तारित हुआ, जो एक स्वस्थ कल की ओर यात्रा का प्रतीक है।

अन्य स्थानों पर गणमान्य व्यक्तिः कर्जतः श्री

राजाबाऊ एन. गाडगिल, सेवानिवृत्त पोस्टमास्टर, नरीमन लाइन डाकघर, सतनाः श्री साहेबराव म्हसडे, पोस्टमास्टर जनरल, सताना औरंगाबादः श्री असद शेख, सहायक निदेशक, भारतीय डाक सेवा यह पहल फिट इंडिया मूवमेंट और खेलो इंडिया अभियान के लक्ष्यों के साथ संरेखित है। SAI द्वारा समर्थित #SundaysOnCycle, पूरे भारत में गति प्राप्त करना जारी रखता है - सभी के लिए सुलभ स्थायी, समुदाय-आधारित फिटनेस आदतों को बढ़ावा देना। स्रोतः साई

Festive Collection
WELCOME THE FESTIVITIES WITH A BURST OF GLAMOUROUS COLOUR
SHOP NOW
www.festivacollection.com

आदिवासी अस्मिता का प्रतीक

झारखंड के 'दिशोम गुरु' शिबू सोरेन का निधन

JMM और झारखंड की आत्मा में आज भी 'गुरुजी' की विचारधारा ज़िंदा है। उन्होंने जिस सामाजिक न्याय, भूमि अधिकार और आदिवासी सम्मान की लड़ाई लड़ी, वह आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा बनी रहेगी। शिबू सोरेन का जीवन एक संघर्षशील योद्धा की कहानी है। वे भारतीय लोकतंत्र में उन दुर्लभ नेताओं में से एक रहे जिन्होंने जमीनी आंदोलनों को संसद तक पहुँचाया।उनकी कमी न केवल झारखंड को, बल्कि पूरे देश को महसूस होगी।

४ अगस्त २०२५ की सुबह भारतीय राजनीति के एक युग का अंत हो गया। झारखंड के पूर्व मुख्यमंत्री और झारखंड मुक्ति मोर्चा (JMM) के संस्थापक संरक्षक शिबू सोरेन, जिन्हें आदिवासी समाज में 'गुरुजी' या 'दिशोम गुरु' के नाम से जाना जाता था, का निधन हो गया। वे ८१ वर्ष के थे और लंबे समय से बीमार चल रहे थे।

दिल्ली के सर गंगा राम अस्पताल में उन्होंने अंतिम साँस ली। वे कई सप्ताह से किडनी संक्रमण और स्ट्रोक के बाद लाइफ सपोर्ट सिस्टम पर थे। उनके निधन की पुष्टि उनके बेटे और झारखंड के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने की। उन्होंने X (पूर्व ट्विटर) पर लिखा -

'आदरणीय दिशोम गुरुजी हम सभी को छोड़कर चले गए हैं... आज मैं शून्य हो गया हूं।'

शिबू सोरेन का जन्म ११ जनवरी १९४४ को झारखंड (तत्कालीन बिहार) के दुमका ज़िले के नेमरा गाँव में हुआ। वे संथाल जनजाति से ताल्लुक रखते थे। उनके पिता की हत्या महाजनों ने कर दी थी, जब वे किसानों के अधिकार के लिए लड़ रहे थे। यह घटना ही शिबू सोरेन के जीवन की दिशा तय करने वाली बनी।

उन्होंने 'दिकू भगाओ आंदोलन' के ज़रिए बाहरी लोगों के ज़मीन हथियाने के खिलाफ आदिवासियों को एकजुट किया। १९७२ में उन्होंने झारखंड मुक्ति मोर्चा (JMM) की स्थापना की, जिसने झारखंड को अलग राज्य बनाने के लिए लंबा संघर्ष किया। उनकी अगुवाई में यह आंदोलन इतना मजबूत हुआ कि १५ नवंबर २००० को झारखंड बिहार से अलग होकर भारत का २८वां राज्य बना।

राजनीतिक सफर, तीन बार मुख्यमंत्रीः
मार्च २००५ (९ दिन),
सितंबर २००८-जनवरी २००९
दिसंबर २००९-मई २०१०
८ बार लोकसभा सांसद और
दो बार राज्यसभा सदस्य

केंद्र में कोयला मंत्री भी रहे, उनका राजनीतिक जीवन संघर्षों से भरा रहा। झारखंड की राजनीति में वे जनभावनाओं के प्रतीक बने।

विवाद और न्याय

शिबू सोरेन का जीवन विवादों से अछूता नहीं रहा।

१९९३ के झामुमो रिश्वत कांड में उनका नाम आया।

१९९४ में निजी सचिव की हत्या के मामले में जेल भी जाना पड़ा, लेकिन बाद में वे बरी हो गए।

फिर भी उनकी जन-लोकप्रियता पर कोई असर नहीं पड़ा। शिबू सोरेन केवल एक नेता नहीं, एक विचारधारा थे। वे आदिवासी समाज के प्रतिनिधि और संघर्ष के प्रतीक रहे। उन्होंने यह सुनिश्चित किया कि आदिवासियों की पहचान, जमीन और जल-जंगल पर अधिकार सुरक्षित रहें। उनकी विचारधारा में प्रकृति, न्याय और समानता सर्वोपरि रहे।

श्रद्धांजलि और अंतिम संस्कार

उनकी मृत्यु पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू, विपक्ष के नेताओं, राज्य सरकारों और हज़ारों आम लोगों ने श्रद्धांजलि अर्पित की।

सोमवार को राज्यसभा की कार्यवाही भी वर्तमान सांसद शिबू सोरेन के निधन के बाद उनके सम्मान में पूरे दिन के लिए स्थगित कर दी गई। झारखंड विधानसभा का मौजूदा मानसून सत्र उनके निधन की घोषणा के बाद अनिश्चितकाल के लिए स्थगित कर दिया गया। मानसून सत्र एक अगस्त से शुरू हुआ था। विधानसभा अध्यक्ष रवींद्रनाथ महतो ने कहा कि सोरेन का निधन न केवल झारखंड के लिए, बल्कि पूरे देश के लिए एक अपूरणीय क्षति है। सदन की ओर से शोक व्यक्त करते हुए महतो ने कहा, "वह गरीबों के लिए अपनी लड़ाई के लिए जाने जाते थे।"

राज्य सरकार ने ३ दिन का राजकीय शोक घोषित किया।

उनका पार्थिव शरीर दिल्ली से रांची लाया गया और फिर उनके पैतृक गाँव नेमरा (रामगढ़ जिला) में पूरे राजकीय सम्मान के साथ ५ अगस्त को अंत्येष्टि हुई।

विरासत

आज उनके पुत्र हेमंत सोरेन राज्य के मुख्यमंत्री हैं, लेकिन JMM और झारखंड की आत्मा में आज भी 'गुरुजी' की विचारधारा ज़िंदा है। उन्होंने जिस सामाजिक न्याय, भूमि अधिकार और आदिवासी सम्मान की लड़ाई लड़ी, वह आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा बनी रहेगी। शिबू सोरेन का जीवन एक संघर्षशील योद्धा की कहानी है। वे भारतीय लोकतंत्र में उन दुर्लभ नेताओं में से एक रहे जिन्होंने जमीनी आंदोलनों को संसद तक पहुँचाया।उनकी कमी न केवल झारखंड को, बल्कि पूरे देश को महसूस होगी। - एम.एन.

डीआरआई मुंबई ने ₹ ६.५ करोड़ मूल्य के १६० टन सस्ते, घटिया चीनी खिलौने और नकली सौंदर्य प्रसाधन जब्त किए

PIB Mumbai

चीनी मूल के घटिया खिलौनों की तस्करी पर एक बड़ी कार्रवाई में, राजस्व खुफिया निदेशालय (डीआरआई), मुंबई जोनल यूनिट ने १६० मीट्रिक टन अवैध रूप से आयातित चीनी खिलौने, नकली सौंदर्य प्रसाधन और बिना ब्रांड वाले जूते जब्त किए, जिनकी कुल कीमत ६.५ करोड़ रुपये से अधिक है।

खुफिया सूचना के आधार पर कार्रवाई करते हुए डीआरआई ने मुंद्रा बंदरगाह, हजीरा बंदरगाह, कांडला सेज और आईसीडी पियाला (फरीदाबाद) में १० कंटेनरों की पहचान की जिनमें मुख्य रूप से तस्करी के खिलौने थे। जांच करने पर, कंटेनरों को बड़ी मात्रा में खिलौनों के साथ-साथ कुछ सौंदर्य प्रसाधनों और जूतों के साथ छुपाया गया था, धोखाधड़ी से मिनी सजावटी पौधे, कीचेन, बच्चों के पेंसिल बॉक्स और शोपीस जैसे निर्दोष वस्तुओं के रूप में घोषित किया गया था, जो पता लगाने से बचने के स्पष्ट प्रयास में थे।

इन खिलौनों को विदेश व्यापार नीति और खिलौने (गुणवत्ता नियंत्रण) आदेश २०२० का उल्लंघन करते हुए बीआईएस प्रमाणन के बिना आयात किया गया था। बीआईएस गैर-अनुपालन माल निषिद्ध हैं और या तो आयातक की कीमत पर नष्ट हो जाते हैं या मूल देश में वापस आ जाते हैं।

इसके अलावा, नकली सौंदर्य प्रसाधनों का आयात बौद्धिक संपदा अधिकार (आयातित सामान) प्रवर्तन नियम, २००७ के उल्लंघन के साथ-साथ केंद्रीय औषधि मानक नियंत्रण संगठन (सीडीएससीओ) से अपेक्षित लाइसेंस के बिना किया गया था। इसके अलावा, अनिवार्य बीआईएस प्रमाणन के बिना जूते चमड़े और अन्य सामग्री (गुणवत्ता नियंत्रण) आदेश, २०२४ से बने जूते का उल्लंघन करते हैं।

खिलौनों के आयात के संबंध में राष्ट्रीय नीति के अनुरूप, डीआरआई ने सस्ते, असुरक्षित और बीआईएस गैर-अनुपालन वाले चीनी खिलौनों की पहचान करने और जब्त करने के लिए अपने प्रवर्तन प्रयासों को तेज कर दिया है। इस तरह के खिलौने बच्चों की सुरक्षा और स्वास्थ्य के लिए गंभीर जोखिम पैदा करते हैं, जबकि भारत के तेजी से बढ़ते घरेलू खिलौना उद्योग की प्रतिस्पर्धात्मकता को भी कम करते हैं और राष्ट्रीय खजाने को महत्वपूर्ण राजस्व हानि पहुंचाते हैं।

भारतीय सीमा शुल्क यह सुनिश्चित करने के लिए प्रतिबद्ध है कि खिलौनों के लिए सरकार के 'मेक इन इंडिया' के दृष्टिकोण का सक्रिय समर्थन करते हुए केवल सुरक्षित, उच्च गुणवत्ता वाले, बीआईएस-अनुपालन खिलौने आयात किए जाएं।

मुंबईकरों के लिए रेलवे की बड़ी सौगात, गणेश उत्सव के लिए ४६ और स्पेशल ट्रेनों की मंजूरी

मुंबई ही नहीं पूरे महाराष्ट्र में गणेश उत्सव बहुत धूमधाम से मनाया जाता है। इस त्योहार की महत्ता देखते हुए गणेश चतुर्थी के मौके पर यात्रियों की सुविधा के लिए रेलवे ने बड़ा कदम उठाया है। इसके तहत मुंबई और कोंकण के बीच यात्रियों की भारी भीड़ को देखते हुए मध्य रेलवे और कोंकण रेलवे ने संयुक्त रूप से ४६ नई विशेष ट्रेनों की घोषणा की है। ये ट्रेनें लोकमान्य तिलक टर्मिनस (LTT)-सावंतवाड़ी रोड और दिवा-खेड़-दिवा मेमू मार्गों पर चलेंगी। गणपति उत्सव के दौरान भीड़ सामान्य से ज्यादा रहती है। इसे देखते हुए रेलवे ने पहले ही २५० विशेष ट्रेनों की घोषणा की थी। अब इसे बढ़ाकर कुल २९६ गणपति स्पेशल ट्रेन चलाई जाएंगी। गणेश उत्सव की वजह से यात्रा करने वाले लोगों को इन ट्रेन से काफी राहत मिलेगी।

गणेश उत्सव के लिए चलाई जाने वाली इन विशेष ट्रेनों के लिए आरक्षण ३ अगस्त २०२५ से शुरू होगा। जिन गाड़ियों में आरक्षण की आवश्यकता नहीं है, उनके टिकट UTS मोबाइल ऐप या काउंटर से लिए जा सकते हैं। ०११३१ विशेष ट्रेन एलटीटी से गुरुवार और रविवार को सुबह ८.४५ बजे रवाना होगी और उसी दिन रात १०.२० बजे सावंतवाड़ी रोड पहुंचेगी। वापसी यात्रा (०११३२) सावंतवाड़ी से रात ११.२० बजे शुरू होगी और अगले दिन दोपहर १२.३० बजे एलटीटी पहुंचेगी। अवधिः २८ अगस्त, ३१ अगस्त, ४ सितंबर और ७ सितंबर स्टॉपः ठाणे, पनवेल, पेण, रोहा, माणगाव, खेड, चिपळूण, सावर्डा, आरवली रोड, संगमेश्वर रोड, रत्नागिरी, आडवली, विलवडे, राजापूर रोड, वैभववाडी रोड, नांदगाव रोड, कणकवली, सिंधुदुर्ग, कुडाळ और जराप। दिवा-खेड़-दिवा मेमू अनारक्षित (३६ फेरे) यह दिवा से दोपहर १.४० बजे प्रस्थान करेगी और उसी दिन रात ८ बजे खेड़ पहुंचेगी। वापसी यात्रा खेड़ से सुबह ८ बजे शुरू होगी और उसी दिन दोपहर १ बजे दिवा स्टेशन पर समाप्त होगी। अवधिः २२ अगस्त से ९ सितंबर तक प्रतिदिन महाराष्ट्र में गणपति उत्सव की काफी धूम रहती है। इसे मराठी लोगों के बीच का सबसे बड़ा त्योहार माना जाता है और कई सप्ताह पहले से ही आयोजन की तैयारियां होने लगती हैं।

U-Tropicana-Beach-Resort-in-Alibaug

One of the most beautiful resorts near Mumbai for family is the U Tropicana at Alibaug

Faces Canada Magneteyes Kajal Duo Pack

Faces Canada Magneteyes Kajal Duo Pack

भारत बांध का विरोध क्यों कर रहा?

चीन ने ब्रह्मपुत्र नदी पर डैम बनाना किया शुरू इंडियन बॉर्डर के पास यह दुनिया का सबसे बड़ा बांध

अभी दुनिया का सबसे बड़ा हाइड्रोपावर स्टेशन 'थ्री गॉर्जेस' डैम चीन के हुबेई प्रांत में यांग्जी नदी पर बना हुआ है। इसकी सालाना क्षमता 88 अरब किलोवाट प्रति घंटा है।

ब्रह्मपुत्र रूट मैप

चीन ने तिब्बत में ब्रह्मपुत्र नदी (चीन में यारलुंग सांगपो) पर दुनिया का सबसे बड़ा हाइड्रोपावर डैम बनाना शुरू कर दिया है। शनिवार को चीन के प्रधानमंत्री ली क्यांग ने इसकी शुरुआत की। AFP की रिपोर्ट के अनुसार, इस डैम प्रोजेक्ट को बीजिंग ने दिसंबर २०२४ में मंजूरी दी थी। ये बांध चीन के न्यिंगची शहर में बनाया जा रहा है। इसकी कुल लागत करीब १६७.८ अरब डॉलर (लगभग १२ लाख करोड़ रुपए) बताई गई है।

यह डैम अरुणाचल प्रदेश की सीमा से सटे न्यिंगची शहर में बनाया जा रहा है। इसे लेकर भारत और बांग्लादेश दोनों ने गहरी चिंता जताई है। अरुणाचल प्रदेश के मुख्यमंत्री पेमा खांडू ने इस बांध को भारत के लिए वाटर बम बताया था।

करीब २९०० किलोमीटर लंबी ब्रह्मपुत्र नदी हिमालय के उस पार तिब्बत के पठार पर २०५७ किलोमीटर दूर तक पश्चिम की ओर बहती है और उसके बाद अरुणाचल प्रदेश से होकर भारत में प्रवेश करती है। भारत के बाद ये बांग्लादेश में जाती है और फिर बंगाल की खाड़ी में मिल जाती है, लेकिन भारत में प्रवेश से ठीक पहले ये नदी एक यू टर्न लेती है।

भारतीय विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता ने इसी साल ३ जनवरी को एक प्रेस ब्रीफिंग में इस बांध को लेकर आपत्ति जताई थी। भारत ने कहा था कि ब्रह्मपुत्र पर बांध बनाने से निचले राज्यों के हितों को नुकसान नहीं पहुंचना चाहिए।

जल प्रवाह पर नियंत्रणः बांध से चीन को ब्रह्मपुत्र के जल प्रवाह को नियंत्रित करने की ताकत मिलेगी, जिससे अरुणाचल प्रदेश और असम में सूखा या बाढ़ का खतरा बढ़ सकता है। यह भारत की जल सुरक्षा नीति के लिए रणनीतिक खतरा है।

पर्यावरणीय नुकसानः बांध भूकंप-प्रवण क्षेत्र में बन रहा है, जिससे नदी पारिस्थितिकी, जैव विविधता और गाद प्रवाह पर नकारात्मक असर पड़ेगा। इससे भारत और बांग्लादेश में मछली पालन और खेती प्रभावित हो सकती है।

कृषि और आजीविकाः ब्रह्मपुत्र पर निर्भर पूर्वोत्तर भारत के किसानों और मछुआरों की आजीविका खतरे में पड़ सकती है, क्योंकि जल प्रवाह और गाद की कमी से मिट्टी की उर्वरता कम होगी।

राजनीतिक तनावः यह परियोजना भारत-चीन संबंधों में तनाव बढ़ा सकती है, खासकर अरुणाचल प्रदेश की सीमा के पास। जल डेटा साझा करने वाले समझौतों की समाप्ति ने स्थिति को और जटिल किया है।

क्षेत्रीय प्रभावः बांध का असर बांग्लादेश, नेपाल और भूटान जैसे अन्य निचले तटीय देशों पर भी पड़ेगा। दक्षिण एशिया में क्षेत्रीय

सहयोग की कमी इसे और चुनौतीपूर्ण बनाती है। अभी दुनिया का सबसे बड़ा हाइड्रोपावर स्टेशन 'थ्री गॉर्जेस' डैम चीन के हुबेई प्रांत में यांग्जी नदी पर बना हुआ है। इसकी सालाना क्षमता ८८ अरब किलोवाट प्रति घंटा है।

चीन की सरकारी समाचार एजेंसी शिन्हुआ के मुताबिक परियोजना में पांच सीढ़ीदार (कैस्केड) हाइड्रोपावर स्टेशन शामिल होंगे।

ये डैम साल भर में ३०० अरब यूनिट (किलोवाट-घंटे (kWh)) से अधिक बिजली बनाएगा। इस बिजली से ३० करोड़ लोगों की जरूरतों को पूरा किया जा सकता है।

यह तिब्बत में बहने वाली यारलुंग त्सांगपो नदी है जो भारत में आकर ब्रह्मपुत्र कहलाती है। भारत भी अरुणाचल प्रदेश में इसी नदी पर एक बड़ा डैम बना रहा है। ब्रह्मपुत्र और सतलुज पर जल-प्रवाह डेटा को लेकर भारत-चीन के बीच २००६ से एक्सपर्ट लेवल मैकेनिज्म (ELM) चल रहा है।

पिछले साल दिसंबर में NSA अजीत डोभाल और चीनी विदेश मंत्री वांग यी के बीच हुई बातचीत में भी यह मुद्दा उठा था।

२०१५ में चीन ने तिब्बत में १.५ अरब डॉलर की लागत वाला जम हाइड्रोपावर स्टेशन शुरू किया था। तब भी भारत ने चिंता जताई थी कि चीन धीरे-धीरे ब्रह्मपुत्र के जलस्तर और दिशा पर कब्जा कर सकता है।

आंध्र प्रदेश शराब घोटाला
'हर महीने ५० से ६० करोड़ की रिश्वत लेते थे जगन'

आंध्र प्रदेश में ३,५०० करोड़ रुपये के शराब घोटाले में पुलिस ने आरोपपत्र दाखिल किया है, जिसमें पूर्व मुख्यमंत्री वाईएस जगन मोहन रेड्डी को हर महीने ५०-६० करोड़ रुपये रिश्वत लेने वाला बताया गया है, हालांकि उन्हें आरोपी नहीं बनाया गया। आरोपपत्र में राजशेखर रेड्डी को मास्टरमाइंड बताया गया है। इस मामले में वाईएसआरसीपी सांसद मिथुन रेड्डी को गिरफ्तार किया जा चुका है, जिसे पार्टी नेताओं ने राजनीतिक बदले की कार्रवाई बताया है। आंध्र प्रदेश पुलिस ने ३,५०० करोड़ रुपये के कथित शराब घोटाले के मामले में एक स्थानीय अदालत में आरोपपत्र दाखिल किया है। इस आरोपपत्र में राज्य के पूर्व मुख्यमंत्री वाईएस जगन मोहन रेड्डी को हर महीने औसतन ५० से ६० करोड़ रुपये की रिश्वत लेने वाला बताया गया है। शनिवार को ३०५ पन्नों का आरोपपत्र दाखिल किया गया है, लेकिन इसमें जगन को आरोपी के रूप में नामित नहीं किया गया है। अदालत ने अभी इस आरोपपत्र का संज्ञान नहीं लिया है।

आरोपपत्र में कहा गया है कि यह रकम पहले केसिरेड्डी राजशेखर रेड्डी (आरोपी नंबर १) को सौंपी जाती थी। फिर वह पैसा विजय साई रेड्डी (आरोपी नंबर ५), मिथुन रेड्डी (आरोपी नंबर ४) और बालाजी (आरोपी नंबर ३३) को दिया जाता था, जो कि अंत में इसे पूर्व मुख्यमंत्री वाईएस जगन मोहन रेड्डी तक पहुंचाते थे। हर महीने औसतन ५०-६० करोड़ रुपये इकट्ठा किए जाते थे। यह बात एक गवाह के बयान से भी साबित हुई है। इसमें यह भी आरोप लगाया गया है कि राजशेखर रेड्डी इस पूरे घोटाले के 'मास्टरमाइंड और सह-साजिशकर्ता' है। उसने आबकारी नीति में बदलाव करवाया और आपूर्ति के लिए आदेश (ओएफएस) की स्वचालित (ऑटोमैटिक) प्रणाली को हटाकर मैनुअल प्रक्रिया लागू करवाई। साथ ही, उसने आंध्र प्रदेश स्टेट बेवरेजेस कॉर्पोरेशन लिमिटेड (एपीएसबीसीएल) में अपने भरोसेमंद लोगों की नियुक्ति करवाई। राजशेखर रेड्डी ने कथित तौर पर फर्जी डिस्टिलरी (शराब बनाने का संयंत्र) बनवाईं और बालाजी गोविंदप्पा नाम के आरोपी के जरिए जगन को रिश्वत पहुंचाई। साथ ही, उसने पूर्व विधायक चेविरेड्डी भास्कर रेड्डी के साथ मिलकर वाईएसआरसीपी के लिए चुनावों में २५० से ३०० करोड़ रुपये नकद दिए। यह रकम ३० से ज्यादा फर्जी कंपनियों के जरिए धनशोधन कर विदेश में जमीन, सोना और महंगी संपत्तियों में लगाई गई। कुछ निवेश दुबई और अफ्रीका में भी किए गए।

पुलिस का दावा है कि वाईएसआरसीपी सरकार के दौरान आरोपियों ने नई शराब ब्रांड बाजार में उतारी, ताकि आपूर्ति और बिक्री पर उनका पूरा नियंत्रण हो और २०१९ से २०२४ तक बड़ी मात्रा में कमीशन वसूला जा सके। आरोपपत्र में कहा गया है, आरोपियों ने मिलकर आबकारी नीति और उसकी प्रक्रिया को बदला, ताकि उन्हें मोटा कमीशन मिल सके। इस कमीशन का ज्यादातर हिस्सा नकद और सोने के रूप में लिया गया। जांच के दौरान यह भी सामने आया कि आरोपियों ने जानबूझकर उन ब्रांड/डिस्टिलरी को ओएफएस की मंजूरी नहीं दी, जो रिश्वत नहीं दे रहे थे। इस मामले की जांच कर रहे विशेष जांच दल (एसआईटी) ने शनिवार को वाईएसआरसीपी के लोकसभा सांसद पीवी मिथुन रेड्डी को पूछताछ के बाद गिरफ्तार कर लिया। इससे पहले मई महीने में प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने भी इस शराब घोटाले को लेकर धनशोधन का मामला दर्ज किया था।

ग्वार की खेती...

ग्वार की फलियों का उपयोग सब्जी बनाने में किया जाता है। इसके अलावा ग्वार का उपयोग हरा चारा एवं हरी खाद के तौर पर भी किया जाता है। बहु-उपयोगी फसल होने के कारण इसकी खेती करने वाले किसान कम समय में अच्छा मुनाफा कमा सकते हैं। ग्वार शुष्क और अर्ध-शुष्क क्षेत्रों में उगाई जाने वाली दलहनी फसल है जो कि एक अत्यन्त सूखा एवं लवण सहनशील है। अत: इसकी खेती असिंचित व बहुत कम वर्षा वाले क्षेत्रों में सफलतापूर्वक की जा सकती है। ग्वार शब्द की उत्पत्ति संस्कृत के गऊ आहार से हुई है जिसका तात्पर्य गाय का भोजन है। विश्व के कुल ग्वार उत्पादन का ८० प्रतिशत भाग अकेले भारत में पैदा होता है। जोकि ६५ देशों में निर्यात किया जाता है। ग्वार की खेती प्रमुख रूप से भारत के उत्तर-पश्चिमी राज्यों (राजस्थान, हरियाणा, गुजरात, उत्तरप्रदेश एवं पंजाब) में की जाती है। है। हमारे देश के कुल ग्वार उत्पादक क्षेत्र का लगभग ८७ प्रतिशत क्षेत्र राजस्थान के अंतर्गत आता है। राजस्थान में ग्वार की खेती मुख्यत: चुरू, नागौर, बाड़मेर, सीकर, जोधपुर, गंगानगर, सिरोही, दौसा, बीकानेर, हनुमानगढ एवं झुन्झुनू में की जाती है।

ग्वार की बुवाई के लिए उपयुक्त समय

ग्वार की खेती गर्मी एवं वर्षा दोनों मौसम सफलतापूर्वक की जा सकती है। गर्मी के मौसम में फसल प्राप्त करने के लिए इसकी बुवाई फरवरी-मार्च महीने में करनी चाहिए। वर्षा के मौसम में फसल प्राप्त करने के लिए इसकी बुवाई जून-जुलाई महीने में करें।

उपयुक्त मिट्टी एवं जलवायु

ग्वार की खेती लगभग सभी प्रकार की मिट्टी में की जा सकती है। अच्छी पैदावार के लिए उचित जल निकासी वाली बलुई दोमट मिट्टी सर्वोत्तम है। इसकी खेती रेतीली मिट्टी, हल्की क्षारीय एवं लवणीय मिट्टी में भी की जा सकती है। मिट्टी का

पीएच स्तर ७.५ से ८ होना चाहिए। पौधों के अच्छे विकास के लिए सूखे एवं गर्म मौसम की आवश्यकता होती है। कम वर्षा होने वाले क्षेत्रों में भी इसकी खेती की जा सकती है।

बीज की मात्रा एवं बीज

बीजों के अच्छे जमाव व फसल को रोगमुक्त रखने के लिए बीज को सबसे पहले बाविस्टिन या कैप्टान नामक फफूंदीनाशक दवा से २ ग्राम/किलो बीज की दर से उपचारित करें। पौधों की जड़ों में गांठों का अधिक निर्माण हो व वायुमंडलीय नाइट्रोजन का भूमि में अधिक यौगिकीकरण हो इसके लिए बीज को राईजोबियम व फॉस्फोरस सोलूबलाइजिंग बैक्टीरिया (पीएसबी) कल्चर से उपचारित करें। छिड़काव विधि से खेती करने पर प्रति एकड़ जमीन में ८ से १० किलोग्राम बीज की आवश्यकता होती है। क्यारियों में खेती करने पर प्रति एकड़ भूमि में

५.६ से ६.४ किलोग्राम बीज की आवश्यकता होती है। बुवाई से पहले प्रति किलोग्राम बीज को २ ग्राम बाविस्टिन या कैप्टान से उपचारित करें। इसके बाद प्रति किलोग्राम बीज को २ से ३ ग्राम राइजोबियम कल्चर से भी उपचारित करें।

उन्नत किस्में

हरे चारे हेतु – एचएएफजी-११९, एचएफजी-१५६, ग्वार क्रांति, मक ग्वार, बुंदेल ग्वार-१ (आईजीएफआरआई-२१२-१), बुंदेल ग्वार-२, आरआई-२३९५-२, बुंदेल ग्वार-३, गोरा-८०

हरी फलियों हेतु – आईसी-१३८८, पी-२८-१-१, गोमा मंजरी, एम-८३, पूसा सदाबहार, पूसा मौसमी, पूसा नवबहार, शरद बहार

दाने के लिए – मरू ग्वार, आरजीसी-९८६, दुर्गाजय, अगेती ग्वार-१११, दुर्गापुरा सफेद, एफएस-२७७, आरजीसी-१९७, आरजीसी-४१७

खेत की तैयारी एवं बुवाई की विधि

खेत तैयार करते समय सबसे पहले एक बार गहरी जुताई करें और कुछ दिनों तक खुला रहने दें। इसके बाद २ से ३ बार हल्की जुताई करें। जुताई के समय प्रति एकड़ भूमि में ८० से १०० क्विंटल तक गोबर की खाद मिलाएं। जुताई के बाद खेत में पाटा लगाकर मिट्टी को समतल एवं भुरभुरी बना लें।

बीज की बुवाई के लिए खेत में क्यारियां तैयार करें।

क्यारियों में बुवाई करने पर सिंचाई एवं खरपतवार नियंत्रण में आसानी होती है। सभी क्यारियों के बीच ३० सेंटीमीटर की दूरी रखें। पौधों से पौधों की दूरी १५ सेंटीमीटर होनी चाहिए।

सिंचाई एवं खरपतवार नियंत्रण

वर्षा के मौसम में वर्षा होने पर सिंचाई की आवश्यकता नहीं होती है। गर्मी के मौसम में ७ से १० दिनों के अंतराल पर सिंचाई करें। बुवाई के करीब १ सप्ताह बाद ही खरपतवार की समस्या शुरू हो जाती है।

खरपतवारों पर नियंत्रण के लिए निराई-गुड़ाई

फसल की तुड़ाई, ग्वार की खेती यदि फलियों के लिए की जा रही है तो फलियों की तुड़ाई नर्म एवं हरी अवस्था में करें। बुवाई के ५५ से ८० दिनों के बाद फलियों की तुड़ाई की जा सकती है। हर ४

से ५ दिनों के अंतराल पर फलियों की तुड़ाई करें। यदि बीज या दाने प्राप्त करने के लिए ग्वार की खेती की गई है तो फलियों का रंग पाला होने के बाद ही तुड़ाई करें। फलियों को पक कर तैयार होने में करीब १२० दिनों का समय लगता है।

महत्व

ग्वार एक बहुउद्देशीय फसल है जिसका प्राचीनकाल से ही मनुष्य एवं पशु आहार के लिए महत्व रहा है।

इसमें प्रोटीन, घुलनशील फाइबर, विटामिन्स (के, सी, ए), कार्बोहाइड्रेट के साथ-साथ प्रचुर मात्रा में खनिज, फॉस्फोरस, कैल्शियम, आयरन एवं पौटेशियम आदि भी पाया जाता है।

इसकी ताजा व नरम हरी फलियों को सब्जी के रूप में खाया जाता है जो कि पौष्टिक होती है।

ग्वार फली विभिन्न रोगों जैसे – खून की कमी, मधुमेह, रक्तचाप, आंत की समस्याएं में लाभकारी है एवं हड्डियों को मजबूत करने, दिल को स्वस्थ रखने, रक्त परिसंचरण को बेहतर करने के साथ-साथ मस्तिष्क के लिए भी गुणकारी है।

इसका उपयोग पशुओं के चारे के रूप में होता है। तथा दुधारू पशुओं में दूध उत्पादन में बढ़ोतरी करता है।

इसका प्रयोग खेतों में हरी खाद के रूप में भी किया जाता है जिसके लिए फसल में फूल आने के बाद एवं फली पकने से पहले मिट्टी पलटने वाले हल से भूमि में दबा दिया जाता है।

यह वायुमण्डलीय नाइट्रोजन का भूमि में स्थिरीकरण करती है जिससे जमीन की उर्वरा शक्ति बढ़ती है।

इसके दानों में ग्लेक्टोमेनन नामक गोंद होता है जो संपूर्ण विश्व में 'ग्वार गमऽ के नाम से प्रचलित है। जिसका इस्तेमाल खाद्य पदार्थों जैसे- आइसक्रीम, पनीर, सूप में किया जाता है।

ग्वार गम का प्रयोग कई प्रकार के उद्योग-धंधों व औषधि निर्माण में किया जाता है। पेट साफ करने, रोचक औषधि तैयार करने, कैप्सूल व गोलियां बनाने में भी इसका प्रयोग किया जाता है। इसके अलावा खनिज, कागज व कपड़ा उद्योग में भी ग्वार गम महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

कागज निर्माण के समय ग्वार गम को लुगदी में मिलाया जाता है जिससे कागज ठीक से फैल सके और अच्छी गुणवत्ता का कागज तैयार किया जा सके।

कपड़ा उद्योग में यह मांडी लगाने के उपयोग में लाया जाता है।

श्रृंगार वस्तुओं जैसे लिपिस्टिक, क्रीम, शेम्पू और हैण्ड लोशन में भी ग्वार गम का प्रयोग किया जाता है

लेखकों से निवेदन

मौलिक तथा अप्रकाशित-अप्रसारित रचनाएँ ही भेजें। रचना फुलस्केप कागज पर साफ लिखी हुई अथवा शुद्ध टंकित की हुई मूल प्रति भेजें। ज्यादा लंबी रचना न भेजें। सामाजिक, राजनीतिक, शैक्षणिक, साहित्यक, स्वास्थ्य, बैंक व व्यवसायिक से संबंधित रचनाएँ आप भेज सकते हैं। प्रत्येक रचना पर शीर्षक, लेखक का नाम, पता एवं दूरभाष संख्या अवश्य लिखें, साथ ही लेखक परिचय एवं फोटो भी भेजें। आप अपनी रचना ई-मेल द्वारा भेज सकते हैं। रचना यदि डाक द्वारा भेज रहे हैं तो डाक टिकट लगा लिफाफा साथ होने पर ही अस्वीकृत रचनाएँ वापस भेजी जा सकती हैं। अतः रचना की एक प्रति अपने पास अवश्य रखें। स्वीकृत व प्रकाशित रचना का ही उचित भुगतान किया जायेगा। किसी विशेष अवसर पर आधारित आलेख को कृपया उस अवसर से कम-से-कम एक या दो माह पूर्व भेजें, ताकि समय रहते उसे प्रकाशन-योजना में शामिल किया जा सके। रचना भेजने के बाद कृपया दूरभाष द्वारा जानकारी न लें। रचनाओं का प्रकाशन योजना एवं व्यवस्था के अनुसार यथा समय होगा।

Add: A-102, A-1 Wing, Tirupati Ashish CHS. , Near Shahad Station Kalyan (W) , Dist: Thane, PIN: 421103, Maharashtra.
Phone: 9082391833 , 9820820147
E-mail: swarnim_mumbai@yahoo.in,
Website:WWW.swarnimumbai.com

राष्ट्रीय हिंदी मासिक पत्रिका
स्वर्णिम मुंबई
RNI NO. : MAHHIN-2014/55532

ADVERTISEMENT TARRIF

No.	Page	Colour	Rate
1.	Last Cover full page	Colour	30,000/-
2.	Back inside full page	Colour	25,000/-
3.	Inside full page	Colour	20,000/-
4.	Inside Half page	Colour	15,000/-
5.	Inside Quater page	Colour	07,000/-
6.	Complimenty Adv.	Colour	03,000/-
7.	Bottam Patti	Colour	2500/-

6 Months Adv. 20% Discount

1 Year Adv. 50% Discount

Mechanical Data: **Size of page:** **290mm x 230mm**

PLEASE SEND YOUR RELEASE ORDER ALONG WITH ART WORK IN PDF & CDR FORMAT

**Add: A-102, A-1 Wing ,Tirupati Ashish CHS. , Near Shahad Station Kalyan (W) , Dist: Thane,
PIN: 421103, Maharashtra. Phone: 9082391833, 9820820147
E-mail: swarnim_mumbai@yahoo.in,
Website:WWW.swarnimumbai.com**

RNI NO. : MAHHIN-2014/55532